कवियोगी वेधाम

कवियोगी
वेदम की
आत्मकथा

एक छोटे से गांव से हिमालय की लहरी बाबाजी गुफा तक मेरी आध्यात्मिक यात्रा

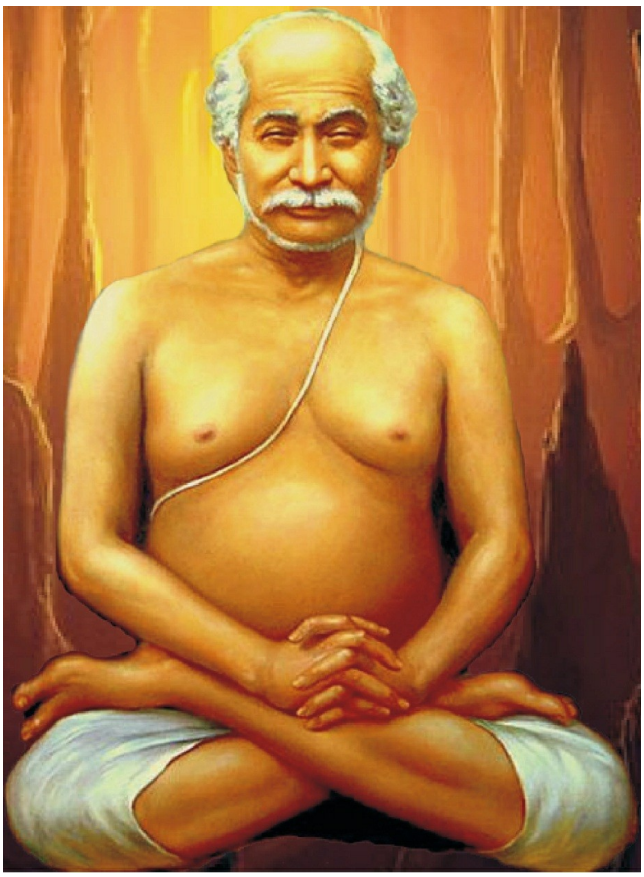

एक छोटे से गाँव से हिमालयी लहरी बाबाजी गुफा तक की मेरी आध्यात्मिक यात्रा

समर्पण

प्रारंभ में, मैं यह रचना अपनी माता श्रीमती सोर्नम्मल को समर्पित करता हूँ, जिन्होंने मुझे पाला-पोसा और मुझे दुर्बल शरीर से एक सशक्त व्यक्ति बनाया। वे हमेशा मेरे लिए शक्ति और समर्थन का प्रतीक रहीं। इसके बाद, मैं यह रचना अपने दादाजी श्री के.वी.एस. गार्गर को समर्पित करता हूँ, जिन्होंने मुझमें आध्यात्मिक मार्ग की खोज की प्रेरणा जगाई। बचपन में उन्होंने मुझे विभिन्न दिव्य श्लोकों और मंत्रों का जाप करना सिखाया। उन्होंने मुझे महान कवि श्री सुब्रमण्यम भारती की दिव्य काव्य रचनाओं और उपमाओं से प्रेरित किया। मेरे दादाजी, जो मेरे लिए शक्ति का स्तंभ थे, मेरे विकास के दौरान हमेशा मेरे साथ रहे।

अंत में, मैं इस रचना को अपने गुरु, संत श्री लाहिड़ी महाशय बाबा जी को समर्पित करता हूँ। मैं धन्य हूँ कि उनकी कृपा से मुझे उनके शिष्य के रूप में चुना गया, जब वे मेरे स्वप्न में प्रकट हुए। तब मेरी आयु मात्र 12 वर्ष थी। उन्होंने योग और ज्ञानोदय के कठिन और चुनौतीपूर्ण मार्ग पर मेरा मार्गदर्शन किया और मेरा साथ दिया। मेरी आत्मकथा "एक छोटे से गाँव से हिमालयी बाबा जी की गुफा तक की मेरी आध्यात्मिक यात्रा" मेरे जीवन के इन स्तंभों को समर्पित है। मैं अपनी पुत्री राजिबाला का हार्दिक धन्यवाद करता हूँ, जिन्होंने मेरी तमिल पुस्तक का अंग्रेजी अनुवाद करने में अपना पूरा सहयोग और अथक प्रयास किया।

(KAVIYOGI VEDHAM)- Dated24-04-2019

पेज 2

(राजी बाला - अनुवादक की टिप्पणी!)

श्री कवियोगी वेधम, जिन्हें उनके सभी मित्र, साथी कवि और शिष्य प्यार से "योगियार" के नाम से जानते थे, मेरे पिता हैं।

मेरी बड़ी बहन और छोटे भाई के साथ, बचपन से ही हमें आध्यात्मिक और काव्य ज्ञान से पोषित किया गया। हमारा बचपन तमिल भाषा के साहित्यिक कार्यों से घिरा रहा। महान कवि भरथियार की सशक्त कविताएँ हमारे बचपन के हर कोने में समाई रहीं। योग आसन और मुद्राएँ हमारे दैनिक जीवन का अभिन्न अंग बन गईं। आध्यात्मिकता और संतों पर लिखी महान पुस्तकों से घिरे रहने के कारण, आध्यात्मिक और भौतिक जगत से इतर पुस्तकों का अध्ययन करना हमारा स्वाभाविक साथी बन गया था। मुझे अच्छी तरह याद है जब मैं पंद्रह वर्ष का था, तब मुझे स्वामी परमहंस योगानंद द्वारा लिखित महान पुस्तक "एक योगी की आत्मकथा" मिली। इसके अलावा कई अन्य संत ग्रंथ भी थे, जिनमें स्वामी राम और श्री एम और अन्य कई लेखकों की रचनाएँ उल्लेखनीय हैं। कुछ शामों को, हमारे पिता अपने आध्यात्मिक अनुभवों को हमारे साथ साझा करने के लिए उत्सुक रहते थे। वे कहानियां और किस्से हमें इतना मोहित कर देते थे कि आज, 46 वर्ष की आयु में,

मुझे आश्चर्य होता है कि शायद, योगी की आत्मकथा और अन्य पुस्तकों में वर्णित वे सभी उदात्त अनुभव वास्तव में हमारे पिता की योग साधनाओं के आध्यात्मिक परिणाम थे। मैं पूरे विश्वास के साथ कह सकता हूँ कि श्री कवियोगियार न केवल हमारे जैविक पिता थे, बल्कि हमारे आध्यात्मिक गुरु भी थे। मैं अपने सौभाग्य के लिए हमेशा आभारी रहूँगा।

हमारे बचपन के दिनों में, हम कई बार अपने पिता के साथ उनकी सभाओं में जाया करते थे। ये सभाएँ ये सभाएँ काव्यमय और आध्यात्मिक दोनों ही विषयों पर आधारित थीं। हमने वहाँ कई कवियों, उन्नत आध्यात्मिक साधकों को देखा और उनसे मुलाकात की, जिनमें से कई हमारे पिता के प्रति पूरी तरह समर्पित थे। अब पीछे मुड़कर देखने पर मुझे पूरा विश्वास है कि मेरे पिता ने ही मुझमें वह बीज बोया था, जो आज मेरे भीतर एक बढ़ता हुआ आध्यात्मिक बरगद का वृक्ष बन गया है।

मेरे पिता की जीवनभर की आध्यात्मिक खोज, यानी यह दिव्य पुस्तक, 2017 में तमिल में प्रकाशित हुई। इसके आवरण पर उनके गुरु श्री लाहिड़ी महाशय बाबा जी का चित्र अत्यंत आकर्षक था। मैंने दोनों आवरणों के बीच लिखे हर शब्द को ध्यान से पढ़ा और मैं मंत्रमुग्ध हो गया। मेरी जिज्ञासा असीम थी और कितना भी पढ़ लूँ, मेरी आध्यात्मिक जिज्ञासा शांत नहीं हुई। तभी मेरे मन में यह विचार आया कि... "काश! गैर-तमिल भाषी लोगों को भी इस महान आध्यात्मिक यात्रा से लाभ मिलना चाहिए।"

इस पुस्तक का शब्दशः अनुवाद करने की इच्छा मेरे मन में जागृत हुई, हालाँकि मैंने अपने पिता को इस बारे में नहीं बताया। लगभग उसी समय, उत्तर भारत में श्री लाहिड़ी महाशय बाबा की शिक्षाओं का पालन करने वाला एक दंपति हमारे बेंगलुरु स्थित घर आया। बातचीत के दौरान, उन्हें मेरे पिता की आत्मकथा भेंट की गई। लाहिड़ी बाबा जी की छवि से सुशोभित आवरण पृष्ठ को देखकर उनकी आँखों में आँसू आ गए। उन्होंने बड़े उत्साह से पुस्तक खोली और उसमें लिखे शब्दों को पढ़ने के लिए उत्सुक थे, लेकिन उत्तर भारतीय होने के कारण तमिल भाषा उनके लिए अपरिचित थी, इसलिए वे निराश हो गए। उन्होंने तुरंत मुझसे चिंता व्यक्त करते हुए कहा, “महोदया! यदि इस पुस्तक का अंग्रेजी में अनुवाद हो जाए, तो हम जैसे लोग इसे पूरा पढ़कर आपके पिता द्वारा प्राप्त आनंद का अनुभव कर सकेंगे, क्योंकि हमें लगता था कि श्री लाहिड़ी बाबा जी केवल उत्तरी भारत में ही प्रसिद्ध हैं।”

उन्होंने आगे कहा, “प्रिय राजि महोदया! यह वाकई आश्चर्यजनक है कि आपके पिता ने श्री लाहिड़ी महाशय को क्यों चुना।”

बाबा जी को अपना आध्यात्मिक मार्गदर्शक मानते हुए... हम इस अद्भुत संत के साथ उनके अपने अनुभवों को पढ़ना चाहेंगे।” यह जानकर मैं रोमांचित हो गया और ऐसा लगा मानो अंग्रेजी में इस कृति का अनुवाद करने का मेरा प्रयास प्रत्यक्ष रूप से सफल हो गया हो। उस समय मेरे माता-पिता मेरे छोटे भाई स्वामीनाथन और उनके परिवार के साथ कनाडा में छुट्टियां मना रहे थे। मैंने यह विचार अपने पिता को बताया और उन्होंने तुरंत पुष्टि की कि उनके मन में भी यही बात चल रही थी। यह मेरे लिए पूर्ण आश्चर्य की बात थी। मुझे ऐसा लगा

मानो श्री लाहिड़ी महाशय बाबा जी - जिन्हें हम बचपन से ही प्यार से "परदादाजी" कहते थे - ने मुझे इस महत्वपूर्ण कार्य को करने के लिए चुना हो। राजी बाला

Bengaluru

दिनांक-20-04-2019

पुस्तक समीक्षा

द्वारा- 'कविवेझम' श्री. इलैंडहाई

एस. रामास्वामी, शिकागो, संयुक्त राज्य अमेरिका

जी हां दोस्तों! इस आकर्षक आत्मकथा में मेरे घनिष्ठ मित्र और सर्वश्रेष्ठ कवि वेधम द्वारा लिखित यह पुस्तक अनेक आश्चर्यजनक घटनाओं से आपको प्रारंभ से अंत तक बांधे रखती है। यदि हम इसका गहराई से विश्लेषण करें, तो प्रत्येक व्यक्ति स्वयं में एक योगी है। ईश्वर हमें इस अनुभूति के लिए तैयार करते हैं और हमें इस पृथ्वी पर भेजते हैं। एक शिशु अपनी माँ के गर्भ में हाथ-पैर जोड़कर योगिक मुद्रा में बढ़ता है। इस संसार में आने के बाद हम इसे भूल जाते हैं। परन्तु कुछ लोग स्वयं को और विकसित करके योगी बन जाते हैं।

न तो मुझे अपने भूतपूर्व जीवन के बारे में स्पष्टता थी और न ही मैंने पहले कर्म सिद्धांत के बारे में पढ़ा था। हालाँकि मैंने तमिल व्याकरण और कविता का गहन अध्ययन नहीं किया था, फिर भी जब कोई मुझसे इस विषय पर प्रश्न पूछता था, तो मैं उनका सही उत्तर दे पाता था। यह कैसे संभव था? मैं सोचता था कि क्या यह ज्ञान पिछले जन्मों से प्राप्त होता है? इस पुस्तक को पढ़ने के बाद, मुझे लेखक के पिछले जन्म के योगिक संबंध समझ में आए। गुरु का आशीर्वाद होने पर भी व्यक्ति अपने कर्मों के चंगुल से नहीं बच सकता। सही समय पर, गुरु का आशीर्वाद व्यक्ति को नकारात्मक कर्मों के बुरे प्रभावों से पूरी तरह नष्ट होने से बचा सकता है।

इस पुस्तक का पहला अध्याय लेखक के जन्म से शुरू होता है। उन्होंने उस बुधवार का वर्णन इस प्रकार किया है कि वह हमारे दिलों में बस जाता है। ऐसा लगता है मानो उन्होंने स्वयं गाँव के घर में अपना जन्म देखा हो। लेखन शैली से गाँव के घर का सुबह-सुबह का दृश्य स्पष्ट होता है; वह भी ऐसे घर का जहाँ नवजात शिशु के आने की प्रतीक्षा हो रही हो और जो चहल-पहल से भरा हो।

कहानी की शुरुआती पंक्तियाँ एक वर्णन से शुरू होती हैं। प्रकृति बेहद खूबसूरत है। फिर कहानी घर की ओर बढ़ती है, जहाँ गांधीमथी अम्माल नाम की रसोइया स्थिति को संभालती है। स्थिति को संभालने के लिए उनके द्वारा दिए गए आदेशों का बेहतरीन वर्णन किया गया है। गरगर के चरित्र को जिस तरह से चित्रित किया गया है, उससे वह एक कोमल हृदय व्यक्ति के रूप में सामने आते हैं। हालाँकि वह मेरे सबसे पसंदीदा पात्र हैं, फिर भी उनका अनोखा नाम मुझे उत्सुक करता है! उन्हें यह नाम कैसे मिला? कवियोगी वेधम बाद के अध्यायों में इस पहलू का वर्णन करता है।

लेखक के दादाजी श्री गार्गर ने बहुत कम उम्र में ही घर छोड़ दिया था, लेकिन उन्होंने अपनी कड़ी मेहनत, साहस और अंग्रेजी भाषा में अपनी उत्कृष्ट दक्षता के बल पर उच्च पद प्राप्त किया। कहानी में उनकी महत्वपूर्ण भूमिका है। वे अपने उपदेशों से पाठकों का ध्यान आकर्षित कर लेते हैं। दूसरों की प्रशंसा करने और सभी में अच्छाई देखने का उनका उदार स्वभाव हमारे वेदम में भी झलकता है।

हालांकि यह पुस्तक लेखक की जीवनी पर आधारित है, उपन्यास कहानी एक रोमांचक उपन्यास की तरह आगे बढ़ती है। कुछ अध्यायों का अंतिम पैराग्राफ हमें अगले अध्याय की ओर ले जाने के लिए प्रेरित करता है। पूरी कहानी अप्रत्याशित मोड़ों के जटिल ताने-बाने के साथ आगे बढ़ती है, यही तकनीक लेखक ने पूरी रचना में अपनाई है।

चूंकि लेखक एक कवि हैं, इसलिए वर्णन में कुछ बिंदुओं पर ध्यान दिया गया है। यह उपन्यास खूबसूरत किस्सों, तुलनाओं और कविताओं के साथ विभिन्न स्थानों का वर्णन करता है। उपन्यास में प्रयुक्त कई संवाद और शब्द वास्तव में दक्षिणी तमिलनाडु के तिरुनेलवेली जिले के आम लोगों द्वारा उपयोग किए जाते हैं।

लेखक द्वारा अपने गुरु का उनके युवावस्था में किया गया वर्णन यह सपना बेहद सजीव है। लेखक के जीवन में आई समस्याओं और उनके गुरु द्वारा सुझाए गए उपायों का वर्णन करना असंभव लगता है, लेकिन उनका हर अनुभव सत्य के सिवा कुछ नहीं है।
लेखक के पिता की तुलना कटहल से की जा सकती है। परिस्थितियाँ
जहां लेखक और उसके भाई कठोर सैन्य शासन के अधीन कष्ट सहते हैं, वह हमें दुखी करता है और साथ ही आगे क्या होगा यह जानने की उत्सुकता भी बढ़ाता है। लेकिन, जैसे किसी सख्त, खुरदुरे छिलके वाले कटहल के अंदर छिपी मिठास होती है, वैसे ही एक सामान्य पिता का स्नेह कुछ खास मौकों पर अपने बेटे के प्रति प्रकट होता है।

गुरु महान लहरी महाशय का आशीर्वाद अवर्णनीय है! वेधम उन्होंने न केवल अपने परिवार बल्कि अपने गुरु के मार्गदर्शन से अपने मित्रों को भी कई समस्याओं का समाधान और सांत्वना प्रदान की है। मैं व्यक्तिगत रूप से यह जानता हूं, क्योंकि मैं उनका बहुत करीबी दोस्त हूं।

संपूर्णम, राखीसमुथु थेवर और कई जैसे पात्र कई पात्रों का सुंदर चित्रण किया गया है। पूरी कहानी को सशक्त संवादों से भरपूर लिखा गया है। एक बार हाथ में किताब उठा ली जाए तो उसे एक ही बार में खत्म किए बिना वापस रखना मुश्किल है। यही इस किताब की ताकत है।

यह पुस्तक सभी आयु वर्ग के लोगों के लिए उपयुक्त है; विशेष रूप से उन लोगों के लिए जो आध्यात्मिक मार्ग पर आगे बढ़ने के लिए आस्था आवश्यक है। मैं अपने प्रिय मित्र वेधम को आध्यात्मिक मार्ग पर और अधिक चमकने और लोगों को योग और ध्यान की कला में निपुणता प्राप्त करने में मदद करने के लिए हार्दिक शुभकामनाएं देता हूं, ताकि उनका जीवन समृद्ध हो सके। मैं उनसे विनम्र निवेदन करता हूं कि वे अपने ऐसे और अनुभवों को लिखते रहें और इस पुस्तक का अगला भाग शीघ्र ही प्रकाशित करें।

Kavimamani, 'Kavivezham' Ilandhai S.Ramaswamy
शिकागो, संयुक्त राज्य अमेरिका
23/03/2019.

अध्याय 1

मई में जन्मा एक नन्हा योगी (गर्मियों का मौसम!)

बुधवार का दिन था। तिरुनेलवेली जिले के अथाझनल्लूर गांव में बसंत की धूप सभी घरों के बरामदों को नहला रही थी। विशेष रूप से लोहे की रेलिंग से खूबसूरती से बना वह घर, जो घरों की कतार में गन्ने के आखिरी टुकड़े जैसा लग रहा था, उस पर सबसे ज्यादा धूप पड़ रही थी। इसका कारण यह था कि उसके सामने कोई घर नहीं था। सामने एक खाली ज़मीन थी, जिस पर जगह-जगह हरी घास उगी थी। लोगों के बैठने के लिए दो बड़े पत्थर रखे थे और एक छोटी सी जर्जर चारदीवारी थी। ये सब सूरज की गर्मी को घर पर प्रतिबिंबित कर रहे थे। कुछ गायें बेफिक्र होकर चर रही थीं। अथाझनल्लूर नामक उस छोटे से गाँव (जिसे कुछ शरारती लोग कुक्किराम कहते हैं!) में स्थित वह सुंदर और भव्य मंदिर भगवान पेरुमल (महाविष्णु) को समर्पित था। देवता को प्रसाद के रूप में इमली और दही चढ़ाया गया। प्रसाद चढ़ाने के बाद अंतिम आरती संपन्न हुई। मानो यह दर्शाने के लिए कि मंदिर के भीतर ये सभी क्रियाएँ सुचारू रूप से हो रही हैं, मंदिर की घंटी लयबद्ध स्वर में बज रही थी।

लेकिन उस खूबसूरत घर में कुछ तो चल रहा था। यह क्या था? असहनीय दर्द की एक आवाज़ सुनाई दी और घर के अंदर से एक महिला के रोने की आवाज आ रही थी। घर के निवासियों के लिए यह बहुत परेशान करने वाला था। बूढ़ा आदमी और उसकी पत्नी (जो अंधी थी) बहुत चिंतित थे।

घर की रसोइया गांधीमथी, जो उस बूढ़ी औरत की देखभाल भी कर रही थी, वही बहादुरी से इस स्थिति को संभाल रही थी।

वह बूढ़े व्यक्ति और उसके दूसरे बेटे लक्ष्मणन को आदेश दे रही थी।

“ये क्या हो रहा है? तुम दोनों मूर्ति की तरह क्यों खड़े हो? क्या तुम्हें नहीं दिख रहा कि सोर्नम दर्द से चीख-चीख कर तड़प रही है? लक्ष्मण! जल्दी जाओ और उस दाई पारू को बुलाओ। उसे सारी बात बताओ और उसे अपने साथ ले आओ। अगर वो घर पर नहीं है, तो कोट्टई गली की छोटी सी दुकान में होगी। उसे बताना कि मामला बहुत ज़रूरी है। चाचा जी, कृपया उसे पाँच रुपये दे दीजिए। तभी वो मान जाएगी। लालची तो है, पर अच्छी दाई है।”

यह सुनकर उस घर के बुजुर्ग या वरिष्ठ व्यक्ति ने अपने बेटे को पैसे दिए और उसे इसके बारे में सावधान रहने को कहा।

“मेरे बेटे! इधर-उधर मत भटको। जल्दी दौड़ो और उस महिला पारू को ले आओ...”

बेटे के जाने के बाद, वह अपनी पत्नी की ओर मुड़ा और भारी मन से बोला, “देखो, लक्ष्मी! क्या यही तुम्हारे बेटे रामजी के खेतों में जाने का समय है? तुमने उसे घर पर रहने के लिए क्यों नहीं कहा और यह क्यों नहीं समझाया कि बच्चा इस सप्ताह कभी भी पैदा हो सकता है? मैंने उसे कभी अपनी गर्भवती पत्नी की परवाह करते नहीं देखा। उसका मन हमेशा बाहर के काम में ही लगा रहता है। उसे बस लोगों को काम पर धकेलने

और ताने मारने में ही खुशी मिलती है। उसने कभी मजदूरों पर दया नहीं दिखाई। मुझे तो वह ऋषि दुर्वासर की तरह लगता है, जो हमेशा अपनी नाक पर क्रोध लिए रहता है।"

जैसे ही उसने यह कहा, उसकी पत्नी लक्ष्मी नाराज़ हो गई। "अब ऐसा क्या हो गया है कि तुम मेरे बड़े बेटे को दोष दे रहे हो? अगर वह न होता तो खेत मजदूर अपना काम ठीक से नहीं करते। हर महीने हमें ताज़ी सब्जियां, नारियल और फल मिलते हैं। वे हमसे मिलने भी आते रहते हैं क्योंकि आजकल तुम खुद वहां नहीं जा सकते। अगर जाते हो तो मधुमेह के कारण चक्कर आने लगते हैं।" वह गुस्से से जवाब देती रही।

"ठीक है! ठीक है! क्या तुम दोनों थोड़ी देर के लिए लड़ना बंद करके सोरनम का ध्यान रखोगे? रसोई में मेरा बहुत सारा काम बाकी है।" गांधीमथी ने बड़े ही घमंडी अंदाज में कहा।

अपनी शारीरिक स्थिति के बावजूद, बूढ़ी लक्ष्मी ने अपनी बहू को प्यार से सहलाया। उन्होंने सोर्नम का सिर धीरे से अपनी गोद में रखा और कहा, "सोर्नम, यह तुम्हारा पहला प्रसव है। इसलिए थोड़ा दर्द होगा। कृपया इसे सहन करो। हम सब तुम्हारे साथ हैं। पारू किसी भी क्षण आ जाएगा। उसके बाद तुम्हारा सारा दर्द सूरज की ओस की बूंदों की तरह गायब हो जाएगा।"

अपनी बहू के प्रति मां के स्नेहपूर्ण व्यवहार को देखकर, उनके बेटे रामजी ने एक दिन उन्हें चिढ़ाया। "अम्मा! आपको सास का व्यवहार करना नहीं आता। क्योंकि सोर्नम आज्ञाकारी है, आप उसे राजकुमारी की तरह मानती हैं। मुझे समझ नहीं आता कि वह आपके लिए इतनी खास क्यों है! मैंने बर्मा में कैम्ब्रिज विश्वविद्यालय से उच्च शिक्षा प्राप्त की, फिर भी आपने मुझे उससे शादी करने के लिए मजबूर किया, सिर्फ इसलिए कि वह हमारे रिश्तेदार है।" रामजी को यह बात बर्दाश्त नहीं हुई कि उनकी पत्नी ने स्कूल में केवल पांचवीं कक्षा पास की थी।

लक्ष्मी अपने बेटे के गुस्से भरे शब्दों को सुनकर क्रोधित हो उठी। "अरे मूर्ख, दस साल पहले तुम्हारी वजह से ही मेरी आँखों की रोशनी चली गई थी। मैंने सोचा था कि शादी के बाद तुम्हारा रवैया बदल जाएगा, लेकिन तुम अभी भी दुर्वासर जैसे ही हो।"

लक्ष्मी अम्माल ने इतने नाजुक समय में बुरी यादों के बारे में सोचने पर खुद को फटकारा। अनायास ही, उन्होंने राजा रवि वर्मा द्वारा चित्रित भगवान महाविष्णु की सुंदर भित्तिचित्र की ओर हाथ जोड़कर प्रार्थना की। "हे भगवान! रक्षक! इस समय मेरी मदद करने वाला कोई नहीं है। कृपया मेरी बहू को बचा लीजिए।" तुरंत ही, उन्हें प्रकाश के रूप में भगवान की उपस्थिति का अहसास हुआ, जिन्होंने उन्हें चिंता न करने और कुछ ही मिनटों में सामान्य प्रसव होने का संदेश दिया।

जब तक दाई पहुँची, सुबह के ग्यारह बज चुके थे। लक्ष्मणन हमेशा की तरह चंचल था और पारू को न तो उसके घर पर और न ही उसकी छोटी सी दुकान में ढूंढ पाया। उसे कई जगहों पर पूछताछ करनी पड़ी और अंत में वह मुनियन के खेत में मिली। पारू ने उसे कर्ज दिया था और उसे वापस लेने के लिए वहाँ गई थी। इस बीच, घर का माहौल अच्छा नहीं था। लक्ष्मणन के उसे देर से लाने पर सब उससे नाराज़ थे। यकीनन, वो आज के मोबाइल फोन का ज़माना नहीं था। है ना?

अंत में, पारू आ गई। उसने दर्द से कराह रही सोर्नम को ठीक से बिठाया और उस पर थोड़ा अरंडी का तेल लगाया।

पेट। “सोरनम, प्यारी बच्ची, तुम्हारा दर्द बस कुछ समय के लिए है और बच्चे के जन्म के बाद गायब हो जाएगा। बच्चे को देखकर तुम दिल खोलकर हँसोगी। मेरी बात याद रखना।”

पारू ने धीरे से सोर्नम के पेट की मालिश करते हुए कहा। थोड़ी देर में सोर्नम दर्द से चीखने लगी। दाई पारू लक्ष्मी अम्माल की ओर मुड़ी और बोली, “देखिए अम्मा, एक घंटे के अंदर बच्चे का जन्म सामान्य रूप से हो जाएगा। बच्चा छोटा लग रहा है।” फिर उसने महिला रसोइया गांधीमथी को गर्म पानी तैयार करने और वह विशेष जड़ी-बूटी वाला तेल लाने का आदेश दिया जो उसने पहले तैयार करके उसे दिया था।

जब पारू ये निर्देश दे रहा था, तब बारह बज चुके थे और सूरज की गर्मी बढ़ रही थी।

हर पल। घरों का बरामदा और सीढ़ियाँ गर्मी से झुलस रही थीं। खासकर इस घर के आसपास, ऐसा लग रहा था मानो सूरज की रोशनी पल-पल बढ़ती जा रही हो और घर के अंदरूनी हिस्से में घुसने की कोशिश कर रही हो।

महादेव शास्त्रीगल गाँव के ज्योतिषी थे। उन्हें उस दिन सूर्य की चमक से कुछ विशेष और रहस्यमय संकेत मिल रहा था। “हम्म! शायद किसी दिव्य बालक का जन्म हो रहा है।” उन्होंने अनुमान लगाते हुए अपना ज्योतिषीय बोर्ड और चार्ट उठाया और समय की गणना शुरू कर दी। उन्होंने जो कुछ भी पता लगाया, उसे अपनी नोटबुक में लिख लिया।

वाह! ज्योतिषी की भविष्यवाणी के अनुसार, दोपहर के शुभ मुहूर्त में एक सुंदर बालक का जन्म हुआ।

पारू के अथक प्रयासों से घर में बच्चे का जन्म हुआ। बच्चे का रोना कोयल की छोटी सी चीख जैसा था। ऐसा लग रहा था मानो वह स्वर्ग के सुखों का आनंद लेने के बजाय इस दुनिया में जन्म लेने पर पछता रहा हो। बच्चे का रोना पंद्रह मिनट तक जारी रहा। यह देखकर पारू ने उस नन्हे बच्चे के मुँह में कुछ बूँदों दूध में मिला हुआ चीनी का पानी पिलाया। बच्चा धीरे-धीरे शांत हुआ और अपनी माँ की ओर देखते ही उसकी आँखें चमक उठीं। धीरे-धीरे वह गहरी नींद में सो गया। इसी बीच, दाई ने प्रसव के बाद की सभी आवश्यक रस्में पूरी कीं। थोड़ी देर बाद, उसने बच्चे को साफ किया और सोर्नम को गर्म पानी से मालिश की।

हालांकि सोरनम बहुत कमजोर महसूस कर रही थी, फिर भी उसने बड़ी मुश्किल से पारू द्वारा दिए गए गर्म जड़ी-बूटी के काढ़े को पिया। उसे लगा

अपने बेटे को देखकर खुश होने के साथ-साथ उसे एक कमजोर बच्चे के रूप में देखकर उसे रोने का भी मन कर रहा था।

सोरनम को देखकर पारू समझ गई कि उसके मन में क्या चल रहा है। उसने प्यार से उसे सहलाया और भरोसा दिलाया कि बच्चा जल्द ही स्वस्थ हो जाएगा। उसने यह भी आश्वासन दिया कि वह रोज़ आकर बच्चे को नहलाएगी और गुड़ का पानी व दूध पिलाएगी। साथ ही उसने कहा कि माँ के दूध से बच्चे का स्वास्थ्य

जल्दी ठीक हो जाएगा। इतना कहकर उसने सोरनम से कहा कि वह निश्चिंत होकर आराम करे और बच्चे की देखभाल की जाएगी।

इन सब के बाद, पारू ने उत्सुकता से प्रतीक्षा कर रहे बूढ़े दंपति को बच्चा सौंप दिया और उसे उनका सुंदर राजकुमार कहकर पुकारा। उसने पूछा

गार्गर बच्चे के जन्म का सही समय नोट करती थीं ताकि कुंडली लिखी जा सके। पारू इसमें माहिर थीं। प्रसव के समय अगर सही घड़ी न दी जाए तो वह खूब हंगामा करती थीं। वह खुद यह सुनिश्चित करती थीं कि घड़ी में सही समय दिखे।

नन्हे बच्चे को गोद में लिए हुए गरगर मुस्कुराई और पारू से पूछा, "पारू, मुझे इस बच्चे की बहुत चिंता है। देखो! यह कैसा है!"

"वह दुबला-पतला और कमज़ोर है।" लेकिन दाई बेफिक्र थी। "महोदय, आप तो बहुत पढ़े-लिखे हैं। क्या आपको पता है मैंने अब तक कितनी प्रसव प्रक्रियाएँ देखी हैं? आप इतनी चिंता क्यों करते हैं? सोरनम बहुत दुबली है, इसलिए उसका बच्चा भी दुबला-पतला होगा। मैं रोज़ उनसे मिलने जाऊंगी और उनकी देखभाल करूंगी। अब अम्मा, कृपया मुझे मेरी रकम दे दीजिए। बहुत दिनों बाद आपके घर में एक राजकुमार का जन्म हुआ है। उदारता से दान कीजिए।" पारू ने गांधीमथी की ओर देखते हुए कहा। बूढ़ा आदमी पैसे लेने अंदर चला गया।

उसी समय, बच्चे के पिता रामजी अंदर भागे आए। उत्सुकता से उन्होंने पूछा, "अम्मा! मेरा बच्चा कहाँ है? कृपया बताएँ।"

मुझे दिखाओं "।

"अय्या! अपने नन्हे राजकुमार को देखो!" पारू ने बच्चे को गोद में लेकर सावधानीपूर्वक रामजी की गोद में रखते हुए कहा।

"अरे! ये क्या है? ये तो सफेद कौवे जैसा दिखता है। कितना दुबला-पतला है। क्या ये बच पाएगा?" ये पहले शब्द थे जो रामजी के मुंह से निकले। रामजी ने पारू से संदेह भरे स्वर में पूछा। ये सुनकर लक्ष्मी अम्माल को बहुत गुस्सा आया। "रामजी! क्या आपको पता भी है कि आप क्या बोल रहे हैं? आप इस बच्चे के पिता हैं और क्या आपको नहीं पता कि इस तरह बात नहीं करनी चाहिए? क्या आप एक बार भी अच्छे शब्द नहीं बोल सकते? अगर सोर्नम ये सब सुन लेगी तो कितनी दुखी होगी!" अगर रामजी पास खड़े होते तो वह उन्हें मार ही डालती। "सर, देखिए बच्चा कितना गोरा है! आप इस तरह क्यों बोलते हैं?" पारू ने थोड़ी नफरत भरी आवाज में कहा।

"जी हाँ! जी हाँ! यह सच है। मेरे लिए एक कौवे का राजा पैदा हुआ है।" रामजी जोर से हँसे। लेकिन उनके मन में एक हल्का सा दुख का भाव कौवे की तरह दौड़ रहा था। बीते दिन की बातें उनके दिमाग में कौवे की तरह कौवे की यादों ...

इसी बीच, रामजी के पिता गरगर उपहारों और पैसों से भरी एक थाली लेकर वहां आए, जिसे दाई पारू को देना था।

(बाबू के दादा गार्गर द्वारा पूजी गई भगवान विनायक की छवि)-

अध्याय दो

केवल प्रार्थनाओं ने ही बच्चे की जान बचाई।

पारू, दाई, ने अपने सारे दांत दिखाते हुए दिल खोलकर मुस्कुराया। क्यों नहीं? थाली में रखे पैसे, सुपारी और हल्दी के साथ-साथ एक खूबसूरत चमकती साड़ी ही उसकी खुशी का कारण थी। रकम पचास रुपये से कम नहीं थी। कुछ अतिरिक्त सिक्के भी थे। 1942 के दौर में पचास रुपये का मूल्य कहीं अधिक था। उसने खुशी-खुशी थाली ले ली, उसकी आँखों से आंसू बह रहे थे। आंसू पोंछते हुए पारू बोली।

“आप सभी का जीवन सुखमय और मंगलमय हो, सामी! यह बहुत ही सौभाग्य की बात है।”

बच्चे, इसका अच्छे से ख्याल रखना। मेरी बात याद रखना। यह राजा की तरह बड़ा होगा।” यह कहते हुए पारू ने अपने हाथों को इस तरह हिलाया मानो कौवे के राजकुमार की बुरी नजरों को दूर भगा रही हो। इसके साथ ही उसने अम्मालू की उंगलियों को धीरे से छूकर उसे विदाई दी।

“जी पारू! कृपया आते रहना और बच्चे को देखना और उसकी देखभाल करना। ठीक है?” लक्ष्मी अम्माल ने कहा। गरगर ने भी खुशी से उसे फिर आने के लिए कहा। घर में एक बेटे के जन्म की खबर सुनकर उसकी आँखों में आँसू आ गए।

अपनी आवाज में थोड़ा गर्व लिए उन्होंने अपनी विकलांग पत्नी को छुआ और बोले, “अम्मालू! क्या आप शालग्राम विष्णु की शक्ति देख सकती हैं, जिनकी मैं प्रतिदिन प्रार्थना करता हूँ? पारू कितनी बुद्धिमान हैं! उन्होंने बच्चे को कितना प्यार और संतोष दिया है! क्या आपने सुना? मैं इस बच्चे को राजा की तरह पालूंगा। उचित उम्र में मैं उसे श्लोक, मंत्र और जप सिखाऊंगा।”

गार्गर के घर में बच्चे के जन्म की खबर सुनकर,

गांववाले, रिश्तेदार, सोर्नम के पिता वेंकटचलम अय्यर, उसकी बहन संपूर्णम (जो गांव में उसी कतार के एक घर में रहती थी) और सभी पड़ोसी नवजात शिशु को देखने आए, जिसे हॉल में एक अस्थायी पर्दे के पीछे रखा गया था। सभी ने बच्चे को प्यार से सहलाया और आशीर्वाद दिया। वे रीति-रिवाज के अनुसार हीरे के आकार के चीनी के टुकड़े और मेज पर रखी चीनी लाए और बच्चे की दादी के सामने रख दी।

“हम्म! अम्मालू मामी! अब आपको एक पोते की देखभाल करनी पड़ेगी।”

“आपका समय बहुत अच्छा बीतेगा,” युवती संपूर्णम ने शरारती और प्रसन्न स्वर में कहा। उसे लगा कि उसकी बहन भाग्यशाली है कि वह एक धनी और प्रसिद्ध परिवार की बहू है और उसने एक पुत्र को जन्म देकर मातृत्व का प्रमाण दिया है।

“ठीक है! ठीक है! शरारती बच्ची। इधर आओ!” ऐसा कहते हुए लक्ष्मी अम्माल ने संपूर्णम का हाथ खींचा। “अब भैरवी राग का वो गीत ‘सकला सौभाग्यम थारुम अम्बा’ गाओ। जब भी तुम हमारे घर आती हो, अपनी मीठी कोयल जैसी आवाज़ में गाती हो जिससे मेरी चिंताएँ दूर हो जाती हैं। चाचाजी को भी सुनने दो। हम्म... अब गाओ।” लक्ष्मी अम्माल के ये शब्द कहते ही संपूर्णम बिना किसी झिझक के पद्मासन में बैठकर गाने

लगी। सीधी मुद्रा में गाते समय उसकी आँखों में हमेशा एक ध्यानमग्न भाव झलकता था। यह उसके गुरु का आशीर्वाद था। पूरा गाँव उसकी अद्भुत स्मृति शक्ति को देवी सरस्वती के आशीर्वाद से जोड़ता था। सचमुच, अपने गुरु द्वारा सिखाए गए रागों और गीतों को गाने की उसकी क्षमता कोई छोटी बात नहीं थी। अगर उसका परिवार ऐसा न करता, तो वह एक महान संगीतकार बन जाती। क्या किया जा सकता था? परिवार, जिसमें उसकी माँ भी शामिल थी, उन दिनों महिलाओं के मंच पर प्रदर्शन करने के सख्त नियमों का पालन करता था। उनका मानना था कि इस कृत्य से पूरे गांव की प्रतिष्ठा धूमिल हो जाएगी।

अब पूरा घर उसके गायन में मग्न हो गया था। बच्चे को देखने आए सभी लोग अपनी गपशप और छोटी-मोटी बातें भूलकर उसकी सुरीली आवाज़ में खो गए। संपूर्णम ने गाना खत्म होने के बाद ही अपनी आँखें खोलीं। सबने ताली बजाई और उसकी प्रशंसा की। वह नवजात शिशु और माँ से थोड़ी दूर बैठी थी। लेकिन, शोरगुल का उन पर कोई असर नहीं पड़ा क्योंकि वे अस्थायी दीवार के पीछे गहरी नींद में सो रहे थे।

जब एक और गीत की फरमाइश उठी, तो संपूर्णम ने कंबोधि राग का एक गीत प्रस्तुत किया। रामजी और गरगर समेत सभी ने प्रस्तुति का आनंद लिया। रसोइया गांधीमती रसोई से बाहर आईं और उन्होंने "ताल" के इशारे किए, क्योंकि उन्हें कर्नाटक संगीत का थोड़ा-बहुत ज्ञान था। इसके बाद लोग एक-एक करके जाने लगे। उन्होंने सोचा कि सोर्नम के बच्चे के जन्म ने उन्हें संगीतमय दावत के रूप में दिव्य अनुभव का अवसर दिया है।

लक्ष्मी अम्माल ने संपूर्णम को तुरंत जाने नहीं दिया। “तुम्हें पायसम (मीठा दलिया) के साथ दावत का आनंद लेना है। भोजन के बाद मैं तुम्हें पान के पत्ते और सुपारी दूंगी। तुमने अपने संगीत से इस घर को एक पवित्र स्थान में बदल दिया है। मुझे तुम पर बहुत गर्व है, मेरी प्यारी बच्ची!” उन्होंने उसके हाथों को कसकर पकड़ लिया।

घर में दिव्य संगीत की मधुर ध्वनि गूंजती रहनी चाहिए थी। लेकिन भाग्य को कुछ और ही मंजूर था। बच्चे का नामकरण उसके जन्म के बारहवें दिन हुआ। बच्चे का नाम सुब्रमणियन रखा गया। दुर्भाग्य से, उसी दिन वह तेज सर्दी और बुखार से बीमार पड़ गया। दादा-दादी बहुत परेशान हुए और लगातार भगवान के नाम जपने लगे। गरगर ने महादेव शास्त्रीगल को संदेश भेजा कि वे घर में शालग्राम पूजा करें क्योंकि उन्हें स्वयं यह करने की अनुमति नहीं थी।

अध्याय-3

भविष्यवाणी और दवा

महादेव शास्त्रीगल की आवाज मधुर थी, लेकिन उनका चेहरा तेजस्वी था।

उनका शारीरिक गठन भी सबको उनके सामने आदरपूर्वक झुकने पर मजबूर कर देगा, क्योंकि वे हमेशा शक्ति मंत्रों का जाप करते हुए तपस्या करते रहते थे। उनके आगमन को देखकर गरगर उत्सुकता से उनका स्वागत करने के लिए बाहर आए। उन्हें देखते ही उन्होंने आँसुओं से कहा, “शास्त्री जी! जब मेरे पोते का जन्म

हुआ था, तब आप यहाँ आए थे और कहा था कि वह एक ज्ञानी व्यक्ति के रूप में बड़े होंगे, दीर्घायु होंगे और समस्त मानवता के प्रति दयालु भाव रखेंगे। आपने यह भी कहा था कि उनकी कुंडली में गुरु नक्षत्र का प्रबल प्रभाव है। लेकिन अब देखिए! वे कितने कष्ट में हैं! उन्हें साँस लेने में तकलीफ हो रही है! क्या आपके पास इसका कोई उपाय है?" गरगर की आवाज भावनाओं से भर उठी और उनकी आँखों से आँसू बहने लगे।
"कृपया ज्योतिषीय उपाय को अभी के लिए स्थगित कर दें, गार्गर! अभी के लिए।"
"आपने बच्चे को क्या दवा दी है?" शास्त्रीगल ने पूछा... "हमारी नर्स पारू ने बच्चे के माथे पर जड़ी-बूटियों का पेस्ट लगाया था।" गर्गर ने उत्तर दिया। शास्त्रीगल ने बच्चे को बुलाया और उसे अपनी गोद में बिठा लिया। उन्होंने कुछ क्षणों के लिए बच्चे की आँखों में गहरी एकाग्रता से देखा। उनकी जीभ भगवान मुरुगन और कात्यायनी देवी के शक्तिशाली मंत्रों का जाप करने लगी। फिर उन्होंने मंत्रों का जाप करते हुए अपने दाहिने हाथ की तर्जनी उंगली बच्चे के शरीर पर धीरे-धीरे रखी, माथे से शुरू करके छाती, पेट और अंत में पैरों तक। फिर उन्होंने बच्चे की ठुड्डी पकड़ी, शक्तिशाली 'शनमुगा कवचम' का पाठ किया और आश्वासन दिया कि अब बच्चे की बीमारी दूर हो जाएगी। बच्चा धीरे-धीरे मुस्कुराने लगा... जाप करते आचार्य के चेहरे को गहराई से देखते हुए। बस! बच्चा अब सामान्य रूप से सांस लेने लगा।
"गरगरजी!...अब सब ठीक हो जाएगा।
डरने की कोई बात नहीं। उसकी रोग प्रतिरोधक क्षमता थोड़ी कम हो गई थी। यही समस्या थी! अब दोपहर के बारह बज रहे हैं। कल अम्बासमुद्रम जाना। मेरे चाचा का बेटा वैद्यनाथन वहाँ बाल रोग विशेषज्ञ है। मैं उसे सिफारिश पत्र दे दूँगा। एक ठेला लेकर उसे साथ ले आना। वह मेरी बात मानेगा। पिछले छह वर्षों में उसने दिल्ली और कलकत्ता की यात्रा की है, चिकित्सा का अभ्यास किया है और बहुत अनुभव प्राप्त किया है। अब वह अपने माता-पिता के साथ अपने पैतृक स्थान पर बस गया है। वह एक कुशल बाल रोग विशेषज्ञ है। अगर वह यहाँ आता है, तो वह विशेष दवाएँ देगा और बच्चे के विकास और रोग प्रतिरोधक क्षमता बढ़ाने के लिए अच्छी सलाह देगा। क्या तुम मेरी बात मानोगे?
"ज़रूर! मैं कभी आपकी अवज्ञा नहीं करूँगा शास्त्रीजी! आप अनमोल हैं।"
इस गाँव के लिए आप एक अनमोल धरोहर हैं। आपने उत्तर दिशा में बहुत यात्रा की है और कई संतों से मुलाकात की है, उनका आशीर्वाद और मंत्र भी ग्रहण किए हैं। आपका हमारे बीच होना हमारे लिए सौभाग्य की बात है। है ना? स्वामी जी! कृपया मुझे बताए बिना कहीं मत जाइए।" गर्गर ने उत्साह से उनके हाथ पकड़ लिए। "ठीक है! ठीक है! कृपया मेरी इतनी प्रशंसा मत कीजिए। यह सब मेरे गुरु के आशीर्वाद और भगवान मुरुगन के वरदान से ही संभव हुआ है। क्या मैं अब चालग्राम पूजा शुरू करूँ? अरे! आपने तो इसके लिए सब कुछ तैयार रखा है। बहुत बढ़िया! बहुत बढ़िया!"
वह पूजा की चटाई पर पद्मासन में बैठ गया, उस लकड़ी के तख्ते के सामने जहाँ अनुष्ठानों के लिए चालग्राम की मूर्तियाँ (गेंदें) रखी थीं। उसने विष्णु सहस्रनाम का जाप शुरू किया और मूर्ति को फूल चढ़ाने लगा। गार्गर

भी उसके साथ जाप कर रही थी। दिव्य स्पंदन पूजा कक्ष के फर्श से फैलकर अगले कमरे तक पहुँचने लगा, जिससे बच्चे के रोंगटे खड़े हो गए।
बच्चे को देखकर सोरनम खुशी से चिल्लाई, "देखो, पारू, मेरा
मंत्रों का जाप सुनकर बच्चा मुस्कुरा रहा है! उसने अपने बच्चे को प्यार से चूमते हुए नहलाया।
पारू ने सोर्नम की बात मान ली। "जी अम्मा! यह तो दिव्य शिशु है। देखो, मंत्रोच्चार पर इसकी प्रतिक्रिया कैसी है!" उसने उसके कोमल गालों को हल्के से चुटकी ली और उसे चूमा।
अंततः, पूरी पूजा समाप्त हो गई। प्रसाद [अर्पण] हो चुका था।
तुलसी का पानी बांटा गया और बच्चे के मुंह में एक चम्मच तुलसी का पानी डाला गया। उसके माथे पर पवित्र विभूति (राख) लगाई गई। बच्चा तुरंत खुशी से खिलखिला उठा, जिससे बाकी लोग भी मुस्कुराने लगे।
नारियल, फलों से भरा एक थैला, धोती का एक टुकड़ा, पान के पत्ते और एक अच्छा
पुजारी को धनराशि दी गई। महादेव शास्त्रीगल ने गरगर को व्यक्तिगत रूप से लिखा एक अनुशंसा पत्र दिया, जिसे उन्हें अम्बासमुद्रम के चिकित्सक से मिलने जाते समय अपने साथ ले जाना था।
अगली सुबह, बैलगाड़ी की व्यवस्था की गई।
कोने वाले घर में सुब्बैया चाचा रहते थे। बैल सचमुच असाधारण रूप से बलवान थे, और गाड़ी को राखीमुथुथेवर चला रहे थे।
वह बैलों को वश में करने में माहिर था। गंतव्य (अंबासमुद्रम) सुबह दस बजे से पहले ही पहुँच गए। गर्गर जल्दी से घर में दाखिल हुआ और डॉक्टर को पत्र दिखाया।
डॉक्टर गार्गर को देखकर बहुत प्रसन्न हुए। उन्होंने उन्हें सम्मानपूर्वक श्रद्धांजलि अर्पित की।
उसने अपना मेडिकल किट पैक किया और ठेले पर चढ़ते हुए गरगर से कहा कि यह नवजात शिशु और अपने शास्त्री चाचा समेत सभी से मिलने का मौका है। घर पहुंचते ही उसने बच्चे की अच्छी तरह जांच की।
"गार्गर अंकल! अब बच्चा ठीक लग रहा है। वह थोड़ा सा
कम वजन। मैं एडैक्सिलिन (तरल) नामक दवा लिख रहा हूँ, जो बाजार में नई आई है। इसे दिन में तीन बार दूध पिलाने के बाद दें। हर बार पाँच बूँदें ही काफी हैं। बस देखते रहिए! वजन बढ़ने पर वह बेहतर दिखने लगेगा। दोपहर में उसे थोड़ा सा पतला गाय का दूध, जिसमें थोड़ी चीनी मिली हो, भी दें। इससे उसकी रोग प्रतिरोधक क्षमता बढ़ेगी। मुझसे पूछे बिना एडैक्सिलिन बंद मत करना। उसे कम से कम दो साल तक इसकी जरूरत पड़ सकती है।" यह कहकर डॉक्टर ने गरगर से अपनी फीस ली और अपने शास्त्री चाचा से मिलने के बाद अपने पैतृक स्थान लौट गए।
इस घटना के बाद, बच्चे का नाम अब बाबू उर्फ़ रखा गया है।
सुब्रमणियन शारीरिक रूप से पूरी तरह स्वस्थ और तंदुरुस्त था। सभी लोग बेहद खुश थे। डॉक्टर भी नियमित रूप से बच्चे के स्वास्थ्य और विकास की निगरानी के लिए आते थे। गांव के लोग बाल रोग विशेषज्ञ की कुशलता और अनुभव की प्रशंसा करते थे। इसके बाद वे गांव के सभी लोगों के पारिवारिक डॉक्टर बन

गए। इस प्रकार बच्चे को सभी का भरपूर ध्यान मिलने के साथ, इस परिवार का जीवन सुखमय ढंग से आगे बढ़ रहा था।

छह महीने सुचारू रूप से बीत गए। एक दिन सुबह रामजी बैठे हुए थे।

घर में नियमित पूजा के दौरान उनके पिता विष्णु सहस्रनाम का जाप कर रहे थे। तभी अचानक एक तेज आवाज ने सबको चौंका दिया। घबराकर सब लोग प्रार्थना कक्ष की ओर भागे।

“हाय गार्गर!...मैं यहाँ गुस्से में आई हूँ क्योंकि तुम सब मुझे भूल गए हो... क्या तुम्हें शर्म नहीं आती?” यह सुनकर सबको ऐसा लगा जैसे ज़मीन पर बिजली गिर पड़ी हो और सब डर से कांप उठे!

(Kalvai Sri.Sastha image)

अध्याय - 4

पूजा कक्ष में कुलदेव का आगमन

अचानक क्या हो गया, यह सोचकर सब लोग पूजा कक्ष की ओर दौड़ पड़े। यह रामजी थे, बच्चे के...

पिता ने आँखें फाड़कर जोश से नाचते हुए घोषणा की, “मैं कलवाई सास्था हूँ, तुम्हारे कुलदेवता। क्या तुम्हें याद नहीं कि तुमने अपनी बहू के सुरक्षित प्रसव के लिए गहरी प्रार्थना की थी? तुम और तुम्हारी पत्नी ने ही तो मेरे लिए अभिषेक और सरक्करई पोंगल (मीठा दलिया) अर्पित करने की गहरी प्रार्थना की थी! गरगर, मुझे उत्तर दो! छह महीने से अधिक समय बीत चुका है और लगता है कि तुम मेरे मंदिर में आने का अपना वादा पूरी तरह भूल गए हो। तुम्हें बारह दिनों के भीतर आना होगा। अगर नहीं, तो मुझे नहीं पता कि तुम सबका क्या हाल होगा।” रामजी पहले कभी न देखी गई चीख के साथ पेड़ की तरह गिर पड़े। उनके भाई लक्ष्मणन ने तुरंत उनका सिर पकड़कर उन्हें गिरने से बचाया।

इसी बीच, गरगर ने पूजा के लिए रखे कलश से थोड़ा पानी लिया और रामजी के चेहरे पर छिड़क दिया।

रामजी जाग गए।

उनके चेहरे पर खालीपन छा गया। “मुझे क्या हुआ? आप सब मुझे चिंता से क्यों देख रहे हैं?” रामजी ने पूछा।

“अरे रामजी!” गरगर ने उन्हें शांत करने की कोशिश करते हुए कहा। “हमारे कुलदेवता श्री सास्था ने आपके

माध्यम से हमें हमारी अधूरी प्रार्थनाओं की याद दिलाई। हमने बच्चे के सुरक्षित जन्म के बाद मंदिर जाने, मीठा पोंगल चढ़ाने और प्रार्थना करने का वादा किया था। हमने गरीबों को अन्नदान देने का भी वादा किया था। पिछले छह महीनों से बच्चे के खराब स्वास्थ्य के कारण हम यह भूल गए हैं। यह हमारा सौभाग्य और आशीर्वाद है कि भगवान स्वयं हमारे पास आकर हमें हमारे कर्तव्यों की याद दिला रहे हैं। इसका अर्थ है कि भगवान हमें देख रहे हैं और निरंतर हमारे साथ हैं।" वह बोलते रहे। "ठीक है! पूजा-अर्चना पूरी करने के बाद, हम कालवाई जाने के लिए एक शुभ दिन तय करेंगे। हमें महादेव शास्त्रीगल से सलाह लेनी होगी। यदि वे चाहें तो हमारे साथ चल सकते हैं।"

विस्तृत विष्णु पूजा के बाद, सभी ने भगवान को अर्पित प्रसाद ग्रहण किया और उसके बाद एक भव्य दोपहर का भोजन किया गया।

सोरनम ये सब सुन रही थी और तुरंत प्रसन्न हो गई। उसने बच्चे को गोद में लिया और उससे बोली, "मेरे बालक बाबू! तुम बहुत भाग्यशाली हो। हमारे कुलदेव ने तुम्हें इस घर में जन्म दिलाया है और स्वयं अपने मंदिर में तुम्हें विशेष आशीर्वाद देने का आदेश दिया है। सचमुच, तुम एक दिव्य बालक हो।" उसने बच्चे के माथे पर कई बार प्यार से चूमा, जिससे बच्चा उसकी गोद में मचलने लगा।

अब, किसी भी भ्रम से बचने के लिए, मैं (बाबू के) अपने दृष्टिकोण से कहानी सुनाऊंगा। क्या अब हम शुरू करें?

क्या हम अथाझनल्लूर गांव का संक्षिप्त दौरा करें, जो इन सभी घटनाओं के लिए जिम्मेदार था? आइए मेरे दादा गरगर के पैतृक इतिहास पर एक नज़र डालें...

उन दिनों गाँव हरा-भरा और समृद्ध था। गली के उस पार बारह घर थे जहाँ

यहां ब्राह्मण परिवार रहते थे। 'एल' आकार की सन्नाधी गली में आठ घर थे, जिनमें से दो जर्जर थे। पूर्व दिशा में, दो मील से आगे, तीन परिवार बुनकर, चार परिवार किसान और दो परिवार बढ़ई का काम करते थे। उनके घर गणपति गली में थे, जिसे अदावियार थेरु भी कहा जाता था। इसे पार करने के बाद, हमें हरे-भरे खेतों और तांभराभरानी नदी से बहते हुए अतिरिक्त पानी से भरे खेत दिखाई देंगे। खेतों में पानी रोकने के लिए दो बड़े-बड़े चबूतरे बने थे और पानी के बहने के लिए एक रास्ता भी था। अदावियार गली हमेशा ठंडी रहती थी और पेड़-पौधे हरे-भरे और सुंदर दिखते थे। दोपहर की तेज धूप के बावजूद बच्चे खो-खो, कंचे और अन्य खेल खेलते थे। गली दिन भर चहल-पहल से भरी रहती थी।

इसके अलावा, दक्षिण की ओर आधा मील की दूरी पर कोट्टई स्ट्रीट नामक एक गली थी। लोगों को इस गली से होकर गुजरना पड़ता था।

वीरवनल्लूर जाइए। उस गली में केवल दस घर थे जो देवर समुदाय के थे। वे बैल-गायों की देखभाल करके, पशुओं का दूध निकालकर और गांव के जमींदारों की गाड़ियां चलाकर अपना जीवन यापन करते थे। जब खेतों में काम होता था, तो वे सहायक बनकर ज़मींदारों के साथ जाते थे। वे काम में कुशल थे।

खेतों में काम करने वाले मजदूरों का प्रबंधन करना। वे अपने मालिकों के पीछे-पीछे छाता लेकर दौड़ते थे ताकि उन्हें चिलचिलाती धूप से बचा सकें। वे हमेशा अपने काम को पूरा करने में एक कदम आगे रहते थे और मालिकों की जरूरतों को समझने में माहिर थे।

इसी प्रकार, मेरे दादाजी के घर में रकीसामुथु देवर नाम का एक सहायक था। वह बहुत ही समर्पित कार्यकर्ता था।

वह खेत और घर के कामों को बड़ी कुशलता से संभालते थे। खासकर, वह मुझे बहुत प्यार करते थे और अक्सर मुझे अच्छे व्यवहार वाला बच्चा कहकर मेरी तारीफ करते थे। जब हम साथ बाहर जाते थे, तो मैं उनके कंधों पर बैठकर सवारी का आनंद लेता था। नौ साल की उम्र तक उन्होंने मुझे ताड़ के पत्तों से पंखे बनाना, मवेशियों के लिए चारा तैयार करना, उन्हें प्यार से पालना और उनकी खाल से कीड़े निकालना सिखाया। जानवरों के प्रति मेरा स्वभाव ही स्नेहपूर्ण हो गया, जो जल्द ही मेरी एक अच्छी आदत बन गई।

मैंने सन् 1970 में इस महान व्यक्ति रकीसामुथु देवर के सम्मान में तमिल में 'कांटेदार कटहल का अंदरूनी भाग' नामक एक कविता लिखी थी। इसने मुझे कवियों के बीच खूब प्रशंसा दिलाई और एक तमिल पत्रिका में प्रकाशित भी हुई! मुझे आज भी उनके बारे में बात करने में गर्व महसूस होता है।

कोटा गली के सभी बच्चे, जिनमें ब्राह्मण समुदाय के बच्चे भी शामिल थे, खेल खेलते थे।

साथ मिलकर रहना। इससे यह संकेत मिलता था कि उनके घरों में पर्याप्त धन और शांति थी। सभी समुदायों के बच्चे और बुजुर्ग एक-दूसरे के साथ सद्भाव से रहते थे। यदि गाँव में कोई सामूहिक उत्सव होता था, तो वे सब मिलकर उसे कुशलतापूर्वक संपन्न करते थे।

अब समय आ गया है कि मैं अथाझनल्लूर मंदिर या अधिमूलास्वामी मंदिर का वर्णन करूं। इसका उल्लेख इसमें किया गया है।

पुराणों में गजेंद्र मोक्ष की कथा है। पास के मंदिर में भगवान महाविष्णु को पुष्प अर्पित करने के बाद एक हाथी ने तालाब में पैर डालने की कोशिश की, लेकिन एक मगरमच्छ ने उसे जबरदस्ती अंदर खींच लिया। हाथी ने दर्द सहते हुए अपनी सूंड ऊपर उठाई और भगवान से प्रार्थना की कि उसे इस कष्ट से मुक्ति दिलाएं। उसने भगवान विष्णु से कहा कि वह तो केवल भगवान की पूजा करने के लिए अपनी सूंड में पानी भरने गया था, तो फिर यह कष्ट क्यों सह रहा है? हाथी की पुकार और सच्ची प्रार्थना सुनकर भगवान महाविष्णु तुरंत आए और अपने सुदर्शन चक्र से मगरमच्छ को मार डाला। यह घटना इसी गांव में घटी थी। इसके प्रमाण स्वरूप, मंदिर के तालाब में डूबे एक विशाल पत्थर पर गजेंद्र और खुले मुंह वाले मगरमच्छ की नक्काशी आज भी मौजूद है। यह सोचना भी आश्चर्यजनक है कि पानी के नीचे इतने विशाल पत्थर पर ऐसी नक्काशी कैसे की गई होगी। इस घटना को और पुख्ता करने के लिए, एक पांड्य राजा ने भगवान को समर्पित एक मंदिर का निर्माण करवाया और उन्हें 'गजेंद्र वरधर' नाम दिया। यह घटना लगभग पाँच सौ वर्ष पूर्व घटी थी। चूंकि हाथी ने भगवान को 'अधिमूला' कहकर पुकारा, इसलिए यह नाम मंदिर के देवता के साथ भी जुड़ गया।

शुक्रवार और शनिवार के दौरान, साट्टुपथु, हरिकेसवनल्लूर जैसे पड़ोसी गांवों से भारी भीड़ उमड़ती है।

वीरवनल्लूर, तिरुपुदैमरुधुर और सीनियावरम के लोग भगवान के चरणों में अपने कष्टों और दुर्भाग्य का प्रायश्चित करने और शाश्वत आशीर्वाद प्राप्त करने की आशा में मंदिर में आते हैं।

(गजेंद्र मोक्षम का चित्रण करते हुए अथज़ानल्लूर पेरुमल)

(अथाज़ानल्लूर अथिमूला)

स्वामी मंदिर का गोपुरम)

अध्याय-5

श्री सस्था के मंदिर में

श्री सस्था मंदिर के दर्शन के लिए एक शुभ दिन का चयन किया गया।

महादेव शास्त्रीगल ने गार्गर से कहा, “स्वामी जी! इस सप्ताह का शुक्रवार बहुत शुभ है। ज्योतिष के अनुसार, भगवान सस्था को समर्पित एक विशेष नक्षत्र, पंगुनी उथिरम, शुक्रवार को प्रकट होगा। आप मंदिर जाकर परिवार के सभी सदस्यों के नाम पर अभिषेक और अर्चना कर सकते हैं और विभिन्न फल और मीठा पोंगल नैवेद्य के रूप में अर्पित कर सकते हैं। मुझे क्षमा करें, मैं शुक्रवार को आपके साथ नहीं आ पाऊंगा। मुझे अंबई में सष्टि आप्तपूर्ति समारोह में भाग लेना है। मुझे यह भी लगता है कि आपकी एम्बेसडर कार में केवल कुछ ही लोग बैठ सकते हैं। पूजा समाप्त होने के बाद, कृपया मुझे प्रसाद भेज दें। बस इतना ही काफी है!”

गार्गर उससे सहमत हो गया और लक्ष्मणन को जाने के लिए कहा।
वीरवनल्लूर जाकर टैक्सी बुक करें। आमतौर पर परिवार ऐसे मौकों पर राजपांडियन से टैक्सी किराए पर लेता था। वह परिवार के प्रति बहुत वफादार थे। वह मध्यम गति से गाड़ी चलाते हुए रास्ते में आने वाले स्थानों के महत्व और सुंदरता का इस तरह वर्णन करते थे कि सुनने वाले मंत्रमुग्ध हो जाते थे।
अगले शुक्रवार को, सभी लोग सुबह 8 बजे तैयार थे।
जब तक वे मंदिर पहुंचते हैं, आइए गार्गर के रोचक जीवन इतिहास की एक झलक देख लें।
यह वर्ष 1893 था, जब पैसे और आना का महत्व था।
गरीब लोगों को चार आने में दाल, इमली, कुछ बैंगन और सरसों मिल जाती थी, जिससे वे स्वादिष्ट सांभर बना लेते थे। इसके अलावा, सेंधा नमक और मिर्च मुफ्त में मिलती थी। हालांकि उस समय देश पर अंग्रेजों का शासन था, फिर भी वस्तुएं सस्ती और अच्छी गुणवत्ता की होती थीं।
सोलह वर्ष की आयु में, मेरे दादा (थत्था) सुब्रमण्यन का निधन हो गया।
गार्गर, जिसे इसी नाम से पुकारा जाता था, को उसके पिता और दादा ने बुरी तरह पीटा था। क्योंकि उसने गणित में बहुत कम अंक प्राप्त किए थे, जबकि उसने मैट्रिक परीक्षा उत्तीर्ण कर ली थी, जिसे उस समय की सबसे उच्च परीक्षा माना जाता था। इसलिए, वह कॉलेज में दाखिला नहीं ले सका, जिससे वह बहुत दुखी था। खुद पर शर्म महसूस करते हुए, गार्गर अपने पास मौजूद थोड़े से पैसे लेकर घर से भाग गया। उसे जाते हुए किसी ने नहीं देखा। वह तिरुनेलवेली गया और श्री रामचंद्र विलास में एक शानदार भोजन किया। उसने पिछले दिन गुस्से के कारण खाना नहीं खाया था। फिर वह एक गिरवी की दुकान पर गया और अपनी चांदी की कमरबंद अच्छे दाम पर बेच दी। लोगों से पूछताछ करके वह चेन्नई पहुंचा और उत्साह से बर्मा जाने वाले जहाज पर सवार हो गया।

अंग्रेजी में उनका अच्छा उच्चारण, सुगठित शरीर और उच्च आत्मविश्वास ने उन्हें
उन्हें बर्मा भेजा गया और वहाँ उन्हें एक अच्छा जीवन जीने में मदद की गई। उन्होंने कुछ समय तक एक होटल में बिल क्लर्क के रूप में काम किया, फिर कई अन्य नौकरियाँ कीं और सीनियर कैम्ब्रिज विश्वविद्यालय से पढ़ाई की, जो आज के बी.ए. के समकक्ष है। उन्होंने प्रथम श्रेणी में उत्तीर्ण होकर एक कॉलेज में दाखिला लिया। वे शाम के समय कड़ी मेहनत करके कमाते थे। एक ब्रिटिश कलेक्टर उनसे प्रभावित हुए और उन्हें अपना विजिटिंग कार्ड दिया। उन्होंने गार्गर से कहा कि शिक्षा पूरी होने के बाद उनसे मिलें। यह मुलाकात उनके जीवन का एक महत्वपूर्ण मोड़ साबित हुई और उनके लिए सौभाग्य लेकर आई। उन्होंने कलेक्टर का अनुरोध स्वीकार किया और उनके कार्यालय में उनसे मुलाकात की। उन्हें शिक्षा विभाग में 'स्कूल निरीक्षक' के पद पर नियुक्त किया गया और पर्याप्त प्रशिक्षण दिया गया। इसके बाद उनकी स्थिति और जीवन में जबरदस्त सुधार हुआ।

आधिकारिक तौर पर उनका नाम के.वी.एस. गरगर से जुड़ गया। उन्हें प्यार से के.वी.एस. गरगर कहा जाता था।
कलेक्टर द्वारा। बाईस वर्ष की आयु में वे अपने पैतृक गाँव लौट आए और अपनी मौसी की पुत्री लक्ष्मी से विवाह कर लिया। वे लक्ष्मी के साथ वापस बर्मा चले गए। उन दिनों बर्मा, रंगून और मलाया को सामूहिक रूप से ब्रिटिश प्रांत कहा जाता था। वे शिक्षा विभाग में अधिकारी बने और उन्हें एफ.एम.एस. [फेलोशिप ऑफ मलाया स्टेट्स] से सम्मानित किया गया, जिसे उच्च सम्मान माना जाता था। इसके बाद उनकी स्थिति में जबरदस्त सुधार हुआ और उन्हें एक अलग बंगला, तीन कारें और दो लंदन मोटरसाइकिलें आवंटित की गईं। कुछ ही वर्षों में उन्हें दो पुत्रों, रमन और के जन्म का आशीर्वाद प्राप्त हुआ।
लक्ष्मणन। उन्हें सर्वोत्तम शिक्षा दी गई। पच्चीस वर्ष बिना किसी बड़ी समस्या के बीत गए। फिर जापान युद्ध शुरू हो गया। जापान द्वारा बर्मा और रंगून पर बमबारी के डर से, गरगर ने एक सूटकेस में पैसे इकट्ठा किए और अपने परिवार के साथ सुरक्षित रूप से मद्रास पहुँच गए। इस सब उथल-पुथल के बीच, उनकी सुंदर पत्नी मलेरिया की चपेट में आ गईं। कुनैन की भारी खुराक के कारण वे स्थायी रूप से अंधी हो गईं।
गार्गर ने अपने जीवन की अत्यंत कठिन परिस्थितियों में धैर्य नहीं खोया।
उन्होंने अपने भाग्य के सामने पूर्णतः आत्मसमर्पण कर दिया और अथाझनल्लूर गाँव आ गए। उन्होंने लगभग दस एकड़ जमीन खरीदी और खेती शुरू कर दी। धीरे-धीरे अच्छे और समर्पित मजदूरों की मदद और उनकी कड़ी मेहनत से उनकी स्थिति में सुधार हुआ।
बर्मा में चार साल बाद युद्ध समाप्त होने पर उन्हें एक
विदेश सेवा के पूर्व अधिकारी के रूप में उन्हें पाँच सौ रुपये की पेंशन मिलती थी। यह राशि वर्तमान में पाँच हज़ार रुपये के बराबर है। उन्होंने इसे अपने अच्छे कर्मों का फल माना। उन्होंने महादेव शास्त्रीगल से विष्णु सहस्रनाम, शिव स्तुति, तिरुवाचगम और महान कवि सुब्रमण्यम भारती के कुछ दिव्य गीतों का अध्ययन शुरू किया। उन्होंने योगी द्वारा आशीर्वादित और प्रदान किए गए दो सुंदर शालग्रामों की प्रतिदिन श्रद्धापूर्वक पूजा करना शुरू किया। उनकी श्रद्धापूर्वक पूजा ने उन्हें दैवीय शक्ति प्रदान की और गाँव में उनकी प्रतिष्ठा बढ़ गई।
अब, क्या हम कलवाई वापस चलें? टैक्सी मुड़कर आगे बढ़ी।
श्री वैकुंठम से कलवाई की ओर जाने वाला कच्चा वन मार्ग गड्ढों और पत्थरों से भरा हुआ था। इस मार्ग से दूर दो सड़कें ब्राह्मणों के लिए और दो खेतिहर मजदूरों के लिए आरक्षित थीं। बाजार जाने के लिए लोगों को श्री वैकुंठम जाना पड़ता था, जो पाँच मील दूर था। यह स्थान वीरान और अविकसित प्रतीत होता था, और आज तक यहाँ समृद्धि का कोई निशान नहीं दिखता।
लेकिन सस्था मंदिर की लोकप्रियता बढ़ती जा रही थी। सस्था

ऐसा कहा जाता है कि स्थापित मूर्ति स्वतः ही निर्मित हुई है। इसलिए, शनिवार और देवता के विशेष नक्षत्र उथिरम से जुड़े दिनों में, आसपास के गांवों से सभी संप्रदायों के लोगों की भारी भीड़ उमड़ती थी। लोग प्रार्थना और धन्यवाद अर्पित करने आते थे। पुजारी का भी अच्छे से ख्याल रखा जाता था।
वर्ष 2005 में श्री के लिए एक विशाल गोपुरम (गुंबद) का निर्माण किया गया था।
सास्था का निर्माण किया गया। इसके साथ ही एक रसोईघर और एक बड़ा हॉल भी बनाया गया। दान के रूप में चार मंदिर की घंटियाँ भी लगाई गईं। कुंभभिषेकम या अभिषेक समारोह भव्यता से संपन्न हुआ।
श्री सस्था कभी भी सच्चे मन से प्रार्थना करने वाले को निराश नहीं करते। यदि
यदि कोई व्यक्ति अपने वादे के अनुसार प्रार्थना और भेंट चढ़ाना भूल जाता है, तो देवता उन्हें सपनों में याद दिलाकर यह सुनिश्चित करते हैं कि यह ठीक से किया गया था।
गार्गर और उनके परिवार ने श्रीवैगुंडम (एक
पास के कस्बे में पूजा के लिए और प्रसाद के रूप में मीठा पोंगल, विभिन्न प्रकार के फल, चीनी और शहद चढ़ाने के लिए लोग आए। देवता का पवित्र स्नान कराया गया और वहां एकत्रित सभी लोगों को अन्नदान दिया गया। हालांकि इस यात्रा के बाद कुछ दिन बीत गए थे, परिवार के सदस्य प्रसन्न थे और उन दिव्य क्षणों के अनुभवों को अक्सर आपस में साझा करते रहते थे।

(कलवाई सस्था मंदिर और उसका भव्य मंडपम)

6-- छोटे बाबू की शरारतें

सास्था मंदिर के दर्शन के बाद घर और गाँव में खुशियाँ आने लगीं...संपूर्णम (बाबू की चाची) का विवाह अचानक तय हो गया। दूल्हे का परिवार पलक्कड़ (पालघाट) से था और उनकी सुरीली आवाज़ सुनकर वे मंत्रमुग्ध हो गए। दूल्हा पढ़ा-लिखा था और उसे कर्नाटक संगीत में रुचि थी। वह उन्हें अपने जीवन में पाकर खुश था और मानता था कि वह परिवार में खुशियाँ लाएंगी। उसने अपने माता-पिता और अथाझनल्लूर स्थित उस घर में उपस्थित सभी लोगों के सामने ज़ोर से प्रस्ताव स्वीकार कर लिया। उन्होंने दहेज लेने से इनकार कर दिया। लड़के के माता-पिता की एकमात्र इच्छा थी कि विवाह गाँव में चार दिनों के भव्य आयोजन के रूप में हो। उन्हें उम्मीद थी कि उनके परिवार की ओर से लगभग 150-200 लोग समारोह में शामिल होंगे। वे चाहते थे कि उनका गर्मजोशी से स्वागत किया जाए, उनकी अच्छी देखभाल की जाए और उनके रहने-सहने की उचित व्यवस्था की जाए।

दूसरी खुशी की बात बाबू के स्वास्थ्य में सुधार था। उम्र के हिसाब से उसकी लंबाई और वजन काफी बढ़ गया था। अम्बासमुद्रम के डॉक्टर ने उन्हें दवा बंद करने को कहा। उन्होंने सलाह दी कि बच्चे को नियमित रूप से गाय का दूध पिलाएं और कभी-कभी हॉर्लिक्स भी दें। उन्होंने नरम सब्जियों के साथ अच्छी तरह पके हुए उबले चावल खाने का सुझाव भी दिया। दादा-दादी यह सुनकर बहुत खुश हुए।

गार्गर ने शुक्रवार के बाजार से अम्बासमुद्रम से एक स्वस्थ गाय खरीदी। घर में सभी लोग हर रात एक बड़ा गिलास दूध पीने लगे।

तीसरी खुशखबरी यह थी कि आदिमूलस्वामी मंदिर को गुंबद की दीवारों और मूर्तियों की रंगाई के लिए एक बड़ी राशि दान में मिली। चाचा सुब्बैया और गरगर ने अपने अनुभव के कारण इस कार्य को सुचारू रूप से संपन्न कराने की जिम्मेदारी ली। मंदिर के वृद्ध पुजारी श्री राम अयंगर कार्य को तेजी से होते देखकर बहुत प्रसन्न हुए। वे अपने जीवनकाल में कुंभभिषेगम और कुएं की सफाई होते देखकर बेहद खुश थे। दरअसल, वे लंबे समय से मंदिर के कुएं की दयनीय स्थिति देखकर दुखी थे।

सूखे पत्ते और धूल कुएँ में गिर रहे थे। माना जाता था कि इस पानी का इस्तेमाल भगवान और अन्य मूर्तियों को स्नान कराने के लिए किया जाता था। बार-बार शिकायतें करने के बाद, गार्गर के प्रयासों से कुएँ के ऊपर एक जाल लगाया गया। पुजारी को मंदिर से दो फर्लांग दूर स्थित तंबिरावरुणी नदी से पानी लाना मुश्किल हो रहा था, जिसके लिए मंदिर से साठ सीढ़ियाँ नीचे उतरना पड़ता था। यह काम पूरा करने के बाद उनकी साँसें फूलने लगती थीं। वे इस कष्ट को यह सोचकर सहन करते थे कि यह उनके कर्मों का फल है और वे इस पीड़ा को सह सकते हैं क्योंकि यह केवल अपने प्रिय भगवान की सेवा है। वे इस कठिन कार्य के अंत के लिए पूरी श्रद्धा से प्रार्थना करते थे। वे सन्निधि के सामने गहन भक्ति से गीत गाते थे। उनके कुछ मनमोहक तमिल भजन इस प्रकार हैं:-(लिप्यंतरित)

हे भगवान विष्णु! कौन कहेगा कि 'आप तो केवल एक पत्थर हैं'?

जब तुम मुझमें समाहित हो गए थे!?

तुम्हारी प्यारी धनुषाकार आँखों से—तुम
क्या तुमने मेरे पूरे अस्तित्व को अपने हृदय में समाहित कर लिया है?
2—आप अपनी अभय मुद्रा से सबकी रक्षा कर रहे हैं;
और एक मिनट के भीतर हमारे अंधकार को नष्ट कर देगा
और अपनी चमक से हमारे दिलों को रोशन करें!
3—हे प्रभु! जब मैं आपकी आराधना करता हूँ
और सैकड़ों फूलों की वर्षा करते हुए
तुम्हारी बिजली जैसी खिलखिलाती हंसी धीरे-धीरे मेरे दिल में जगह बना लेती है!
ओह माय गॉड! कितना प्यारा! कौन हिम्मत करेगा तुम्हें बताने की?
क्या तुम महज़ एक अटल पत्थर हो?
और वह पूरे मन से श्रद्धापूर्वक और आँखों में आँसू लिए इसी प्रकार सैकड़ों श्लोक तमिल में गाएगा।
जब कम लोग होते थे, तो वे गहन ध्यान में लीन हो जाते थे, जिससे धीरे-धीरे उन्हें सहज समाधि की अवस्था प्राप्त हो जाती थी। ध्यान के बाद, वे अपने सामने खड़े लोगों को हाथ उठाकर आशीर्वाद देते थे। उनके सांत्वना भरे शब्द और लोगों की कुछ समस्याओं के समाधान से मंदिर में तुरंत ही लोगों की भीड़ उमड़ पड़ती थी।
एक दिन, गरगर की मुलाकात उनसे मंदिर में हुई। "प्रिय अय्यंगर स्वामी जी! मेरा मन करता है कि मैं आपको अथाझनल्लूर अलवर कहकर पुकारूँ। आपको देखते ही इस गाँव में हर किसी को प्रसन्नता प्राप्त हो जाती है, जी हाँ, ऐसा महसूस होता है। वैष्णव परंपरा के अनुसार, वैष्णव के लिए ध्यान या योग की कोई आवश्यकता नहीं है। गुरु का आशीर्वाद और सच्ची पूजा ही मोक्ष की ओर ले जाने के लिए पर्याप्त है। मैंने वीरवनल्लूर मंदिर में प्रवचन के दौरान यही सुना था। लेकिन ऐसा लगता है कि आप गहन ध्यान में लीन हो जाते हैं। यह कैसे संभव है?" गरगर ने जिज्ञासा से रामा अय्यंगर से प्रश्न किया।
मंदिर के पुजारी ने मधुर मुस्कान के साथ कहा, "वे जो कुछ भी कहते हैं, वह पूरी तरह सच नहीं है। ध्यान मांगने से नहीं मिलता। यह कर्मफल है और सहजता से हो जाता है। श्री रामानुजर, कुलशेखर अलवर आदि जैसे कई प्रसिद्ध वैष्णव संत इसके सर्वोत्तम उदाहरण हैं। बौद्धिक ज्ञान और आध्यात्मिक अनुभव में अंतर होता है। यही बात आपने कुछ दिन पहले इसी मंदिर में कही थी। क्या मैं सही कह रहा हूँ?" ये शब्द सुनकर गर्गर बहुत आश्चर्यचकित हो गई।
ऐसा प्रतीत होता है कि भगवान ने ऐसे समर्पित आत्मा की परीक्षा न लेने का निश्चय किया। इसलिए मंदिर के अभिषेक समारोह ने मौजूदा समस्याओं के समाधान का मार्ग प्रशस्त किया। कुएँ का गंदा पानी निकाल दिया गया और गाद साफ कर दी गई। शुद्ध जल बहने लगा और कुआँ भरने लगा। पुजारी के सुझाव पर, पत्थर का वह मार्ग, जो अक्सर गर्मी के मौसम में बाहरी सन्निधि की परिक्रमा करने वालों के लिए मुश्किल साबित होता

था, उसे सीमेंट और अन्य टिकाऊ सामग्रियों से बदल दिया गया। श्री अयंगर को इस विचार के लिए खूब प्रशंसा मिली और उन्हें पुरस्कृत किया गया।

एक शुभ तिथि पर कुंभाभिषेगम का आयोजन बड़े धूमधाम से किया गया। नन्हा बाबू अपनी बचकानी भाषा और शरारतों से इस उत्सव का भरपूर आनंद उठा रहा था। आसपास के लोग उसकी ओर आकर्षित होते थे। बाबू घर में होने वाली शालग्राम पूजा को ध्यानपूर्वक देखता था। उसकी याददाश्त बहुत अच्छी थी। इसी गुण के कारण वह श्लोकों और धार्मिक गीतों को बड़ी आसानी से सुना सकता था। पूरा परिवार यह देखकर प्रसन्न होता था।

लेकिन हालात नहीं बदले। शायद शनि के प्रभाव से, परिवार में कुछ अप्रत्याशित घटनाएँ घटीं, जिनसे गाँव के सभी लोग हिल गए। आखिर वो घटनाएँ क्या थीं?!

(गार्गर दादाजी का पुराना घर - पर)

सनाधि स्ट्रीट, अथज़ानल्लूर)

अध्याय 7

परिवार में अशांति

लगता है इस परिवार पर किसी बुरी नज़र का साया पड़ गया है। चार साल का होने से पहले ही मेरे पिता रामजी का अपने पिता से किसी छोटी सी बात पर झगड़ा हो गया। वे अपनी माँ के पास गए और बोले, "माँ! मुझे यह जगह पसंद नहीं है। और मुझे समझ नहीं आता कि अपना समय कैसे बिताऊँ। खेतों की देखभाल के लिए दो मील चलना भी मेरे बस की बात नहीं। मैंने पिताजी से एक मोटरसाइकिल माँगी, लेकिन वे मुझ पर चिल्ला रहे हैं। क्या उनके पास पर्याप्त पैसे नहीं हैं? क्या वे मेरे लिए एक मोटरसाइकिल नहीं खरीद सकते? क्या मेरे लिए खर्च करने से उनके पैसे कम हो जाएँगे?" रामजी गुस्से से उछल-कूद करने लगे। लक्ष्मी अम्माल ने उन्हें समझाने की कोशिश की। लेकिन वे आधी रात को कुछ कपड़े और अपनी बचत लेकर घर से निकल गए, अपनी पत्नी को भी नहीं बताया। उन्होंने चेन्नई के लिए बस ली और वहाँ से ट्रेन से दिल्ली गए। वे एक कमरे में रुके और उन्हें पता चला कि सेना में भर्ती चल रही है। अपनी बेहतरीन अंग्रेज़ी और तंदुरुस्त शरीर के कारण उन्होंने अधिकारियों को सेना में भर्ती होने के लिए मना लिया। डेढ़ साल बीत गया।

इसी बीच, अथाझनल्लूर स्थित घर मातम में डूब गया।

लक्ष्मी अम्माल लगातार रोती रही। "मुझे नहीं पता कि मेरा बेटा इतना गुस्सैल क्यों है।" गरगर को सोर्नम को शांत करने का कोई उपाय नहीं सूझा।

"जाने से पहले उन्होंने अपनी पत्नी को भी नहीं बताया। मैं उन्हें बता रही थी कि अभी हालात ठीक नहीं हैं। सारा पैसा बीज और खाद खरीदने में खर्च हो गया। मैंने अगले साल साइकिल खरीदने का वादा किया था। उनमें बिल्कुल भी सब्र नहीं है, वे बहुत चिड़चिड़े हैं!" हालांकि उन्होंने ऐसा कहा, फिर भी गरगर ने वीरवनल्लूर और तिरुनेलवेली में लोगों को खोजबीन के लिए भेजा। लेकिन खोज व्यर्थ गई। छह महीने बीत गए। उनके पारिवारिक मित्र सुब्बैया ने मद्रास में अपने दोस्त से वहाँ खोजबीन करने का अनुरोध किया। डेढ़ साल बीत गया, रामजी का कोई पता नहीं चला। परिवार के लोग कलवाई और नेल्लैयप्पर मंदिर में प्रार्थना करने गए। कुछ नहीं हुआ। अगर कोई रामजी के बारे में पूछता, तो उन्हें टालमटोल वाला जवाब देना पड़ता था।

अंततः, जून के महीने में, चार सैनिकों ने उस स्थान के बारे में पूछताछ की और रामजी को, जो व्याकुल अवस्था में थे, वहीं छोड़कर चले गए। उन्होंने रामजी की कमाई, सैन्य वर्दी और कपड़े भी उन्हें दे दिए।

"महोदय, पिछले महीने तक आपका बेटा बिल्कुल ठीक था। लेकिन, दो महीने पहले, एक कमांडर ने उसे मुर्दाघर की देखभाल का काम सौंप दिया। हमें लगता है कि उसने अंधेरे में कुछ देख लिया होगा और डर गया होगा। वह मानसिक रूप से परेशान हो गया होगा। इस पूरे समय में, उसने कभी किसी पर चिल्लाया या किसी को परेशान नहीं किया। वह हमेशा ऊपर देखता रहता था और खुद से बातें करता और हंसता रहता था। सेना के विशेष डॉक्टरों ने उसका बेहतरीन इलाज किया, लेकिन उसकी हालत में कोई सुधार नहीं हुआ।

इसलिए, हमारे कमांडर-इन-चीफ ने उसका तबादला रद्द कर दिया। हमें यह पता उसके बैग से मिला है। अगर उसे उचित आराम और दवाइयाँ दी जाएँ, तो वह सामान्य हो सकता है।"
सेना ने अपने डॉक्टर का एक पत्र और कुछ अन्य दस्तावेज प्रस्तुत किए।
रंगीन गोलियाँ। सैनिकों के दयालु रवैये ने परिवार को रुला दिया। सोर्नम अपने पति की हालत देखकर बेहोश हो गई। उसकी देखभाल की गई। रामजी को ऊपर के कमरे में ले जाया गया और उन्हें भोजन और दवा दी गई। सैनिकों को अच्छा भोजन और कुछ पैसे दिए गए। गरगर ने रकीसामुथु देवर (हमारे नौकर) से उन्हें वीरवनल्लूर ले जाने को कहा।
परिवार में दुखद घटनाक्रम घटित हुआ। लक्ष्मण भी अपने भाई की हालत देखकर रो पड़े। गर्गर ने अंबई से एक अच्छे मनोचिकित्सक को बुलाया और रामजी की विशेष देखभाल की। एक महीने के भीतर ही उनकी हालत में लगातार सुधार होने लगा।
कुछ दिनों बाद, रामजी मुर्दाघर में ड्यूटी के दौरान घटी घटना को विस्तार से बता पाए। "आधी रात के करीब, एक बुरी तरह घायल मृत सैनिक मेरे पास आया और कहने लगा कि वह मरा नहीं है, बल्कि उसे यहाँ रखा गया है। मैं स्तब्ध रह गया। यही घटना मेरी ड्यूटी की दूसरी रात भी हुई। लेकिन जब दूसरे सैनिकों ने जाँच की, तो वह पहले ही मर चुका था। ऐसा हर रात होने लगा और मुझे लगता है कि मेरा मन विचलित और भ्रमित हो गया।"
"ठीक है, जो हुआ सो हुआ। तुम ज़िंदा हो और यही सबसे ज़रूरी है। अब से गुस्से में भागना मत।" रामजी के माता-पिता ने उसे दिलासा दिया और उसे एक राले साइकिल खरीदकर दी। उसे खेतों की देखभाल करने को कहा गया। "घर पर खाली समय मत बिताओ। खाली दिमाग शैतान का अड्डा होता है।" रामजी के पिता ने कहा, जिस पर वह हँस पड़ा। "अप्पा, मैं धीरे-धीरे अतीत से उबर रहा हूँ, लेकिन आप फिर से शैतान की बात करके मुझे डरा रहे हैं।" सब लोग हँस पड़े और सोर्नम ने आह भरकर कहा, "अब से हमें इस तरह अकेला मत छोड़ना।"
"जी अप्पा, अगर आप कहीं जा रहे हैं तो कम से कम मुझे बता दीजिएगा।" बाबू के ये शब्द सुनकर माहौल थोड़ा हल्का हो गया। "बाबू, तुम तो अच्छे बच्चे हो! तुम्हें अपने बच्चे के लिए यहीं रहना होगा। मैं बूढ़ी हो रही हूँ और मेरी डायबिटीज़ की हालत बिगड़ती जा रही है।" गरगर ने कहा।
मानो इतना ही काफी नहीं था, रामजी के भाई लक्ष्मण भी चले गए।
वीरवनल्लूर में लक्ष्मण बिना किसी को बताए रात में फिल्म देखने गए। फिल्म देखने के बाद, उन्हें रात के दो बजे खेतों से होकर गुजरना पड़ा। उनके सामने एक पेड़ की टहनी तेज़ी से हिल रही थी, जो अचानक टूट गई। उसे भूत समझकर लक्ष्मण बुरी तरह कांपने लगे और अपना मानसिक संतुलन खो बैठे। लगभग दो हफ्तों तक उन्हें कुछ भी याद नहीं रहा। अब परिवार को लक्ष्मण की देखभाल करनी पड़ी और दो हफ्तों के भीतर वह सामान्य हो गए। लोग उनके पीठ पीछे उनका मज़ाक उड़ाते थे और कहते थे, "अरे, कितना अजीब परिवार है! एक-एक करके सब पागल हो रहे हैं!"

इसलिए, गर्गर ने अपने दोनों बेटों को नियमित रूप से संध्यावंदनम करने के लिए बाध्य किया और महादेवशास्त्री से शाम को ललिता सहस्रनाम का पाठ करने का अनुरोध किया। दुर्गा मंत्र का जाप पंद्रह दिनों में एक बार किया जाता था और उनकी सुरक्षा के लिए उनकी कलाई पर पवित्र धागे बांधे जाते थे। निरंतर जाप के कारण, बाबू को बहुत कम उम्र में ही कई श्लोक याद हो गए थे। जब भी बाबू श्लोकों को याद रखने और उनका जाप करने की अपनी क्षमता प्रदर्शित करते थे, तो उनके दादा-दादी उन्हें प्यार से गले लगाते और चूमते थे।

अगले साढ़े तीन वर्षों के दौरान, रामजी के दो और बच्चे हुए। उनके नाम वेंकटचलम और हरिहरन रखे गए। परिवार के दादाजी ही इन तीनों बच्चों की स्मृति शक्ति और रामायण तथा अन्य संस्कृत श्लोकों के पाठ करने की क्षमता के लिए पूरी तरह से जिम्मेदार थे।

.

(बाबू के दादा-दादी, छोटे रामजी के साथ--यानी बाबू के) पिता)

अध्याय 8

ईश्वर में आस्था शक्ति प्रदान करती है

बाबू के पाँच साल का होने तक, हर दिन मंत्रोच्चार और धार्मिक अनुष्ठानों की दिनचर्या में बीतता था। उसके पिता सुबह कॉफी पीते और साइकिल से खेतों में जाते। लगभग दस बजे तक घर लौटने तक, तीनों भाई कंचे, किटीपुल और लट्टू खेलते थे। कुछ दोस्त भी लट्टू खेलने में शामिल हो जाते थे, जहाँ कई बार बाबू का लट्टू

रॉकेट की तरह उड़ता और दूसरे लट्टू को दो टुकड़ों में तोड़ देता था। जीत की खुशी और हँसी की आवाज़ पूरे मोहल्ले में गूँज उठती थी।
“अरे! देखो बाबू, जो इतना दुबला-पतला है, उसमें हमारे लट्टू तोड़ने की ताकत कैसे है!” बाकी बच्चे उसे चिढ़ाते थे। जिस बच्चे का लट्टू टूट जाता था, वह ज़ोर-ज़ोर से रोता था और बाकी बच्चे उसे दिलासा देते थे।
घटना के कुछ दिनों बाद, बाबू अपने दादाजी से कुछ पैसे मांगता था। वह उन्हें पैसे देकर नुकसान की भरपाई करता था। बाबू के लिए गरगर से पैसे लेना इतना आसान नहीं था। वह पैसों के बदले तिरुक्कुरल की कुछ पंक्तियाँ या भारती के कुछ गीत सीखने का सौदा करता था। उसकी याददाश्त बहुत अच्छी थी।
बच्चों का आनंद केवल पिता के घर लौटने तक ही सीमित था। जैसे ही उनकी साइकिल की घंटी बजी, सभी बच्चे गौरैयों की तरह अपना सामान लेकर भाग निकले। उस इलाके में फिर कोई हलचल नहीं दिखाई देती थी।
मुख्य कारण डर था। अगर पकड़ा गया तो उसकी आवाज़ गली भर गूंज उठेगी। "बच्चे साफ-सुथरे रहने, दादाजी के सामने बैठने और पढ़ाई पर ध्यान देने के बजाय कीचड़ में क्यों खेल रहे हैं?"
लेकिन बच्चे खेलना कभी बंद नहीं करते थे। उन्हें अपने दादाजी का सहारा प्राप्त था। गरगर अपने दूसरे बेटे लक्ष्मण को रामजी पर नज़र रखने और उन्हें सतर्क करने के लिए कहते थे। लक्ष्मण कुर्सी पर बैठकर खेल का आनंद लेते थे। अगर वे आपस में लड़ते, तो वह मध्यस्थ बनकर उनका झगड़ा सुलझाते थे। उन्हें ऐसा करने में खुशी मिलती थी।
रामजी के आने पर बच्चे अपने तौलिए समेटकर पीछे के दरवाजे से नदी की ओर चल पड़ते थे। नदी तक केवल तीस कदम ही चलना था। यह दूरी एक फर्लांग थी, और बड़ों के लिए पत्थर की सीढ़ियों पर चलना मुश्किल था। बच्चे सीढ़ियाँ ऐसे कूदते थे मानो उनके पैर रुई के बने हों। पानी में बिताया गया समय उनके लिए एक और खूबसूरत खेल था। बच्चे अपने पिता के आने तक एक-दूसरे पर पानी उछालते हुए खूब मजे करते थे। फिर वे अपनी गतिविधियाँ रोककर नदी के किनारे चढ़ जाते, पानी पोंछते और ऐसे दिखाते जैसे कुछ हुआ ही न हो।

उनकी माँ मुस्कुराते हुए उनसे पूछती कि वे कैसे बच निकले।
पिता का गुस्सा। बच्चे खुशी से मुस्कुराकर उन्हें जवाब देते, हालाँकि उनके लिए हर रोज एक ही सवाल पूछना एक आदत बन चुकी थी। इसी समय, गांधीमथी अम्माल द्वारा इडली, डोसा या प्याज उपमा का गरमा गरम टिफिन तैयार किया जाता था। लक्ष्मी अम्माल अन्नपूर्णिश्लोक का पाठ किए बिना बच्चों को भोजन को छूने नहीं देती थीं। बच्चे तुरंत अन्नपूर्णिश्लोक का पाठ करते और उतनी ही तेज़ी से थालियाँ भी खाली कर देते।
जब बाबू छठी कक्षा में थे, तब धनंजयन नामक एक शिक्षक ने उन्हें वर्णमाला से परिचित कराया। उन्होंने चावल की थाली पर तमिल में वर्णमाला लिखते समय बाबू का हाथ पकड़कर उनका मार्गदर्शन किया और उन्हें पवित्र मंत्रों के साथ जोर से उच्चारण करने को कहा।

यह एक छोटा स्कूल था जिसमें केवल पाँच कक्षाएँ थीं। वहाँ केवल दो ही छात्र थे।
शिक्षकों की संख्या कम थी। छात्रों की संख्या भी बहुत कम थी। लगभग पचास ही छात्र थे। स्कूल का संचालन कुछ धनी लोगों द्वारा दिए गए दान और पंचायत द्वारा आवंटित सीमित धनराशि से होता था।
रामलिंगम पिल्लई नाम का एक जमींदार था जो शिक्षकों को चावल और पैसे देता था। अगर कोई अतिरिक्त खर्च होता, तो गरगर हमेशा मदद के लिए मौजूद रहता था। इसलिए बाबू का हमेशा विशेष ध्यान रखा जाता था। शिक्षक धैर्यपूर्वक उसकी बातें सुनते और उसके सवालों के जवाब देते थे। बाबू गणित का अभ्यास करने में बहुत उत्साही था। उसने पूरे साल का पाठ्यक्रम तीन महीने में ही पूरा कर लिया और शिक्षक से और किताबें मांगीं। गरगर बहुत खुश हुआ और उसने बाबू को खूब प्यार से चूमा। बाबू ने इस बात का बखान अपने दोस्तों और महादेवशास्त्रीगल के सामने किया।
शास्त्रीगल ने गरगर को उनकी उस भविष्यवाणी की याद दिलाई कि बाबू एक पंडित बनेंगे। गरगर ने बच्चों को और अधिक श्लोक सीखने और शास्त्र पढ़ने के लिए प्रोत्साहित किया। इस प्रकार, आध्यात्मिक आस्था के साथ-साथ उनका ज्ञान भी बढ़ा। इसमें और जोड़ने के लिए, उन्होंने तमिल और अंग्रेजी भाषाओं में कई कहानियों की किताबें खरीदीं, जैसे गुलीवर की यात्रा, पंचतंत्र की कहानियां, टॉम सॉयर और अन्य प्रसिद्ध पुस्तकें। उन्होंने बच्चों को कहानियां पढ़कर सुनाईं और उन्हें रोचक तरीके से समझाया, बीच-बीच में रहस्य बनाए रखा। रामजी बच्चों को आश्चर्य से देखते रहे। उन्हें इस बात का दुख हुआ कि वे अपने बचपन में अपने बच्चों की तरह नहीं थे। उन्होंने मन ही मन सोचा कि उन्हें अपनी शिक्षा को और गंभीरता से लेना चाहिए था। चूंकि बाबू अन्य बच्चों की तुलना में जल्दी सीखता था, इसलिए उसने दूसरी कक्षा छोड़ दी।
बाबू प्रथम कक्षा में था और उसे तीसरी कक्षा में पदोन्नत कर दिया गया। गोपाल नाम का एक सहपाठी उससे ईर्ष्या करता था और एक दिन उससे झगड़ा करने लगा। बाबू ने शिक्षक को शिकायत करने की धमकी दी। गुस्से में आकर गोपाल ने बाबू को उठाकर नीचे पटक दिया और उसकी नाक पर घूंसा मारा। उसकी नाक की एक नाजुक हड्डी टूट गई और खून बहने लगा। एक वरिष्ठ छात्र ने बाबू को उठाया और उसे घर पहुँचाने में मदद की। उसने घटना की जानकारी परिवार को दी। हालांकि गरगर गोपाल के घर गई और उन्हें अंजाम भुगतने की चेतावनी दी, फिर भी पूरा परिवार दुखी था। गोपाल को उसके पिता ने कड़ी सजा दी।

बाबू हमेशा ईमानदार और आज्ञाकारी था। उसके इस स्वभाव का कारण यह था कि...

वर्तमान पीड़ा या चोट अज्ञात थी। लक्ष्मी अम्माल और सोर्नम ने आह भरी। उनकी चिंता का उत्तर रात लगभग एक बजे मिला।
बाबू का भाई वेंकट रात के दो बजे नींद में चीख उठा। वह झटके से जागा और बुरी तरह कांप रहा था, मानो उसे बुखार हो गया हो। वह बार-बार बता रहा था कि उसने एक सफेद बादल जैसी आकृति को अपने पैर की उंगलियों को ऊपर उठाते हुए और हंसते हुए तैरते हुए दूर जाते देखा।

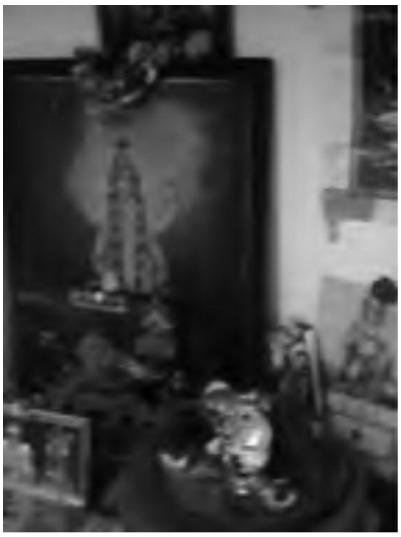

(Photo of Lord Mahavishnu and

सालग्राम पूजा बॉक्स)

अध्याय-9

मेरा थ्रेड

समारोह

“क्या यह सपना नहीं है? मुझे ठीक से जवाब दो। हम सब डरे हुए हैं। फिर से बताओ।” गर्गर ने वेंकट को ज़ोर से हिलाया।

“जी दादाजी! मैं गहरी नींद में सो रहा था जब मुझे यह महसूस हुआ।” कोई चीज़ मेरे पैर की उंगलियों को छू रही थी और ज़ोर-ज़ोर से हंस रही थी। वह एक छोटी सी सफेद आकृति थी, जो लड़के जैसी दिखती थी, लेकिन उसके पैर नहीं थे। वह मुझसे बात कर रही थी—‘डरो मत। मैं हमेशा इस घर के पीछे वाले आंगन में तुम सबकी रक्षा करता हूं। तुम्हारे दादाजी ने मुझे बहुत दिनों से खाना नहीं खिलाया है। क्या मुझे भूख नहीं लगेगी? अपने दादाजी से कहो कि वे मुझे हर महीने खाना खिलाएं। वे समझ जाएंगे। मैं अब चलता हूं।’ इतना कहकर वह आकृति हवा में गायब हो गई। “यह कैसे संभव है, दादाजी?” वेंकट ने उत्सुकता से पूछा।

“अरे! वो तो वेल्लैयान था। वो आदिमूला पेरुमल का सहायक है।”

आप लोग उसे देख पाए, यह आपका सौभाग्य है। डरिए मत। अभी सुबह के सिर्फ तीन बजे हैं। आप सब सो जाइए। वेल्लैयान इस परिवार की रखवाली करता है। हम उसे बड़े-बड़े भोज खिलाते थे, लेकिन कुछ महीनों से हम उसे भूल गए हैं। मुझे खेद है... वह हमें याद दिलाने आया है। मैं संबू अय्यर से कल हमारे यहाँ आने

और इस समस्या का समाधान निकालने के लिए कहूँगा।" इतना कहकर उन्होंने बत्तियाँ बंद कर दीं और सबको सोने के लिए भेज दिया।

अगले दिन गुरुवार था। सांबु अय्यर को तलब किया गया।

पिछली रात उनसे मिलने आए व्यक्ति के बारे में कोई जानकारी दिए बिना, संबू अय्यर सुबह चावल से भरे नारियल और आम के पत्तों से सजे कलश के सामने बैठ गए। उन्होंने कुछ छोटे-छोटे शंख ज़मीन पर लुढ़काए और नारियल व आम के पत्ते हटा दिए। उन्होंने अपनी उंगलियाँ शंखों पर फिराईं और कुछ बोले।

"जो व्यक्ति आया वह वेल्लैयान था, आपका रक्षक देवता। वह एक

हमारे आदिमूला स्वामी के समर्पित सेवक। क्या उनकी देखभाल करना आपका कर्तव्य नहीं है? पिछली बार जब मैं आया था, तब मैंने पिछवाड़े में पीले रंग के पत्थर पर उनका आह्वान किया था। हर महीने बिना चूके उन्हें भोज अवश्य अर्पित करें।" सांबु अय्यर ने ठीक वही शब्द दोहराए जो वेल्लैयान ने वेंकट से कहे थे। सभी आश्चर्यचकित रह गए।

जी स्वामी जी! आपने जो कहा वह सही था। आप एक धर्मनिष्ठ व्यक्ति हैं।

और हम आपसे कुछ भी नहीं छिपा सकते। वेल्लैयान ने ठीक वही शब्द कहे जो आपने कहे थे। है ना, वेंकट?" गरगर वेंकट की ओर मुड़े, जिन्होंने हाँ में जवाब दिया। संबू अय्यर ने गरगर द्वारा दी गई दक्षिणा या धन लिया और उनसे बच्चों पर पड़ने वाली बुरी नज़र को दूर करने के लिए हर महीने एक अनुष्ठान करने को कहा। उन्होंने धीरे से कहा कि बच्चों को इतनी छोटी मूर्तियों के दर्शन कराना ठीक नहीं है। उन्होंने स्वयं आम के पत्ते पर कपूर जलाकर सभी नकारात्मक शक्तियों को दूर करने का अनुष्ठान किया। उन्होंने एक विशेष मंत्र का जाप किया और वेंकट को भविष्य में सावधान रहने को कहा। उस समय, उनकी बातों को गंभीरता से नहीं लिया गया। अय्यर ने भी उन्हें डराने से बचने के लिए इस पर ज़ोर नहीं दिया।

उनके शब्दों का प्रभाव तब पड़ा जब हम बदल गए।

बड़ों की बात है। हमें बाद में समझ आया। यह सन् 1968 की बात है। वेंकट ने एस.एस.एल.सी. से आगे पढ़ाई नहीं की थी, लेकिन वह बहुत धार्मिक और अपने रीति-रिवाजों का पालन करने वाला युवक था। वह चेन्नई की एक बीमा कंपनी में काम करता था। कुछ गलत संगतियों के कारण, ईश्वर में आस्था होने के बावजूद, वह एक प्लानचेट या ओइजा बोर्ड के जाल में फंस गया और गुमराह हो गया। उसका जीवन बुरी तरह भटक गया। एस.एस.एल.सी. के बाद, वह पढ़ाई पर ध्यान नहीं दे पा रहा था। पिता के गुस्से के डर से वह घर से भाग गया। चार साल तक उसका कोई पता नहीं चला। आगे क्या हुआ, यह आगामी अध्यायों में बताया जाएगा।

चलिए अब वर्तमान कहानी पर लौटते हैं। एक शुभ दिन पर, एक वेल्लैयान के लिए भोज का आयोजन किया गया। लगभग पचास लोगों को भोजन परोसा गया। चावल, हल्दी और सिक्के बांटे गए। अचानक वेंकट चिल्लाया, "दादा! देखो! वेल्लैयान बहुत खुश हैं और कह रहे हैं कि वे संतुष्ट हैं।" गांधीमथी और गरगर ने उसे और कुछ बोलने से रोका और उसे अंदर ले गईं।

एक साल तक सब कुछ ठीक-ठाक चलता रहा। हम पहले की तरह ही शरारती थे।

लेकिन पिता के सामने हम अच्छा व्यवहार करते थे। हम अपनी पढ़ाई पर पूरा ध्यान देते थे। परिवार में किसी ने भी हमारी शरारतों की शिकायत पिता से नहीं की, क्योंकि सब डरते थे कि कहीं वो हम सबको पीट न दें।
अथाझनल्लूर का स्कूल उतना अच्छा नहीं था। बच्चों को 'अंबासमुद्रम तीर्थपति स्कूल' नाम के एक बेहतर स्कूल में दाखिला दिलाया गया। हम दही-चावल का दोपहर का खाना पैक करके नदी पार करते, अग्रहारम के साथुपट्टू गाँव से होते हुए तीन मील पैदल चलकर स्कूल पहुँचे।
स्कूल में दोपहर का भोजन करने के बाद, हम सभी ने एक बरगद के पेड़ के नीचे झपकी ली।
एक-दूसरे की गोद में। पैंतालीस मिनट बाद जब घंटी बजी, तो हम पत्थर से घायल चिड़ियों की तरह इधर-उधर बिखर गए। एक साल तक यही दिनचर्या चलती रही। बाढ़ के दौरान नदी पार करना हमारे लिए मुश्किल हो जाता था। इसलिए हम मरिमुथु द्वारा चलाई जाने वाली एक छोटी गोलाकार नाव में जाते थे। मैं निडर था और दूसरे बच्चों को भी अपना डर त्यागने और आसपास की सुंदरता, उग्र रूप से बहती नदी की सुंदरता में, गांधीमथी अम्माल के हाथ से बने मुरुक्कू की छवि में मग्न होने के लिए प्रोत्साहित करता था।
हमारे दादाजी जानते थे कि नाव में यात्रा करना जोखिम भरा होगा।
अगर भयंकर बाढ़ आ जाती या लगातार छुट्टियाँ लेने से हमारी कक्षाएँ छूट जातीं, तो हमारी माँ हमारी सुरक्षा को लेकर चिंतित हो जातीं। हमारे पिता उनकी चिंताओं को यह कहकर नज़रअंदाज़ कर देते कि यह अनुभव हमें बाहर की कठिन दुनिया के लिए तैयार करेगा। लेकिन, गरगर चुप नहीं बैठे रहे। उन्होंने वीरवनल्लूर के हिंदू हाई स्कूल में हमारा दाखिला करवा दिया। स्कूल पूर्व दिशा में खेतों के पार पैदल चलकर मात्र ढाई मील की दूरी पर था और वहाँ कोई और परेशानी नहीं थी।
अगले वर्ष, मेरी जनेऊ संस्कार की रस्म होने वाली थी।
हमारे घर में धूमधाम से बाल कटवाने का कार्यक्रम चल रहा था। मैं बाल कटवाने पर अड़ी हुई थी और वादा किया कि अगर मुझे बख्श दिया जाए तो मैं नियमित रूप से रस्में निभाऊंगी। लेकिन जब मेरे पिता दरवाजे के पास खड़े हुए तो मेरी बात बेअसर हो गई। उन्होंने आंखें घुमाईं और मुझे पीटने के लिए आगे बढ़े। लेकिन मेरे दादाजी और मां ने मेरी रक्षा की। मां ने वादा किया कि अगर मैं एक दिन सहयोग करूंगी तो वह मुझे अप्पम (मीठा पकवान) देंगी। मैं खुश हो गई और समारोह के दौरान पारंपरिक बाल कटवाने में सहयोग के बदले दो मुट्ठी अप्पम मांगे।
पूरा माहौल हंसी के ठहाकों में बदल गया।
आस-पास।

अध्याय-10

अजीब सपना

वह शुभ दिन आ गया। मैं केवल नौ वर्ष का था। जनेऊ संस्कार लगातार दो दिनों तक मनाया गया।
राखीसमुथुदेव ने घर और आसपास के क्षेत्रों को सजाने में बहुत मेहनत की। पास के गाँव 'कलक्कड़' की एक

अत्यंत सम्मानित और प्रसिद्ध मंडली ने नादस्वरम नामक वाद्य यंत्र बजाया। आसपास के गाँवों से लोग इस दिव्य वादन को सुनने के लिए उमड़ पड़े। बड़ी संख्या में एकत्रित बच्चों को मिठाई और नमकीन बांटे गए। हमारी परंपरा के अनुसार, नांधी नामक एक अनुष्ठान होता है।

जनेऊ संस्कार से एक दिन पहले यह रस्म निभाई जाती है। नांधी से एक दिन पहले मेरे भाई वेंकट ने मुझसे पूछा, "अन्ना! हमारी दादी माँ ने इस अवसर के लिए कुछ मिठाई और नमकीन बनाए हैं। उन्होंने सारे डिब्बे कमरे में बंद कर दिए हैं। उन्होंने कहा कि वे इन्हें समारोह समाप्त होने के बाद ही देंगी। क्या तुम उनसे कुछ देने के लिए कह सकती हो?" मैं सीधे अपने दादाजी के पास गई, लेकिन उन्होंने हमारी शारीरिक मुद्रा को देखकर संदेह भरी निगाहों से हमसे सवाल किए।

"मेरे प्यारे पोतों, तुम सब ऐसे क्यों चल रहे हो जैसे कोई सैन्य परेड हो? क्या इसलिए कि तुम्हारे पिता यहाँ नहीं हैं?"

"दादाजी! दादाजी! मैंने आपको पहले ही बताया था कि मैं अपने बाल तभी कटवाऊंगी जब आप मुझे कुछ खाने को देंगे। गांधीमथी पट्टी हमें कुछ खाने को नहीं दे रही हैं। उन्होंने भंडारगृह में ताला लगा दिया है। क्या आप उन्हें कुछ नाश्ता या मुरुक्कू देने का आदेश दे सकते हैं? अगर वह आपकी बात नहीं मानती हैं, तो कृपया उन्हें निकाल दीजिए। ठीक है?"

गर्गर को यह अनुरोध सुनकर हंसी आ गई। उन्होंने गांधीमथी को बुलाने को कहा। गांधीमथी कारण समझ गईं, फिर भी गर्गर से मिलने को तैयार हो गईं। गर्गर ने अपना चेहरा और लहजा गंभीर बनाए रखा। "पट्टी, अगर बच्चे नमकीन मांगें, तो क्या तुम उन्हें कुछ नहीं दे सकतीं? ये तो भगवान को चढ़ाने के लिए नहीं हैं। हमारे छोटे बच्चों का पेट भरना सबसे ज़रूरी है। उन्हें कुछ दे दो।"

गांधीमथी ने सिर हिलाया (खुशी के मारे नहीं!) और हमें उतनी मिठाई (अप्पम) और नमकीन (मुरुक्कू) दिए, जितना हम अपने छोटे हाथों में पकड़ सकते थे। हमने और नहीं माँगा, कहीं ऐसा न हो कि पिताजी के आने पर हमारी मेहनत बेकार हो जाए। बाद में जब हमारी माँ को इस बात का पता चला, तो वह मन ही मन मुस्कुराईं और अपने बच्चों की चतुराई पर खुश हुईं।

उपनयनम (पूनूल) समारोह सुचारू रूप से संपन्न हुआ और सभी लोग इतने भव्य ढंग से संपन्न होने को देखकर आश्चर्यचकित रह गए। मुझे सभी ने आशीर्वाद दिया और खूब प्यार किया, यहाँ तक कि कुछ लड़कियों ने मेरे गालों पर चुंबन भी किए। मैं शरमा गई, लेकिन साथ ही लंगोटी पहनकर अनुष्ठान में खड़े होने पर शर्म भी महसूस हुई। मेरी आँखों में आंसू आ गए थे, लेकिन मेरी माँ ने मेरी आँखें पोंछकर मुझे शांत किया। देखो! मुझे शक्तिशाली गायत्री मंत्र प्राप्त हुआ। सुब्रमण्य शास्त्रीगल ने मंत्र की शक्तियों के बारे में विस्तार से बताया। "यह मंत्र उस बालक के लिए तीसरी आँख के समान है जिसे इसका ज्ञान प्राप्त होता है। बाबू! यदि इसका नियमित अभ्यास किया जाए, तो यह सौभाग्य, सुरक्षा प्रदान करता है और शत्रुओं को उससे दूर रखता है।"

उस छोटी उम्र में ये शब्द मेरे हृदय में गहराई तक उतर गए और मेरे पूरे शरीर में एक झनझनाहट सी दौड़ गई। मुझे लगा कि शास्त्रीजी की बात मैं आंशिक रूप से समझ गया हूँ, लेकिन मैंने ठान लिया कि जब वे कुछ दिनों के लिए मुझे संध्यावन्धन जप सिखाने घर आएंगे, तो मैं उनसे मंत्र और उसके अनुष्ठानों के बारे में विस्तार से पूछूंगा। मुझे अन्य बच्चों की तुलना में यह जानकर धन्य और सौभाग्यशाली महसूस हुआ कि उपनयनम आत्मा के दूसरे जन्म का प्रतीक है। मैं सिर ऊंचा करके खड़ा था, और खुशी के आँसू पोंछ रहा था जो मेरी आँखों के किनारों पर उमड़ आए थे।

अगले आठ दिनों तक शास्त्रीगल नियमित रूप से आते रहे। उन्होंने मंत्र का अर्थ सरल शब्दों में समझाया और मुझे जपने की विधि सिखाई। अंतिम दिन उन्होंने मुझसे कहा, “बाबू! तुम्हारी कुंडली कहती है कि तुम बड़े होकर महान व्यक्ति बनोगे और दुनिया भर में प्रवचन दोगे। लेकिन यह सब तभी होगा जब तुम नियमित रूप से साधना करोगे। यह बात कभी मत भूलना।”

अगले कुछ दिनों में मैंने अपने दादाजी से कई सवाल पूछे और मुझे उनके सुंदर जवाब मिले। ग्यारहवें दिन जब मैं प्राणायाम कर रहा था, तो मेरे शरीर में एक दिव्य ऊर्जा का संचार हुआ। मेरी सारी नसें कांप उठीं; मैं हैरान था, लेकिन साथ ही साथ बेहद खुश भी था। इसी सोच के साथ मैं गहरी नींद में सो गया।

उसी समय, अचानक मैंने एक बूढ़े ब्राह्मण पुरुष को देखा जो अत्यंत ज्ञानी प्रतीत हो रहे थे। उन्होंने सफेद धोती पहनी हुई थी और पद्मासन में बैठे थे। उनकी आंखें आधी खुली हुई थीं। उनके सिर के आगे के बाल थोड़े कम थे और सफेद मूंछें थीं। मैं उन्हें ध्यान से देख रहा था और वे दिव्य पुरुष भी मुझे देख रहे थे, मुस्कुरा रहे थे और अपनी मूंछें सहला रहे थे। मैं सोचने लगा कि वे कौन हो सकते हैं और जागने के बाद भी काफी देर तक मैं एक आनंदमय अवस्था में डूबा रहा।

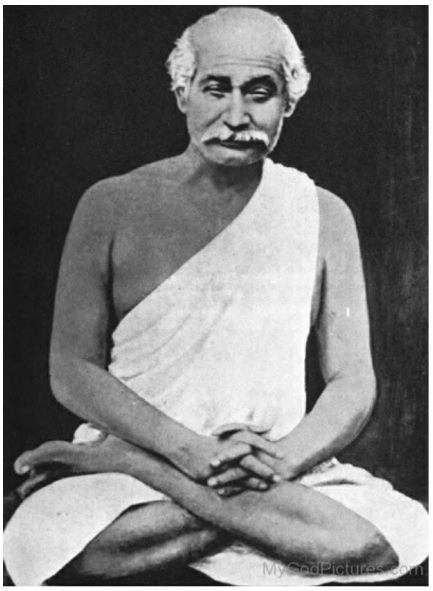

मैंने इस संत को पद्मासन में बैठे देखा।

सही मुद्रा! मेरी उम्र में (-9)

अध्याय-11

ग्राम उत्सव

जब भी मैं एकाग्र मन से गायत्री जप कर रहा होता था, तब महान पुरुष मेरे आंतरिक दर्शन में प्रकट होते थे। वे बोलते नहीं थे, बल्कि मेरी आँखों में गहराई से देखते थे, जिससे मुझे अपार आनंद मिलता था। लेकिन मुझे दुख होता था क्योंकि वे एक शब्द भी नहीं बोलते थे।

तो मैंने अपने प्रिय गुरु महादेव शास्त्रीगल से अपने अनुभव के बारे में पूछा। उन्होंने कहा, "अरे बाबू! तुम बहुत भाग्यशाली हो कि तुम्हें एक महान गुरु का आशीर्वाद प्राप्त है। वे शायद एक महान संत हैं! हो सकता है कि वे तुम्हारे पिछले जन्म से ही तुम्हारा अनुसरण कर रहे हों। जब भी वे तुम्हारे दर्शन करें, उन्हें मन ही मन प्रणाम करो और समय आने पर, जब तुम्हारा अभ्यास और परिपक्वता बढ़ेगी, तो वे स्वयं को प्रकट करेंगे। निश्चिंत रहो! उस समय तक तुम्हें धैर्य रखना होगा।"

उस दिन मैंने उनसे पुनर्जन्म और कर्म के सिद्धांत के बारे में सीखा। उनके शब्दों ने मुझे चकित कर दिया और मेरे हृदय में गहराई तक उतर गए।

जब मैंने यही सवाल अपने दादाजी से पूछे, तो उन्होंने भी अपनी प्रतिक्रिया व्यक्त की।

इसी तरह की व्याख्याएँ देते हुए उन्होंने मुझे आगे सलाह दी, "बाबू! किसी भी हालत में अपना मंत्र जपना मत छोड़ना। अगर उस महान योगी से कुछ भी संदेश मिले तो मुझे जरूर बताना। मैं उसे स्पष्ट कर दूंगा।"

इस दिव्य अनुभव के बाद, मैंने अपने साथ आठ मील की दूरी तय की।

मेरे भाई हिंदू हाई स्कूल में पढ़ते थे। मैं उस समय आठवीं कक्षा में पढ़ रहा था। रोज़ाना स्कूल जाना और रात में तेज़ रोशनी वाली पेट्रोमैक्स लाइट के सामने बैठकर पढ़ाई करना मुझे थका देता था। पिताजी के सख्त कार्यक्रम के कारण हमें सुबह 5:30 बजे उठना पड़ता था, पाठों का पुनरावलोकन करना पड़ता था और बचा हुआ गृहकार्य करना पड़ता था।

तामिरभरानी नदी में स्नान करने के बाद, हम नाश्ता करते और सुबह 8 बजे तक स्कूल के लिए निकल जाते। हमारे पिताजी अक्सर हमारा मज़ाक उड़ाते थे। "अरे बच्चों! तुम लोग अपना लंच बॉक्स लाना तो कभी नहीं भूलते, लेकिन क्या तुमने अपनी सारी किताबें समय सारणी के अनुसार रखी हैं?" उनका व्यंग्य हमें किसी अनुभवी गेंदबाज़ द्वारा फेंकी गई भारी गेंद की तरह चुभता था। अपनी नाराज़गी को दबाते हुए, हम जवाब देते, "जी पिताजी!" और उनकी पकड़ से राहत महसूस करते हुए बाहर भाग जाते।

हरे-भरे धान के खेतों से गुज़रते हुए हम चारों ओर के खूबसूरत नज़ारे का आनंद लेते थे। छोटे-छोटे कीड़े, मैनाओं का नृत्य और गौरैयों का झुंड जो इन कीड़ों और दानों को खाने के लिए इकट्ठा होता था, हमें बहुत लुभाता था। कभी-कभी खेतों में काम करने वाली औरतें हमारा मज़ाक उड़ाती थीं।

“हाय पार्वती! इन ब्राह्मण बच्चों को देखो! ये कितने होशियार हैं और स्कूल जाने के लिए कितने उत्सुक हैं। हमारे अपने बच्चों को देखो! ये तो बड़े ही मूर्ख हैं और दो-तीन साल तक एक ही कक्षा में बैठे रहते हैं। हमारे बच्चे तो बेंच रगड़ने के ही लायक हैं!” हर बार इन टिप्पणियों के साथ एक आह भी निकलती थी।
लेकिन मेरा भाई हरि उन पर ज़ोर से हँसता और कहता, "तो
क्या?... स्कूल की बेंचें साफ हो जाएंगी और उनकी पैंट भी फट जाएगी। मजदूर हमें मारने की कोशिश करते, लेकिन हम उनकी पहुंच से बहुत दूर भाग जाते। हालांकि हमारे दिन इसी तरह खुशी-खुशी बीत रहे थे, लेकिन एक दिन हमने अपने दादाजी से शिकायत की।
“दादाजी! हम रोज़ आठ मील पैदल नहीं चल सकते। जब तक हम पढ़ने के लिए किताबें खोलते हैं, थकान के मारे नींद हमें घेर लेती है। पिताजी के गुस्से के डर से हम जागते रहने की कोशिश तो करते हैं, पर पढ़ने का दिखावा करते हैं, पर ध्यान नहीं लगता। हमें पता है कि आपको अच्छी पेंशन मिलती है। हमारे दोस्त रंगन की तरह आप भी एक बैलगाड़ी क्यों नहीं खरीद लेते? हम आपको भरोसा दिलाते हैं कि हम सभी विषयों में प्रथम श्रेणी लाएंगे। मैं अपने भाइयों को भी पढ़ाई में मदद करूंगा। कृपया हमारे पिताजी को मना लीजिए, दादाजी!”
मेरे वाक्य पूरा होने से पहले ही हमारे पिताजी वहाँ आ गए। “अरे बच्चों! दादाजी से क्या माँग रहे हो?” उन्होंने कड़े स्वर में पूछा। हालाँकि उनके अचानक आने से हमारे छोटे-छोटे शरीर काँप उठे, फिर भी हमारे पिताजी हमारी मदद के लिए आगे आए।
“रामजी! आप अपने बच्चों के साथ हमेशा इतने कठोर क्यों रहते हैं? वे अपना दुख हमारे सिवा किसके साथ बाँटेंगे? वे एक बैलगाड़ी माँग रहे थे। आपको पैसे खर्च करने की ज़रूरत नहीं है। मैं अपनी पेंशन से दे दूँगा। अपने चाचा सुब्बैया से बात कीजिए, उन्होंने अपने पोते शंकरन के लिए एक गाड़ी खरीदी है। बाबू ने भरोसा दिलाया है कि शंकरन अच्छे नंबर लाएगा और अपने भाइयों की पढ़ाई में भी मदद करेगा। जैसा मैं कहूँ वैसा कीजिए। ठीक है?”
हमारे पिता उनके शब्दों का उल्लंघन नहीं कर सके। वे एक ठेला खरीदने के लिए सहमत हो गए, लेकिन बाद में मेरी माँ के पास गए। “सोरनम, तुम्हारा बेटा बाबू बहुत चालाक है। वह अच्छी तरह जानता है कि मेरे माध्यम से उसकी ठेला खरीदने की माँग पूरी नहीं होगी। इसलिए उसने दादाजी को मनाने के लिए इस तरह से बात की है।”
“अरे! क्या सच में? मुझे तो पता ही नहीं था।” हमारी माँ ने ऐसे जवाब दिया जैसे वह
घर में क्या हो रहा था, इस बारे में उन्हें कोई जानकारी नहीं थी। लेकिन बाद में उन्होंने हमारी समझदारी की तारीफ की। यह सच है! एक माँ हर परिस्थिति में हमेशा माँ ही रहती है।
लेकिन बैलगाड़ी खरीदने का सपना हमारे लिए हमेशा एक सपना ही बना रहा। तीन दिन के भीतर ही, हमारे पिताजी को भारी सिफारिश के चलते तूतीकोरिन स्थित सेंट्रल बैंक ऑफ इंडिया में गोदाम की नौकरी मिल गई। हमारे दूर के रिश्तेदार श्री सीताराम अय्यर के ज़रिए उनके रहने का इंतज़ाम पास ही के एक कमरे में हो

गया। हालांकि हम पिताजी के चंगुल से छुटकारा पाकर खुश थे, लेकिन बैलगाड़ी न मिलने से उतने ही दुखी भी थे। हमारी उदासी भांपकर हमारे दादाजी ने हमें खुश करने की कोशिश की।
“बच्चों, उदास मत हो! अगले महीने छुट्टियों के दौरान जब तुम्हारे पिताजी तीन दिन के लिए आएंगे, तो मैं यह सुनिश्चित कर दूंगी कि तुम्हें ठेला मिल जाए।”
इसी बीच, कृष्ण जयंती का वार्षिक उत्सव आने वाला था। यह उस गाँव का वार्षिक उत्सव था। सभी गलियों में उत्सव की धूम मची हुई थी। उस वर्ष भारी मात्रा में दान एकत्र किया गया था। मैंने उत्साहपूर्वक पूछा,
“दादाजी! क्या इस वर्ष भी उरियाडी उत्सव (डंडियों से घड़े पीटना), वझुक्कुमरम (तेल लगे पेड़ के ठूंठ पर चढ़कर ऊपर बंधे उपहार को पकड़ने के लिए बलवान पुरुषों की प्रतियोगिता) और चोक्कापनाई (ताड़ की अग्नि) का आयोजन होगा? कृपया उत्सव के बारे में विस्तार से बताइए।” हमारे दादाजी ने तुरंत बड़े चाव से इसका वर्णन करना शुरू कर दिया।
“मेरे प्यारे बच्चों! हमारी हिंदू संस्कृति जाति या धर्म की परवाह किए बिना, सभी त्योहारों को एक साथ मनाने में विश्वास रखती है। यद्यपि कुछ ग्रामीण आजीविका के लिए दूसरे स्थानों पर पलायन करते हैं, फिर भी उनकी आत्मा इस गाँव की मिट्टी से जुड़ी हुई है। मिट्टी की महक उन्हें दिव्य आनंद देती है। जब मैं छोटी थी, जनवरी के महीने में, जिसे तमिल में 'थाई' महीना कहा जाता है, हर साल देवी कोदैविझा का त्योहार मनाया जाता था। यद्यपि अब हम बड़े हो गए हैं, फिर भी मुझे कई लड़कियों का 'करागट्टम' (सिर पर घड़े रखकर नृत्य करना) आज भी स्पष्ट रूप से याद है।”
नृत्यों के लिए कोई विशेष मंच तैयार नहीं किया गया है। बीच में
ज़मीन पर, कई लंबी बांस की छड़ियों को थोड़ी-थोड़ी दूरी पर बड़ी रस्सियों से एक चौकोर आकार में बांधा जाएगा। रंगीन कागज़ से ढकी ट्यूबलाइटें खंभों पर बांधी जाएंगी। तेज़ रोशनी के बीच करागट्टम कलाकार अपना प्रदर्शन करेंगे। लोग खंभों के आसपास, बाहर बैठकर प्रदर्शन देखेंगे। कुछ लड़कियां और लड़के नकली टट्टुओं पर सवार होंगे, जिनके सिर पर घड़े रखे होंगे। हर घड़े के ऊपर एक तोते की गुड़िया बंधी होगी। नाचते समय तोते अगल-बगल हिलते हुए दिखाई देंगे। हालांकि वे बिना किसी सहारे के जोश से गाते और नाचते हैं, फिर भी घड़े उनके सिर पर मजबूती से टिके रहेंगे, जो देखने में बेहद खूबसूरत लगेगा। इसके लिए गहन प्रशिक्षण और महारत की आवश्यकता होती है। डबल थविल, डबल नयनम और डमरू नृत्य भी होंगे। उनके गीतों के कई छिपे हुए अर्थ नर्तकों के बीच गूंजेंगे, जो युवा और वृद्ध दोनों में उत्साह भर देंगे। अभी आपको इसके बारे में जानने की ज़रूरत नहीं है। वहां कई चाय की दुकानें, छोटी-मोटी दुकानें और जुआ भी चल रहा होगा। पूरा वातावरण एक अलग ही ऊर्जा से भरा होगा।
मैंने अपने दादाजी की बात बीच में ही काट दी, जो अपने जवानी के दिनों को याद कर रहे थे।
“जी दादाजी! मुझे याद है पिछले साल जब कोट्टाई स्ट्रीट-मरियम्मन मंदिर में करागट्टम मनाया गया था, तब मैंने उसे देखा था। उस महिला ने बड़ी कुशलता से नृत्य किया और घड़ा गिरने नहीं दिया। सभी लोग बहुत खुश थे।”

हमारे दादाजी ने बोलना जारी रखा। “बहुत बढ़िया बाबू। अब आगे सुनो।”
वहाँ नींबू पानी, जूस, आइसक्रीम, अदरक के स्वाद वाले पेय और मुरुक्कू और मीठे फूले हुए चावल के गोले जैसी कई तरह की मिठाइयाँ और नमकीन सस्ते दामों पर बेचने वाले स्टॉल भी होंगे। मेरे जैसे बुजुर्ग लोग आसपास के छोटे बच्चों को उत्सवों का महत्व समझाएँगे। मानो इतना ही काफी नहीं, वहाँ आली की गुड़ियाएँ (पुरुष और महिला के साथ खोखली विशाल गुड़ियाएँ) हर जगह नाचती-गाती और पैसे माँगती नज़र आएँगी। कल मंदिर में भी उत्सव होंगे। भगवान पेरुमल (हमारे अर्चगर के माध्यम से) उत्सवों की शुरुआत करेंगे। फिर वे एक हाथ में मक्खन से भरी थाली लिए प्रकट होंगे और दूसरे हाथ से अपनी पत्नी लक्ष्मी को गले लगाएँगे। भक्तों को मक्खन, तुलसी जल, छाछ और मीठा पोंगल जैसे विभिन्न प्रसाद वितरित किए जाएँगे। आपके पिता भी यहाँ नहीं हैं। इसलिए हर चीज़ का भरपूर आनंद लें और मुझे हर बात विस्तार से बताएँ।” उन्होंने आगे कहा।
चोक्कापनाई के दौरान सावधान रहें। चिंगारियां उड़ सकती हैं।
हर जगह पटाखे फूट रहे हैं और कभी भी फूट सकते हैं। इसलिए आग से दूर रहो। शाम हो गई है। बाबू! अब संध्यावंदनम करो। आज रविवार है, इसलिए 108 गायत्री जप करो। अगर संत तुम्हारे सपने में आएं, तो मुझे बताना मत भूलना।” इतना कहकर उसने अपने तकिए ठीक से समेटे और लेट गया।
मैंने उत्साहपूर्वक 'जी दादाजी!' कहा। हम सब चले गए।
घर के पीछे गौशाला थी। मैंने एक गाय को प्यार से सहलाया और कामधेनु से प्रार्थना की कि वह हमें सभी खतरों से बचाए। फिर मैं जप करने बैठ गया, अगले दिन होने वाली भयानक घटना से बेखबर।

(करगट्टम और मूर्ति नृत्य)

अध्याय-12

घटनाओं का गलत मोड़

जन्माष्टमी का दिन था, जिसे कृष्ण जयंती भी कहते हैं। हम बहुत उत्साहित थे। हमने स्नान किया, नाश्ता किया और गली के अंत में स्थित अधिमूलस्वामी मंदिर की ओर दौड़ पड़े।

हमारी माता सोर्नम ने हमें चेतावनी दी। “बच्चों, सावधान रहना। मंदिर में बहुत भीड़ होगी। दान पेटी में पैसे डालना मत भूलना। ऐसा करते समय आने वाली परीक्षाओं में प्रथम स्थान प्राप्त करने के लिए प्रार्थना करना। उसके बाद तुम जो चाहो कर सकते हो।”

उसकी बात को जल्दी से 'हाँ' कहकर और दादाजी से अनुमति लेकर हम मंदिर की ओर दौड़े। हमने पूजा-अर्चना को ध्यान से देखा। फिर पुजारी ने हमें देवता के बारे में कुछ गीत गाने को कहा क्योंकि उन्हें लगा कि हमारी आवाज़ अच्छी है। मैंने विष्णु सहस्रनाम का श्लोक 'सान्तकारम' गाना शुरू किया और मेरे भाइयों ने भी मेरा साथ दिया। हमने ज़ोर-ज़ोर से गाया। पुजारी ने हमें विशेष ध्यान दिया और तुलसी के पत्ते और एक बड़े पत्ते में पोंगल की अतिरिक्त सर्विंग दी।

हमारे दादाजी मंदिर तक पैदल नहीं जा सकते थे। इसलिए उन्होंने एक दिन पहले हमारे चाचा लक्ष्मणन के माध्यम से देवता के नाम पर विशेष अर्चना के लिए ग्यारह रुपये दिए। मंदिर में हमें देखकर लक्ष्मणन हमारी ओर दौड़े और हम सबको गले लगा लिया। उन्होंने हमें नदी की सीढ़ियों के पास बने छोटे नरसिम्हा मंदिर में अपने पीछे आने को कहा।

“बच्चों, मेरे साथ आओ! पुजारी अब भगवान नरसिम्हा के पूरे शरीर पर चंदन का लेप लगाएंगे और विशेष पूजा करेंगे। यह देखना बहुत सुंदर होगा। मीठे पोंगल और दाल का प्रसाद ग्रहण करने के बाद हम घर वापस जा सकते हैं।”

लेकिन उसके बाद हमने घर जाने से इनकार कर दिया। हम वहाँ का नजारा देखना चाहते थे।

ताड़ी की अग्नि से जुड़े विशेष आयोजनों के बारे में सुनकर हमारे चाचाजी हमारी उत्सुकता पर हँस पड़े। “मेरे प्यारे बच्चों! ये सभी आयोजन शाम पाँच बजे के बाद ही होंगे। सबसे पहले, भगवान को पालकी में बिठाकर मंदिर के चारों ओर घुमाया जाएगा और एक विशेष स्थान पर स्थापित किया जाएगा। फिर आरती की जाएगी और भजन-कीर्तन किए जाएँगे। अब हमें घर जाकर वहाँ भगवान श्री कृष्ण की पूजा में शामिल होना है। तुम्हारे दादाजी तैयार हो रहे हैं। हमें वहाँ पहुँचना होगा।” हालाँकि हम सभी निराश थे, मैंने अपने भाइयों का मनोबल बढ़ाने की कोशिश की। “ठीक है हरि, हम कंचे का खेल रद्द कर देंगे और शाम लगभग 4:30 बजे यहाँ वापस आ जाएँगे, ठीक है?”

हमारे चाचा प्रसाद का एक बड़ा डिब्बा लेकर आए और हम सब जल्दी से घर पहुँच गए। पूजा धूमधाम से संपन्न हुई, जिसमें पवित्र मंत्रों का उच्चारण और विष्णु सहस्रनाम किया गया। गांधीमाथी अम्मा ने आश्चर्य से

कहा, “ये बच्चे कितने ज़िम्मेदार हैं और बिना कोई शरारत किए मंत्रोच्चार कर रहे हैं। मुझे लगता है आज बारिश होगी।”
“पट्टी!” मैंने चिल्लाकर कहा। “बारिश शब्द मत बोलो। आज हमें ताड़ी की अग्नि देखने का कार्यक्रम देखना है।” लक्ष्मी अम्माल ने खुशी से जवाब दिया, “ओह...क्या सच में? तो यही वजह है कि तुम इतने अनुशासित हो!” वह हंस पड़ीं। पूजा के बाद, भगवान के नाम पर सभी को तरह-तरह के पकवानों का प्रसाद मिला। हम सब अपने दादाजी द्वारा सुनाई जा रही बालकृष्ण लीलाओं को सुनते हुए थोड़ी देर के लिए सो गए। करीब चार बजे, मैं अचानक जाग गई और तुरंत अपने भाइयों को जगाया। हमने चेहरा धोया, नए कपड़े पहने और चिड़ियों की तरह मंदिर की ओर दौड़ पड़े।
हम जल्द ही मंदिर पहुँच गए, लेकिन पता चला कि पुजारी सुबह की अलंकारम (पत्थर की परत) को धीरे-धीरे हटा रहे थे। उन्होंने हमें आधे घंटे बाद आने को कहा। “आप सब बाहर बड़े बरगद के पेड़ के पास जाकर खेल सकते हैं। तोतों की मीठी चहचाहट सुनना। आधे घंटे बाद, आप आकर पालकी में भगवान का अभिषेक और अलंकरण देख सकते हैं। उसके बाद सोलह प्रकार की आरती और नृत्य होंगे, जैसे कोलाट्टम (लाठी से नृत्य), आलियाट्टम (पुतलों से नृत्य), और फिर चोक्कापनाई (आतिशबाजी के साथ ताड़ के पत्तों को जलाना)। उसके बाद आप सब घर जा सकते हैं।” उन्होंने मुस्कुराते हुए हमसे बहुत ही विनम्रता से बात की।
“ठीक है अंकल!” हमने एक साथ जवाब दिया और खेल खेलना शुरू कर दिया।
ट्रेन में... हम एक दूसरे को पीछे से पकड़े हुए थे। मंदिर के दक्षिण की ओर एक विशाल बरगद का पेड़ था। उस पर कई रंग-बिरंगे तोते चहचहा रहे थे और आपस में खेल रहे थे। हमें लगा जैसे किसी तोते ने हमें तमिल में "आओ" कहा हो। आधा घंटा बीत गया। मंदिर के एक सहायक ने हमें अंदर बुलाया। हमने हाथ-पैर धोकर गर्भगृह की ओर दौड़ लगाई।
पुजारी ने विधि-विधान संपन्न किए और भगवान को उनके वाहन, भगवान गरुड़ की पालकी पर विराजमान किया गया। पवित्र शंख बजाए गए और मधुर संगीत तथा दिव्यप्रबंधम के पाठ के साथ भगवान की परिक्रमा कराई गई। ढोल की लयबद्ध थाप और मंत्रों ने मुझे तुरंत समाधि की अवस्था में पहुंचा दिया। मैं आसपास के वातावरण से बेखबर था और मेरे भाइयों ने मेरा हाथ कसकर पकड़ रखा था और मुझे अपने साथ ले गए। सन्निधि गली में, एक नारियल का पेड़ बीचोंबीच गहराई तक जड़ जमाए खड़ा था।
और उसके चारों ओर ताड़ के पत्तों को कसकर लपेटा गया था। भगवान का प्रतिनिधित्व करते हुए एक पुजारी ने मशाल ली और उसके पास गए। चारों ओर से "आरोहर" की आवाज़ें आने पर, उन्होंने मशाल को पत्तों के ठीक बीच में गाड़ दिया। वे पीछे हट गए और सभी को दूर हटने की चेतावनी दी। 'चोक्कापनाई' जंगल की आग की तरह जलने लगी। चटकने की आवाज़ इतनी तेज़ थी कि कान बहरे हो रहे थे और सूखे पत्तों के जलने से निकली लपटें चील के पंखों की तरह ऊंची उठीं और हर जगह जलती हुई गिर पड़ीं।
मैं एक अजीब सी भावना में डूबा हुआ था और भीड़ में आगे-पीछे हिलता रहा। हालांकि मैं सावधान था, फिर भी एक छोटी सी चिंगारी मेरी कोहनी पर गिरी जिससे मुझे असहनीय दर्द हुआ। मेरे सामने जलती आग

ज्वालामुखी जैसी लग रही थी। इसने मेरे अंदर भी वैसी ही आग भड़का दी और मैं बेहोश हो गया। सौभाग्य से राखीमुथुदेवर ने मुझे गिरने से बचा लिया। उन्होंने मुझे गोद में उठाकर घर ले गए और मेरे दादाजी के सामने रख दिया। मेरे चेहरे पर पानी छिड़का गया। सब लोग चिंतित थे। मेरी माँ और बाकी लोग मेरे घाव को देख रहे थे। उस अप्रिय घटना से मेरी बांह पर एक छोटा सा छाला पड़ गया था। मेरी माँ एक मरहम (बोरीदा) लाईं और मेरे घाव पर धीरे-धीरे लगाया। उनकी आँखों से आँसू बह रहे थे। उन्हें देखकर मैंने पूछा, "क्या हुआ माँ? मैं कहाँ हूँ? मैंने चोक्कापनाई को अंत तक नहीं देखा।" यह बात मुझे हाथ जलने के दर्द से भी ज़्यादा रुला रही थी।

मुझे रोते देख मेरे भाई बहुत भावुक हो गए। “दादा! हमें पता ही नहीं था कि ऐसा होगा।” गरगर ने दोनों बच्चों को गले लगाया और उन्हें दिलासा दिया।

“मैंने आप सभी को बार-बार सावधान रहने के लिए नहीं कहा था? मेरी चेतावनियों के बावजूद यह हो गया। भगवान की कृपा से, यह केवल मामूली जलन है। किसी को रोना नहीं चाहिए। इसे छोड़ दें।” उन्होंने सबको सांत्वना दी। राखीसमुथु देवर को उनकी समय पर मदद के लिए कुछ नमकीन दिए गए। गांधीमथी अम्माल ने घाव पर दिन में दो बार घी लगाया। तीन दिनों के भीतर दर्द कम हो गया और घाव धीरे-धीरे भरने लगा।

हमारी दादी लक्ष्मी अम्माल ने हमें बुलाया। “अब से तुम सब सावधान रहना और अपनी शरारतें और बदमाशी कम करना।” “जी दादी! हम कोशिश करेंगे कि इसे कुछ हद तक कम कर दें!” हम सब एक साथ हँस पड़े। हमारी माँ अपनी हँसी नहीं रोक पाईं और हमारी इस बात पर ज़ोर से हँस पड़ीं, उन्हें अपनी सास की मौजूदगी का ज़रा भी एहसास नहीं था। लक्ष्मी अम्माल नाराज़ हो गईं, लेकिन हमारी माँ ने तुरंत अपनी गलती के लिए माफ़ी माँग ली।

अगले सप्ताह पिताजी घर लौट आए। अपनी अनुपस्थिति में हुई घटनाओं को सुनकर वे बहुत परेशान हुए। उन्होंने मुझे मेरे भाई-बहनों की शरारतों का उदाहरण बनने के लिए खूब डांटा। वे चार दिन की छुट्टी पर आए थे। वे सुब्बैया चाचा के साथ अम्बासमुद्रम गए और एक छोटी गाड़ी और एक छोटा बैल लेकर आए। रकीसामुथु देवर ने उन्हें चुनने में मदद की और उन्हें वापस घर ले आए। उनके मार्गदर्शन में हमने एक सप्ताह के भीतर गाड़ी चलाना सीख लिया।

दो महीने खूब मस्ती से बीत गए। हमने बैलगाड़ी चलाना सीखा। हमने बैल का अच्छे से ख्याल रखा और उसे जरूरत पड़ने पर पानी और खाना दिया। जब तक हमारी कक्षाएं खत्म नहीं हुईं, उसे एक पेड़ से बांधकर छाया में रखा गया। स्कूल खत्म होते ही, वह जवान बैल हमें पच्चीस मिनट में घर ले आया। हम बिना थके पढ़ाई पर ज्यादा ध्यान दे पाए।

हमारे दादा-दादी ने हमें खूब शाबाशी दी क्योंकि हमने वादे के मुताबिक छमाही परीक्षाओं में अच्छे अंक प्राप्त किए थे। हम सब बहुत खुश थे, लेकिन किस्मत को कुछ और ही मंजूर था! ठेला चलाने के तीन महीने अचानक समाप्त हो गए।

एक शाम, घर लौटते समय, मेरे भाई वेंकट ने एक शरारत की (एक छोटे बैल के नितंबों पर) जिससे गाड़ी पास के एक छोटे गड्ढे में गिर गई। बैल भी गड्ढे में उल्टा गिर गया, एक पैर हवा में और दूसरा ज़मीन पर। ऐसा लग रहा था मानो वह ऋषि विश्वामित्र के त्रिशंग लोक में हो। बैल दर्द से कराह रहा था और उस सुनसान जगह पर हमारी चीखें मानो हवा के कोख को भी पिघला रही हों।

(मंदिर के सामने ताड़ की अग्नि उत्सव)

अध्याय-13

मेरे पिता कहाँ गए?

सुब्बैया चाचा संयोगवश उसी सड़क से गुजर रहे थे जहाँ हमारी गाड़ी का एक्सीडेंट हुआ था। वे वीरवनल्लूर से कुछ खरीदारी करके लौट रहे थे। उन्होंने देवर से गाड़ी रोकने को कहा और रोते हुए बच्चों को अपने पास बुलाया। उन्होंने बच्चों को सांत्वना दी, बैल को बचाया और उसे अपनी गाड़ी से बाँध दिया। उन्होंने बैल को अपनी गाड़ी के पीछे-पीछे चलने को कहा और खुद उसे चलाकर ले गए। उन्होंने देवर से पास के चमेली के बाग से दो बलवान आदमियों को दस-दस रुपये देकर लाने को कहा। किसी तरह सुब्बैया चाचा टूटी हुई गाड़ी को गाँव तक ले आए। उन्होंने गरगर को दुर्घटना की पूरी कहानी विस्तार से सुनाई और मेरे छोटे भाई वेंकट की शरारतों के बारे में विस्तार से बताया। गरगर सदमे में तो था, लेकिन उसने रोते हुए बच्चों को बुलाया और उनके घावों पर मरहम लगाया।

“रोओ मत, मेरे प्यारे बच्चों... बताओ। क्या बैल को चिढ़ाना ठीक है? वह भी तुम्हारी ही तरह जवान है। वेंकट, तुमने ऐसा क्यों किया? मुझे लगता है तुम्हारा बड़ा भाई बाबू तो कुशलता से बैलगाड़ी चला रहा था। अब देखो क्या हो गया। बैलगाड़ी में सवारी करने के दो महीने का सुख अब बीत गया। आधे घंटे में तुम्हारे पिताजी यहाँ आने वाले हैं। उन्हें तूतीकोरिन में मिली अच्छी नौकरी छोड़नी पड़ी। वे अभी नदी में नहाकर आ रहे हैं। मुझे लगता है तुम सबको उनसे खूब मार पड़ेगी। हम्म... भला कौन तुम्हें तुम्हारे कर्मों के फल से बचा सकता है!” दादाजी के ये शब्द सुनकर हम तीनों के पेट में भयानक दर्द होने लगा। हमारी आँखों से आँसू बहने लगे। हम सब घबरा गए और ईश्वर से प्रार्थना करने के लिए कुछ श्लोक जपने लगे।

मदद करो। लेकिन हम अच्छी तरह जानते थे कि हमारे पिता को कोई नहीं रोक सकता था। वे कैद से छूटे हुए एक खूंखार बाघ की तरह लग रहे थे। वे तौलिए से अपना सिर पोंछते हुए अंदर आए। हम डर से कांप रहे थे, लेकिन हमारी माँ ने हमें सुरक्षा देने के लिए अपने हाथों से घेर लिया।

“क्या हुआ? बच्चे बुरी तरह से घायल लग रहे हैं। बाबू! जवाब दो! तुम बाकी बच्चों के सरदार हो और सारी शरारतों के भी। तुम सबने क्या किया? क्या तुमने खुद ही ये मुसीबत मोल ली है? हह...!” जब पिता ज्येष्ठ शेर की दहाड़ सुनाई दी, तो मैंने रोते हुए और हकलाते हुए उस दिन की घटना बताने शुरू की। लेकिन जब तक मैं वेंकट की शरारत पर पहुंचा, तब तक उसने खुद बीच में दखल दे दिया, यह सोचकर कि उसका बड़ा भाई सारा दोष अपने ऊपर ले लेगा।

“अप्पा, ये मेरी गलती है... मुझे नहीं पता मैंने ऐसा क्यों किया, लेकिन मेरी गलती की सज़ा दूसरों को मत दो!” उसकी आवाज़ काँप रही थी। तुरंत ही पिताजी ने वेंकट को खींचा और उसे ज़ोरदार थप्पड़ मारे। “तुम सबको यही सज़ा मिलनी चाहिए थी। मैंने तुम्हारे दादाजी को पहले ही चेतावनी दे दी थी कि तुम सबको ज़्यादा छूट न दें। तुम लोग बैलगाड़ी चलाने लायक भी नहीं हो। अब देखो, तुमने दादाजी का कितना नुकसान किया है? उन्हें समझ आने दो। अब से तुम सब पैदल स्कूल जाओगे। तभी तुम्हें अक्ल आएगी।” इतना कहकर वे अपना बड़ा सा पेट भरने के लिए चले गए!

लेकिन हमारे दादाजी बिल्कुल भी विचलित नहीं हुए। “कोई बात नहीं बच्चों! इसके बारे में बार-बार मत सोचो और अपनी पढ़ाई से ध्यान मत भटकाओ। अगर ऐसा करोगे तो पिताजी से और मार खाओगे। सावधान रहना।” इसके बाद वे उस घटना को पूरी तरह भूल गए। उन्होंने सुब्बैया चाचा से गाड़ी ठीक करवाई और बैल समेत उसे बेच दिया।

बाद में उन्होंने अपनी पत्नी और सोर्नम को बताया कि रामजी अपनी नौकरी की समस्या को बहुत दबाते थे। जब हमारे पिता तूतीकोरिन में थे, तब उनके बैंक मैनेजर ने उन्हें एक बड़े ग्राहक के गोदाम के स्टॉक से संबंधित एक गड़बड़ी में मदद करने के लिए कहा। लेकिन उन्होंने मैनेजर पर चिल्लाकर तुरंत बिना सोचे समझे नौकरी से इस्तीफा दे दिया। अब गरगर को लगा कि उनके बेटे का इस तरह का लगातार खराब स्वभाव उसे कहीं भी नौकरी नहीं दिलाएगा।

इस घटना के तुरंत बाद, दो महीने के भीतर ही, रमन और लक्ष्मण भाइयों के बीच संपत्ति के बंटवारे को लेकर विवाद शुरू हो गया। बात कुछ इस तरह शुरू हुई। लक्ष्मण चाचा के लिए एक अच्छा वैवाहिक प्रस्ताव आया। दुल्हन का परिवार तेनकासी के पास अयिकुडी गांव में रहता था और अगर दूल्हे (लक्ष्मण) के नाम पर कोई संपत्ति हो तो वे शादी करने को तैयार थे। इसलिए, अपने लिए एक छोटा हिस्सा रखते हुए, उदार हृदय से गार्गर ने बाकी संपत्ति अपने दोनों बच्चों में बांटने का फैसला किया। वे यह सब अपने जीवित रहते हुए करना चाहते थे और एक वकील की मदद से उन्होंने इसके लिए व्यवस्थाएं शुरू कर दीं।

लेकिन, हमारे पिता को यह विचार पसंद नहीं आया और उन्होंने तर्क दिया कि उन्हें अपने नाम पर थोड़ा और हिस्सा चाहिए क्योंकि उन्हें एक बड़े परिवार का भरण-पोषण करना था। यह सब वकील के सामने हुआ। जब उनकी दलील कारगर नहीं हुई, तो वे शाम तक चुप रहे... और फिर उस मनहूस बरसाती रात में एक सूटकेस और छाता लेकर घर से निकल गए। पूरा परिवार उनके इस फैसले से अनजान था और आधी रात को गहरी नींद में सो रहा था। हमारे दादाजी पहले से ही मधुमेह से पीड़ित थे और इसके बाद उनकी हालत और बिगड़ गई। वे दुबले-पतले हो गए और बिस्तर पर ही पड़े रहे।

अध्याय-14

मेरे पिता कहाँ हैं!

मेरे पिता के अचानक चले जाने और दादाजी की बीमारी से मेरी माँ गहरे शोक में डूब गईं। मेरे चाचा लक्ष्मणन की स्थिति भी संकट में थी। उन्हें डर था कि कहीं उनकी शादी ठुकरा न दी जाए; उन्हें यह भी चिंता सता रही थी कि कहीं लड़की का परिवार उनके भाई के चले जाने को अपशगुन न समझे। लेकिन, उनके लिए हालात बिगड़े नहीं, क्योंकि दादाजी ने तुरंत उनके नाम पर एक संपत्ति पंजीकृत करवा दी। अब, बड़े दिल से (!), दुल्हन के परिवार ने जनवरी के महीने में अपने गाँव अयिकुडी में शादी करने पर सहमति जताई।

विवाह समारोह भव्य ढंग से संपन्न हुआ। विवाह के तीसरे दिन, दुल्हन जानकी को अथाझनल्लूर स्थित गरगर के घर लाया गया। महादेव शास्त्रीगल संयोगवश उनसे मिलने आए और समारोह के बारे में जानकारी ली।

मिठाई और नमकीन से उनका स्वागत करने के बाद, गरगर के मन में एक विचार आया। उन्होंने शास्त्रीगल से अपने पुत्र के बारे में प्रश्नम विधि से पूछने की इच्छा व्यक्त की। शास्त्रीगल तुरंत सहमत हो गए। उन्होंने अपनी आँखें बंद कर लीं और देवी मंत्र का जाप करने लगे। उन्होंने कुछ छोटे सफेद शंख, जो अब तक उनकी कमर की थैली में निष्क्रिय पड़े थे, एक चटाई पर घुमाए।

“गर्गर स्वामी जी! आपका बेटा कहीं भाग नहीं गया है। दरअसल, वह उत्तर भारत में है और उसने पहले से ही सब कुछ ठीक से योजना बना रखी थी। वह नौकरी की तलाश कर रहा था और जब उसे सही नौकरी मिल गई, तो वह चला गया। यह आपके साथ हुई बहस की वजह से नहीं है। कृपया अपना विचार बदल लीजिए। वह सुरक्षित है और अब अच्छी नौकरी कर रहा है। ये मेरे गुरु और मेरे देवता के वचन हैं। आपने पहले कहा था कि उसने जाने से पहले ज़रूरी दस्तावेज़ों पर हस्ताक्षर कर दिए थे, यह सोचकर कि आप उन्हें किसी तरह पंजीकृत करवा देंगे। इसलिए, चिंता न करें और मैं अब चलता हूँ।”

मानव मन बड़े विचित्र तरीके से काम करता है। अगर कुछ नकारात्मक घटित होता है, तो मन में तरह-तरह के विचार उमड़ने लगते हैं और वह उनमें उलझ जाता है। यहां तक कि अगर ईश्वर प्रकट होकर मार्गदर्शन भी करे, तो भी मन चिंताओं के भंवर में तब तक लगा रहता है जब तक कि खुशी की कोई किरण दिखाई न दे। मेरे चाचा लक्ष्मणन बहुत खुश थे। वे लगातार मिठाई खरीदते रहे।

हम बच्चों के लिए मिठाइयाँ और मूंगफली। हमारी चाची जानकी अपने काम में बहुत कुशल थीं और परिवार में सभी उन्हें पसंद करने लगे थे। उनके विनोदी स्वभाव ने मेरी माँ की दयनीय स्थिति के बावजूद परिवार में खुशियाँ बनाए रखीं। चाची जानकी मेरी माँ से पूरे भरोसे के साथ बात करती थीं।

“अक्का! मेरी बात मानो। मैं हनुमान जी की परम भक्त हूँ। अप्रैल महीने में अथिंबर का पत्र आएगा। वह किसी ज़रूरी काम से गए होंगे। पिछले महीने, मैं ऊपर के कमरे में अलमारियाँ साफ़ कर रही थी... मुझे कलकत्ता की एक रसीद मिली। कागज़ भले ही बहुत फटा हुआ था, लेकिन मैंने उस पर लिखी बातें पढ़ लीं। अथिंबर ज़रूर किसी बड़े काम से वहाँ गए होंगे। उनका गुस्सा जल्द ही शांत हो जाएगा और आपको उनका पत्र मिलेगा।” उनकी आवाज़ किसी दिव्य स्रोत से आती हुई लग रही थी।

ठीक अप्रैल महीने में मेरे पिता का एक पत्र आया।

हालांकि पत्र में बहुत कम सामग्री थी। उसने यह पत्र अपने पिता को संबोधित किया था। उसने अपने भाई के विवाह के बारे में पूछा था और यह सुनिश्चित किया था कि वह एक बड़ी लोहा और इस्पात कंपनी में लेखाकार के रूप में कड़ी मेहनत कर रहा है। उसने अपनी एक तस्वीर भेजी थी जिसमें वह कुर्सी पर बैठा था और उसकी मेज पर दो टेलीफोन रखे थे। पत्र की सामग्री पढ़ने के बाद हम सभी को राहत मिली। ऐसा लगा मानो हमारे दिलों से एक बड़ा बोझ उतर गया हो।

अब गाँव में फैली अफवाहों का ठोस जवाब दिया जा सकता था। है ना? हमारी चाची जानकी की भगवान हनुमान में आस्था की बहुत प्रशंसा हुई। मैंने उन्हें गले लगाकर कहा कि वो मेरी तरह समझदार हो गई हैं! मेरी शरारती बातों पर सब हंस पड़े। घर में फिर से खुशियाँ छा गईं। हमारी शरारतें दिन-ब-दिन बढ़ती गईं।

लेकिन, कुछ बात मेरे दिल को कचोट रही थी। मैं परिवार में सबसे बड़ा था। इसलिए, दादाजी की देखभाल की ज़िम्मेदारी मेरे कंधों पर आ गई थी। मैं चाहे पढ़ाई कर रहा होता या खेल रहा होता, मुझे अक्सर अपने बीमार दादाजी की मदद करनी पड़ती थी, उनके कमोड को देखना पड़ता था और उसके बदबूदार पानी से भरने का इंतज़ार करना पड़ता था। उसके बाद, मुझे कमोड को बहुत सावधानी से, बिना गिराए, पिछवाड़े तक ले जाना पड़ता था और फिर उसे अच्छी तरह साफ़ करना पड़ता था। हालाँकि पूरा परिवार मेरे प्रयासों और दयालु स्वभाव की सराहना करता था, फिर भी छह महीने के भीतर ही मुझे इससे अरुचि और थकान महसूस होने लगी। मैं खुद को यह कहकर दिलासा देता था कि जब मैं स्कूल में था, तब मेरे चाचा भी इस काम में मेरी मदद करते थे।

चाचा लक्ष्मणन मुझे दिलासा देते थे। "देखो बाबू! यह हमारा कर्तव्य और ज़िम्मेदारी है। दादाजी के प्रति हमारी यही सेवा है। भला ये सब कौन करेगा? बड़ों की सेवा करने में हमें संकोच नहीं करना चाहिए। भगवान भविष्य में हमारी मदद ज़रूर करेंगे। मेरा विश्वास करो, है ना?"

उनके सांत्वना भरे शब्दों के बावजूद, मैं बहुत उदास और निराश महसूस कर रहा था।

दिन था। बिना खेले ही मैं नदी किनारे दौड़कर एक पत्थर की सीढ़ी पर बैठ गई। मेरी आँखों से लगातार आँसू बह रहे थे। अचानक एक बूढ़ा आदमी सीढ़ियों से नीचे आया और पीछे से मेरे कंधों को छूते हुए बोला, "बच्ची, क्यों रो रही हो? मुझे बताओ।" उसकी आवाज़ में मौजूद दयालुता ने मुझे ऊपर देखने पर मजबूर कर दिया। हालाँकि वह कमज़ोर दिख रहा था, फिर भी उसका चेहरा दमक रहा था। उसके हाथ लंबे और हथेलियाँ चौड़ी थीं। उसकी आँखों से प्रेम और दया झलक रही थी।

उन्होंने स्नेहपूर्वक मेरे बालों को सहलाया। मैंने उन्हें अपने मन पर पड़े सारे बोझ के बारे में बताना शुरू किया। "यद्यपि मैं जानती हूँ कि दादाजी के प्रति यह मेरा कर्तव्य है, फिर भी मुझे दिन-प्रतिदिन अरुचि होती जा रही है और मैं खुद को नियंत्रित नहीं कर पा रही हूँ। आजकल मैं भोजन का आनंद भी नहीं ले पाती।"

"चिंता मत करो, मेरे बच्चे! दो महीने में तुम इस कर्तव्य से मुक्त हो जाओगे। धैर्य रखो और कल्पना करो कि भगवान हनुमान तुम्हारे भीतर निवास कर रहे हैं और वही यह कार्य कर रहे हैं। यह मत सोचो कि तुम यह कर रहे हो! हमारे जीवन में जो कुछ भी होता है, किसी न किसी कारण से होता है। बस प्रतीक्षा करो और देखो! तुम्हारी स्मृति शक्ति बढ़ेगी। तुम सभी परीक्षाओं में अधिक अंक प्राप्त करोगे। इतना ही नहीं! भविष्य में तुम एक बड़ी नौकरी करोगे और तमिल में मंचों पर भाषण देकर नाम कमाओगे। तुम्हें देवी सरस्वती का आशीर्वाद प्राप्त है। वे तुम्हें दर्शन देंगी और तुम्हें अलौकिक ज्ञान प्रदान करेंगी।"

बूढ़े आदमी ने हांफते हुए बात की और मेरे गालों पर चुंबन बरसाए।

और उन्होंने मेरे हाथ थाम लिए। मुझे अपने शरीर में शक्ति का एक प्रवाह महसूस हुआ। साथ ही, मुझे अपने शरीर में एक हल्का कंपन भी महसूस हुआ।

इसी बीच अंधेरा तेजी से फैल रहा था। मैंने उन्हें धन्यवाद दिया और

मैंने उनके वचनों का पालन करने का वादा किया। मैंने उनके चरणों में प्रणाम किया। जब मैं उठा, तो वे कहीं दिखाई नहीं दिए। मुझे समझ नहीं आ रहा था कि क्या हो रहा है। 'क्या यह सपना है या कोई योगी आए थे?' बहुत कम उम्र में हुए इस अनुभव ने मुझे स्तब्ध कर दिया। मैंने यह बात किसी को नहीं बताई, बस इसके बारे में सोचती रही। लेकिन मुझे पूरा विश्वास था कि एक दिन उनकी कही बातें सच हो जाएँगी, बशर्ते इसे गुप्त रखा जाए। कुछ दिनों बाद, वही पुराने योगी मुस्कुराते हुए मेरे सपने में प्रकट हुए। उन्होंने मुझसे पूछा कि क्या मैं संतुष्ट हूँ। मैं काफी देर तक उनके स्वरूप का ध्यान करती रही। मुझे खुशी का एहसास हुआ और मेरी नसों में खुशी की लहर दौड़ गई।

अध्याय-15

वीरवनल्लूर में जीवन

उस संत जैसे बूढ़े व्यक्ति से मुलाकात के बाद, मैंने शुरुआत की मैं अपने दादाजी की पूरे उत्साह से मदद करता था। अगर वे मुझे आधी रात को भी बुलाते, तो मैं बिना किसी झिझक के उनकी मदद करता। हर बार मैं मन में भगवान हनुमान की छवि का आभास करता था। इससे मुझे अतिरिक्त शक्ति मिलती थी और मैं मुस्कुराते हुए उनकी मदद या सेवा कर पाता था। मेरे दादाजी भी मेरे बदले हुए व्यवहार से आश्चर्यचकित थे, लेकिन उन्होंने मुझसे कोई सवाल नहीं किया। दो महीने बीत गए। एक दिन अचानक मेरे नानाजी का दम घुटने से निधन हो गया। उनका घर सन्नाधी गली में था। हम तीनों बच्चों को ज़्यादा दुख नहीं हुआ क्योंकि उनका हमारे साथ कभी अच्छा व्यवहार नहीं था। वे हमेशा हमें हुकुम देते थे और कभी हमें एक आना भी खर्च करने को नहीं देते थे। दिवाली पर भी वे हमें पटाखे खरीदने के लिए कभी बड़ी रकम नहीं देते थे। जो भी देते थे, वह मामूली रकम होती थी, जैसे सिर्फ एक आना (जो अब 5 पैसे के बराबर है) और हम उसे लौटा देते थे, उनका मज़ाक उड़ाते थे और चले जाते थे। तब तो यह एक बचकानी उम्मीद थी।

उसी दिन, हमारे एक रिश्तेदार ने हमारे चाचा लक्ष्मण से कहा कि वे कलकत्ता में हमारे पिता को एक टेलीग्राम भेजकर उनके ससुर की मृत्यु की सूचना दें। तीन दिन बाद, हमारे पिता भारी सामान और उदास चेहरे के साथ आए और सीधे अपने पिता से मिलने गए। उन्हें जीवित देखकर वे स्तब्ध रह गए और उन पर चिल्लाए, "किसने यह टेलीग्राम भेजा है कि आप मर गए हैं? मैंने कलकत्ता में अपनी नौकरी छोड़ दी और हमेशा के लिए यहाँ आ गया। यह किसने किया?" उनका पूरा शरीर क्रोध से कांप रहा था।

लक्ष्मणन चाचा बाहर आए और उनके सामने खड़े हो गए। उन्होंने टेलीग्राम देखा और पाया कि उसमें ससुर की जगह पिता लिखा हुआ था। यह डाकघर के क्लर्क की गलती थी। लेकिन हमारे पिता को यकीन नहीं हुआ। "तुम्हारा दिमाग कहाँ था? क्या टेलीग्राम भेजने से पहले उसे जाँच लेना तुम्हारा कर्तव्य नहीं था? अब मैं इस छोटे से गाँव में क्या करूँगा? बताइए, पिताजी?" कोई उनके सवालों का जवाब नहीं दे सका। इसलिए हमारे पिता रामजी ने गुस्से में कहा कि हमारे दादाजी की देखभाल करना लक्ष्मणन की ज़िम्मेदारी है और वह अपने परिवार के साथ तुरंत वीरवनल्लूर चले जाएँगे। उन्होंने घोषणा की कि वह वहाँ अपने मित्र गोपाल अय्यर के बैंक में नौकरी पा लेंगे। बच्चे भी वहाँ बिना आने-जाने की परेशानी के पढ़ाई कर सकेंगे।

कृपया मुझे मेरी ज़मीन के हिस्से में से कुछ पैसे और कुछ अन्य चीज़ें भेज दें।

चावल। क्या ठीक है, पापा?" जवाब का इंतज़ार किए बिना ही वे नदी में नहाने चले गए। इस घटनाक्रम से हमारे पेट में बेचैनी होने लगी। मेरी माँ भी बहुत परेशान हो गईं और हम सब फूट-फूटकर रोने लगे। लेकिन, हमारे दादाजी ने माँ की ओर देखा और प्यार से बोले।

"चिंता मत करो, सोरनम! उसने कब कोई नौकरी स्थायी रूप से की है? यह तो उसका स्वभाव बन गया है। कलकत्ता के अनुभव के कारण, उसे वीरवनल्लूर के उस छोटे से बैंक में ज़रूर नौकरी मिल जाएगी। इसके

अलावा, अनाज बेचकर जो पैसे मिलेंगे, उसमें से मैं तुम्हें कुछ पैसे दूंगा। तुम दोनों वहाँ अच्छे से गुज़ारा कर लोगे और मैं तुम्हें कुछ अतिरिक्त पैसे अलग से और चुपके से दे दूंगा। इसे अपने बच्चों पर खर्च करो और उन्हें खुश रखो। बाबू का ख्याल रखना। वही आगे चलकर सबका ख्याल रखेगा। वह एक अच्छा इंसान बनेगा। उसे ईश्वर और संतों का आशीर्वाद प्राप्त है।" उसकी आवाज़ बहुत कोमल और मधुर थी।
हम नवंबर के मध्य में वीरवनल्लूर में स्थानांतरित हो गए। हमें एक
पेरुमलसन्नाधी गली में उपयुक्त घर मिल गया। हम रोते-रोते अपने प्यारे दादाजी को विदाई दी। हमें उनकी चिंता थी, लेकिन हमारी माँ ने हमें समझाया।
"प्यारे बच्चों! हम जिन परेशानियों का सामना कर रहे हैं, वे कुछ भी नहीं हैं।"
आपके दादाजी ने अपनी युवावस्था में जो कुछ सहा, उसकी तुलना में ये कुछ भी नहीं है। उन्होंने देश छोड़ते समय अपने साथ केवल एक हल्की चांदी की कमरबंद रखी थी, लेकिन उनमें भरपूर आत्मविश्वास था। उन्होंने अपने लिए और हमारे लिए भी एक बेहतर जीवन बनाया। रोने और आत्मविश्वास खोने का कोई फायदा नहीं है। हमें आंतरिक शक्ति से जीवन का सामना करना चाहिए और उससे लड़ना चाहिए। उन्होंने हमारा हौसला बढ़ाया और यात्रा के दौरान हमारा ध्यान बनाए रखने के लिए कुछ कहानियां सुनाईं।
वीरवनल्लूर पहुँचने के बाद, मैंने लोगों की कहानियाँ सुनना शुरू कर दिया।
मैंने अपनी माँ से भगवद् धाम की शिक्षा ली थी। मैं पुस्तकालय में भी काफी समय बिताता था और रात में अपने भाइयों और माँ को कहानियाँ बड़े ही रोचक तरीके से सुनाता था। कभी-कभी मेरे पिता भी मेरी कहानियाँ सुनते और प्रसन्न होते थे, लेकिन उन्होंने कभी मेरी प्रशंसा नहीं की। वे अपनी खुशी और गर्व अपनी पत्नी के साथ साझा करते थे।
हम सभी ने क्रमशः नौवीं और आठवीं कक्षा उत्तीर्ण की। मेरे भाइयों को जब भी किसी विषय में कोई शंका होती थी, वे कभी भी पिताजी की मदद लेने नहीं जाते थे। जब भी उन्हें कोई अवधारणा समझने में कठिनाई होती थी, मैं उनकी मदद करता था। एक दिन, पिताजी ने मुझसे हिंदी की अतिरिक्त कोचिंग लेने को कहा। यह उनका बहुत ही दयालुतापूर्ण कार्य था। वे चाहते थे कि मैं शर्मा सर (हमारे स्कूल के शिक्षक) से सीखूं और फिर अपने भाइयों को पढ़ाऊं। इस तरह वे कुछ पैसे बचा सकते थे और यह भी चाहते थे कि हम हिंदी परीक्षाओं में अच्छे अंक प्राप्त करें। जैसे प्राथमिक, मध्यम, ऋषभ भाषा आदि।
मेरी हिंदी शिक्षिका ने अच्छे अंक लाने और भाइयों की मदद करने के लिए मेरी प्रशंसा की। वीरवनल्लूर में बसने के बाद, शरारत करने का हमारा मौका लगभग खत्म हो गया था। हमें पत्तागोभी, आलू और कुछ अन्य अंग्रेज़ी सब्ज़ियों जैसी महंगी सब्ज़ियाँ खाने को नहीं मिलती थीं। अगर कोई शादी समारोह होता था, तो वही हमारा मौका होता था। हमारे पिताजी कुछ बेतुके बहाने बनाकर कभी समारोह में नहीं जाते थे, लेकिन हमें माँ के साथ भेज देते थे और साथ में कुछ पैसे भी दे देते थे ताकि हम उन्हें उपहार के रूप में दे सकें।
पश्चिमी तट पर तालाब में तैरना हमारा सबसे सुखद समय बिताने का तरीका था।

हालांकि वह बहुत गहरा था, हम खुशी-खुशी तालाब के बीच तक तैरते रहे, और बीच में बने एक छोटे से ढांचे, जिसे 'अलवारमंडपम' कहा जाता था, से कुछ कंकड़ इकट्ठा किए। हमने अपने दोस्तों को उन इकट्ठा किए हुए कंकड़ों का प्रदर्शन करके शेखी मारी और कहा कि हम उस मंडपम से भी आगे जा सकते हैं! यह सब हमारे पिताजी की अनुपस्थिति में ही हुआ। हम अपने दादाजी से मिलने के लिए चुपके से तीन मील साइकिल चलाकर अथाझनल्लूर भी जाते थे। हमारी हर पखवाड़े की ये यात्राएं हमारी माँ द्वारा दिए गए पैसों से पूरी होती थीं। इससे हमें बहुत संतुष्टि मिलती थी और हम पढ़ाई में अच्छा प्रदर्शन कर पाते थे।
हमारी गुप्त यात्राएँ एक सब्जी विक्रेता के रूप में अचानक समाप्त हो गईं, एक ऐसी महिला जो रामायण की कूणी मंथराई जैसी दिखती थी!
हाँ! वेंकट और मुझे हाथों और पैरों पर इसका बहुत बुरा असर झेलना पड़ा!

अध्याय-16

कॉलेज हॉस्टल में

सब्जियों से भरी भारी टोकरी लिए एक बूढ़ी औरत एक बुढ़िया बेतरतीब ढंग से हमारी ओर आ रही थी। मैंने तुरंत ब्रेक लगाया, फिर भी साइकिल उसे टक्कर मार गई और उसकी टोकरी गिर गई। सब्ज़ियाँ धूल भरी सड़क पर लुढ़क गईं। वह बहुत गुस्से में आ गई और हमें गालियाँ देने लगी। हमने उसे शांत करने की कोशिश की, लेकिन वह बेकाबू रही। आखिरकार, मेरे भाई हरिहरन ने कहा, “पाटी! पता नहीं कैसे साइकिल आपको लग गई। इसमें किसी की गलती नहीं है। हमारे पास सिर्फ पाँच रुपये हैं। कृपया ये ले लीजिए और हमारे पिताजी से शिकायत मत कीजिए। वो हमारी खाल उतार देंगे।” बुढ़िया ने धीरे से कुछ बुदबुदाया और तुरंत पैसे ले लिए, लेकिन रोते हुए नाटकीय ढंग से हमारे पिताजी को पूरी घटना बता दी।

जैसे ही हमारे पिता को इस घटना के बारे में पता चला, उन्होंने तुरंत प्रतिक्रिया दी। उसने पूछताछ करने के लिए इंतजार किया और हमें बुरी तरह पीटा। उसने उसे मुआवजे के तौर पर पाँच रुपये दिए और उसे सांत्वना देने की कोशिश की। फिर वह हमारी ओर मुड़ा और बोला...
“अगर मुझे तुम सब परलोक में अपने दादाजी से मिलने साइकिल से जाते हुए मिले, तो मैं
मैं तुम्हें बुरी तरह पीटूँगा। यह तुम्हारी माँ के लिए भी एक चेतावनी है। वही तो तुम्हें साइकिल के लिए पैसे देकर लाड़-प्यार करती है।” उसके शब्द किसी खतरे की घंटी की तरह निकले।
इस प्रकार चक्र का वह दौर भी अचानक समाप्त हो गया। हम बहुत दुखी थे।
और हमारी जेब खर्च भी कम कर दी गई थी। लेकिन लक्ष्मणन चाचा हर हफ्ते हमें दिलासा देने और हमारे प्यारे दादाजी की हालत के बारे में बताने आते थे। हर बार आने पर हमें मुट्ठी भर गर्म भुनी हुई मूंगफली भी मिलती थी।
हमारी दिनचर्या वीरवनल्लूर तालाब में स्नान करना और सुंदरराजपेरुमल मंदिर जाना थी। देवता की पूजा करने और मंदिर की घंटियाँ ज़ोर से बजाने के बाद, हम पुजारी के सामने खड़े होते थे, जिनका नाम भी

सुंदरराजन था। वे हमारे पिता के अच्छे मित्र थे और हमें भरपूर पोंगल प्रसाद देते थे। हम वहीं भोजन करते, हाथ धोते और घर लौट आते। हमारी माँ को इस दिनचर्या का पता था और उन्होंने इसे गुप्त रखा था। पुजारी ने भी हमारे पिता को इसके बारे में कभी नहीं बताया। गाँव में सभी लोग हमारे पिता के गुस्सैल स्वभाव से परिचित थे।

जल्द ही गर्मी का मौसम आ गया। पंचायत ने नदी में स्नान करने पर प्रतिबंध लगा दिया। यह प्रतिबंध तीन महीने तक, मई से जुलाई तक चला और इसे बहुत सख्ती से लागू किया गया। एक दिन हमारे पिताजी ने हमें बुलाया। "बच्चों! कल से सुबह 5:30 बजे उठकर पूरब की ओर स्थित तामिरभरणी नदी में स्नान करने जाना। यह यहाँ से लगभग ढाई मील दूर है। लेकिन 7:15 बजे तक घर वापस आ जाना। अगर कोई बहाना बनाया तो सज़ा भुगतनी पड़ेगी। यह चेतावनी है।" पिताजी की यह बात सुनकर हम बहुत खुश हुए और अगले ही दिन सुबह-सुबह चेहरे पर पानी की बाल्टी फेंके जाने से बचने के लिए इस नियम का पालन करने का निश्चय कर लिया।

हम सुबह 5:15 बजे उठे, तौलिए उठाए और माँ को फोन करके बताया कि हम जाने के लिए तैयार हैं। माँ समझ गई कि यह तेज़ आवाज़ उनके पिताजी के लिए थी। वह मन ही मन हँसी।

सुबह की दिनचर्या में हमें टहलने और तैरने का अभ्यास मिलता था। मेरी माँ भी यह देखकर खुश होती थीं कि बच्चों को पिता के सख्त नियमों से छूट मिल गई है। कुछ दिन हम जल्दी नहाकर घर के रास्ते में स्थित भगवान शिव के मंदिर जाते थे। समय का ध्यान रखते हुए हम मंदिर के पुजारी से समय पूछते थे। वे हमेशा शरारती मुस्कान के साथ कहते थे कि अभी 7:15 नहीं बजे हैं। लेकिन मैं उनकी घड़ी को ध्यान से देखकर यह सुनिश्चित करता था कि वे सच कह रहे हैं या नहीं। मैं हमेशा पिता से डांट नहीं खाना चाहता था। सबसे बड़ा बच्चा होने के नाते, मुझे हमेशा लगता था कि मुझे अपने भाइयों की रक्षा करनी चाहिए। हम मंदिर के तालाब की सीढ़ियों पर बैठकर बातें करते हुए कुछ समय बिताते थे।

एक दिन मेरे भाई वेंकट ने एक सवाल पूछा। "बाबू अन्ना! आप कहानी सुनाने में बहुत माहिर हैं। क्या आप कृपया इस खूबसूरत मंदिर की कहानी बता सकते हैं? गोपुरम को देखिए, कितनी खूबसूरती से बनाया गया है! तालाब चारों ओर से धूल से सुरक्षित मंडपों से घिरा हुआ है, जो देखने में बहुत अच्छा लग रहा है।

मैंने उत्तर दिया, "भाइयों! कल मैंने पुजारी द्वारा दी गई पुस्तक से इस मंदिर का इतिहास पढ़ा। यह बहुत रोचक है। सुनिए! देवता का नाम भूमिनाधर है और देवी का नाम मरगदंबिकाई है। मंदिर का पवित्र वृक्ष पुन्नई है। लगभग आठ सौ वर्ष पूर्व, एक पांड्य राजा ने इस मंदिर का निर्माण करवाया था। मंदिर के चारों ओर फैले विशाल क्षेत्र को देखकर आप उनके विशाल हृदय का अंदाजा लगा सकते हैं। मार्ग भी अच्छी तरह से निर्मित है। सुंदर घास वाले मार्ग की देखभाल आज भी मंदिर प्रमुख द्वारा अच्छी तरह से की जाती है। पेड़ों और पौधों की इतनी अच्छी देखभाल के कारण, मंदिर के आसपास का पूरा क्षेत्र हमेशा ठंडा रहता है। मुझे लगता है कि आप दोनों ऋषि मार्कंडेय की कथा जानते हैं। जब यमराज ने बालक ऋषि मार्कंडेय की आत्मा को पाने का

प्रयास किया, तो भगवान शिव ने उन्हें निष्कासित कर दिया। शिव से भयभीत होकर, यमराज ने स्वयं को एक लता में रूपांतरित कर यहाँ लेट गए। इस प्रकार, उनका कार्य बाधित हो गया। भूमादेवी बढ़ती हुई जीव-जंतुओं की संख्या का भार सहन नहीं कर सकीं। वह इस पवित्र स्थान पर आईं और भगवान शिव की पूजा की। उन्होंने उन्हें क्षमा कर दिया।" यमराज और सब कुछ पहले जैसा सामान्य हो गया। चूंकि भूमादेवी ने उनकी पूजा की थी, इसलिए शिव को यहां भूमिनाधर के नाम से जाना जाता है। ठीक है?

"यह मंदिर तिरुनेलवेली जिले में बहुत प्रसिद्ध है। वसंत ऋतु में सूर्य की किरणें शिवलिंग के सिर पर पड़ती हैं। विशेष रूप से महाशिवरात्रि की सुबह लगभग 6:15 से 7:00 बजे के बीच यह चमत्कार होता है। लोग तामिरभरणी नदी में स्नान करके भगवान के दर्शन के लिए यहां आते हैं।"

"तिरुनेलवेली, चेरनमादेवी और अम्बासमुद्रम से यहाँ के लिए अच्छी बस सुविधा उपलब्ध है। जो लोग अपने वाहन से आ रहे हैं, वे मुक्कूदल से नदी के पुल को पार करके आ सकते हैं। वीरवनल्लूर से आने वालों को यहाँ पहुँचने के लिए 5 किलोमीटर का सफर तय करना होगा। मुझे लगता है मैंने पुस्तिका में दिए गए विवरण को ठीक से समझा दिया है। अब समय हो गया है। चलिए घर चलते हैं।" हम सब तेज़ी से चलने लगे।

गर्मी के मौसम में हम तीनों नदी किनारे खूब समय बिताते थे, कपड़े धोते, नए पतलून पहनते और खूब मस्ती से दौड़ते-भागते थे। पिताजी हमें शाम 5 से 7 बजे तक खेलने देते थे। 7 बजे के बाद हम घर लौट आते, साफ-सफाई करते और जलते हुए दीपक के सामने विष्णु सहस्रनाम का पाठ करते। हालांकि पिताजी ने हमें सैन्य अनुशासन में पाला-पोसा था, फिर भी वे हमें शाम को खेलने देते थे। इससे हमारा स्वास्थ्य और याददाश्त बेहतर हुई। इसी वजह से मैंने एस.एस.एल.सी. में सभी विषयों में उत्कृष्ट अंक प्राप्त किए और हिंदू हाई स्कूल में प्रथम स्थान प्राप्त किया, और बाद में तिरुनेलवेली जिले में भी शीर्ष स्थान हासिल किया। अंततः इसी के फलस्वरूप मुझे जिला कलेक्टर से रजत पदक मिला।

मेरे पिता समेत सभी ने मेरी बहुत प्रशंसा की। मैंने एक मिसाल कायम की थी।

अन्य बच्चों के लिए। एस.एस.एल.सी. के बाद, मैंने एम.टी.टी. हिंदू कॉलेज में दाखिला लिया जो तिरुनेलवेली में सोलह मील दूर था। मुझे वीरवनल्लूर स्टेशन तक पहुँचने के लिए दो मील पैदल चलना पड़ता था और वहाँ से तिरुनेलवेली के लिए ट्रेन लेनी पड़ती थी, पेट्टई स्टेशन पर उतरना पड़ता था और फिर कॉलेज पहुँचने के लिए डेढ़ मील पैदल चलना पड़ता था।

लंबी यात्रा ने मेरे स्वास्थ्य और मानसिक स्थिति पर बुरा असर डाला। हालाँकि पढ़ाई का माध्यम अंग्रेजी था, मैं सभी विषयों में उत्तीर्ण तो हो गया, लेकिन मेरे अंक बहुत कम आए। मेरे पिता और दादाजी मेरे बारे में बहुत चिंतित थे।

"रामजी, उसे मत मारिए! आपके यहाँ बिजली नहीं है, इसलिए कॉलेज से थककर आने के बाद बाबू को बबूल की बत्ती में पढ़ना पड़ा। उसका सिलेबस भी बढ़ गया है। ऊपर से सब कुछ अंग्रेजी में है। अब वो क्या करे? उसे हॉस्टल में दाखिला दिला दीजिए। मैं हॉस्टल की फीस दे दूँगा।"

मेरे दादाजी के दबाव के कारण, मेरे पिताजी मान गए और उन्होंने मुझे जुलाई में छात्रावास में दाखिला दिला दिया। मैंने उससे पहले ही दादाजी को एक पत्र लिखकर अपनी कठिनाइयों के बारे में बताया था। मुझे बहुत खुशी हुई कि उन्होंने मेरी बात को गंभीरता से लिया और तुरंत इसका समाधान निकाला। उनके प्रति मेरा आदर असीम रूप से बढ़ गया।
इसलिए, मैंने हॉस्टल में दाखिले के दिन ही अपने पिता से वादा किया, "धन्यवाद पिताजी! बस देखते रहिए! मैं दूसरे सेमेस्टर में सभी विषयों में लगभग 85% अंक प्राप्त कर लूंगा।"
“ठीक है! तुमने अभी जो वादा किया था, उसे पूरा करो। इससे तुम्हारी उच्च शिक्षा में मदद मिलेगी।” मेरे पिता ने जवाब दिया। मैंने अपना वादा निभाया और संस्कृत में 87% और 95% अंक प्राप्त किए। मेरे कॉलेज के प्रिंसिपल ने मेरे इस प्रदर्शन के लिए मुझे एक महंगा पेन उपहार में दिया।
आम तौर पर शाम को हॉस्टल में, हल्का नाश्ता और कॉफी पीने के बाद, मैं पढ़ाई करने के लिए पेड़ों से घिरी एक शांत जगह पर चला जाता था। वहां का माहौल बहुत सुहावना होता था और मेरे दोस्त उस समय मुझे कभी परेशान नहीं करते थे। कुछ बड़ा हासिल करने के लिए मेहनत करना कितना ज़रूरी है, है ना?
लेकिन, हर दिन उम्मीद के मुताबिक आसानी से नहीं गुजरा। अचानक मुझे तेज बुखार हो गया। मैं पाँच दिनों तक अपने कमरे में ही बंद रहा। मेरे हॉस्टल वार्डन ने बड़ी मेहरबानी से मुझसे पूछा कि क्या मुझे घर की याद आ रही है और क्या मुझे किसी के साथ घर जाना चाहिए। मैंने विनम्रता से उनका प्रस्ताव ठुकरा दिया। मैंने कहा, "सर, अगर मैं वहाँ गया तो मेरी सेहत और बिगड़ जाएगी और मैं अपनी पढ़ाई भी बाधित नहीं करना चाहता। कृपया कॉलेज के डॉक्टर से मुझे एक इंजेक्शन लगवा दीजिए। बस इतना ही काफी है। मैं ठीक हो जाऊँगा। मुझे लगता है कि बुखार किसी और वजह से है। आजकल मुझे बुरे सपने भी आ रहे हैं।"
मेरे दोस्त से दुखद खबर सुनकर मेरी आशंकाएं सच साबित हो गईं।
श्रीनिवासन अगले सोमवार की सुबह। नियति ने मेरे दादाजी को मुझसे छीनने का एक भयानक खेल खेला था।

अध्याय-17
खोई हुई बालों की माला
जी हाँ! कुछ बेहतर महसूस करने के बाद, मैं सोमवार को अपनी कक्षा में गया। मेरे दोस्त श्रीनिवासन ने मुझे बुरी खबर सुनाई।
“देई! तुम्हारे दादा गरगर का शुक्रवार को देहांत हो गया। मैं अथाझनल्लूर में तुम्हारा इंतज़ार कर रहा था। क्या तुम्हें इस खबर की जानकारी नहीं दी गई?”
बस इतना ही! मैं पहले से ही धीरे-धीरे बुखार से उबर रहा था और यह
खबर सुनकर मैं स्तब्ध रह गई। मैं बेहोश होकर गिर पड़ी। मेरे आस-पास मौजूद सभी लोग घबरा गए और मेरे चेहरे पर पानी छिड़कने लगे। मैं उठकर रोने लगी।

श्रीनिवासा! मेरे पिता ने मुझे दादाजी की अचानक मृत्यु के बारे में क्यों नहीं बताया? उनके लिए मेरे अंक मेरी भावनाओं से ज़्यादा महत्वपूर्ण हैं। उन्हें लगा होगा कि अगर मुझे इसके बारे में पता होता तो शायद मैं परीक्षा में अच्छा प्रदर्शन नहीं कर पाती। खैर, मुझे बताने के लिए आपका बहुत-बहुत धन्यवाद। मैं अपने पिता से इस बारे में नहीं पूछूंगी और न ही उनसे झगड़ा करूंगी। मैं उनका कठोर स्वभाव जानती हूं। उन्हें जब चाहे मुझे बता दें। अगर आप उनसे मिलें तो कृपया इस बारे में उनसे बात न करें।
इस खबर से मैं बहुत दुखी हुआ। मेरा मन व्याकुल था। मुझे विश्वास ही नहीं हो रहा था कि मेरे प्यारे दादाजी अब हमारे बीच नहीं रहे। वे कितने महान व्यक्ति थे! मेरी देखभाल की ज़िम्मेदारी उन्हीं पर थी और उन्होंने ही मुझे हॉस्टल में दाखिला दिलाया था। दूरी से उन्हें कभी कोई परेशानी नहीं हुई। हालांकि उनका स्वास्थ्य बिगड़ रहा था, फिर भी उन्होंने मुझसे बात करने का कोई मौका नहीं छोड़ा। वे कितने दयालु थे! ऐसे महान व्यक्ति को खोने का दुख मेरे लिए असहनीय था। मुझे लग रहा था कि इतनी कम उम्र में उन्हें खोना मेरे लिए दुर्भाग्य की बात है।
अंततः, अगले गुरुवार को मेरे पिता से यह खबर सामने आई।
ऐसा लगा मानो वह मुझे यह बात बताना ही नहीं चाहता था। उसने कुछ ही शब्दों में यह दुखद खबर सुना दी। जैसा कि मैंने सही अनुमान लगाया था, उसने कहा था कि उसे डर था कि मैं रोऊँगी, परेशान हो जाऊँगी और अपनी पढ़ाई पर ध्यान नहीं दे पाऊँगी, इसलिए उसने मुझे नहीं बताया।
यह कितनी क्रूरता है! एक भयभीत शेर में भी थोड़ी सी भी भय की भावना तो होगी ही।
स्नेह और प्यार। मैंने अपनी किस्मत को कोसा और सदमे से उबरने की कोशिश की। मेरे उग्र गुस्से ने मुझे अपने पिता को जवाब देने नहीं दिया। आखिरकार, मैंने किसी तरह दूसरे सेमेस्टर की अंतिम परीक्षाएँ पूरी कीं। मैंने काफी अच्छा प्रदर्शन किया।
इसी बीच, कई प्रतियोगिताएं चल रही थीं।
कॉलेज। अंतिम परीक्षा से एक महीने पहले ये प्रतियोगिताएं आयोजित की गईं। मैंने जूनियर वर्ग में प्रथम पुरस्कार प्राप्त किया। मेरे पिता मुझे प्रमाण पत्र लेते देखने नहीं आए। मेरे दादाजी की यादें उमड़ पड़ीं। वे मेरी इस उपलब्धि पर मेरी प्रशंसा करते, मुझे गले लगाते और आशीर्वाद देते। मैंने धीरे-धीरे खुद को संभालने की कोशिश की।
मेरे कॉलेज के दोस्तों ने एक स्किट या छोटा नाटक आयोजित किया-- जिसका नाम था
तमिल के प्रसिद्ध नाटक 'सिलप्पथिगारम' में 'कन्नागी' की अवधारणा पर आधारित एक नाटक में मैंने 'कन्नागी' की भूमिका निभाई थी। प्रदर्शन के दौरान एक मज़ेदार घटना घटी। मेरे विज्ञान शिक्षक ने मेरे किरदार के लिए उपयुक्त लंबे बालों वाली विग खरीदी। मेरे दोस्त परसु ने सही मेकअप किया और एक छोटी रस्सी से मेरे बालों को बांधा। उसने मुझे भावुक दृश्यों के दौरान बहुत सावधान रहने को कहा। मैं इतनी खूबसूरत लग रही थी कि मेकअप रूम में मेरे कुछ दोस्तों ने मुझे चूमने की कोशिश की। वह किशोरावस्था का एक बेपरवाह दौर था।

शुरुआत में सब कुछ ठीक चल रहा था, लेकिन क्लाइमेक्स सीन के दौरान मैं बहुत भावुक हो गई और कहानी के अनुसार पायल फेंकने के लिए अपना सिर नीचे झुका लिया। पायल के साथ ही मेरी विग भी निकलकर ज़मीन पर गिर गई। दर्शकों की ज़ोरदार हंसी ने उस भावुक दृश्य को हास्यास्पद बना दिया। उसके बाद मुझे बहुत शर्मिंदगी महसूस हुई। हालांकि निर्देशक के समय पर हस्तक्षेप से नाटक का समापन अच्छे से हो गया, फिर भी मुझे अपमानित महसूस हुआ और शो खत्म होने तक मेरी आंखों से आंसू बहते रहे।
उस घटना के बाद, मेरे दोस्तों ने मुझे खूब चिढ़ाते हुए कहा, "तुम सचमुच एक अनोखी कन्नागी हो!"

अध्याय-18

पांड्यान बैंक में अपने कार्यकाल के दौरान

अंततः, मेरे छात्रावास का जीवन समाप्त हो गया। मैं अपने घर लौट आया।
वीरवनल्लूर में। अपनी माँ को देखकर मैं रोने लगी। मेरे पिता वहाँ नहीं थे।
“अम्मा, ऐसा क्यों किया? पापा ने मेरे साथ ऐसा क्यों किया? मेरे प्यारे दादाजी?”
मेरे दादाजी मृत्युशय्या पर थे और मुझे पता तक नहीं चला कि क्या हो रहा है। मैंने क्या पाप किया? मैं अपने प्यारे दादाजी को कम से कम आखिरी बार क्यों नहीं देख पाई?” आंसू नदी की तरह बह निकले। मेरी मां पर इन शब्दों का कोई असर नहीं हुआ।
“बाबू! मैंने उसे तुम्हें सूचित करने के लिए कहा था, लेकिन तुम अपने पिता को तो जानते ही हो।”
बहुत अच्छा। मैं क्या कर सकता था?
जब मैं अपने पिता से मिला तो मैंने कुछ नहीं पूछा और बिल्कुल भी बात नहीं की।
वह भी उसी तरह चुप था। शायद उसके 'अपराधी अंतरात्मा' की भावना ही उसे ऐसा व्यवहार करने पर मजबूर कर रही थी। मेरे घर लौटने के बाद, स्थानीय अखबार में पांडियन बैंक का एक विज्ञापन छपा। उसे देखकर उसने कहा, “बाबू! यह एक अच्छा मौका है। बैंक में क्लर्क की नौकरी के लिए एस.एस.एल.सी. पास होना ही काफी है। आपको अभी आवेदन कर देना चाहिए।”
वह तुरंत एक सफेद कागज और एक कलम ले आया। लेकिन मैं
उन्होंने हल्के-फुल्के अंदाज में विरोध जताया।
“अप्पा! पब्लिक यूनिवर्सिटी खत्म करने के बाद, मैं बीए करना चाहता हूँ और डॉक्टर बनना चाहता हूँ।”
प्रोफेसर साहब, कृपया मुझे इसी कॉलेज में पढ़ने की अनुमति दीजिए। अगर आप चाहें तो मैं यहाँ से रोज़ ट्रेन से आ-जा सकता हूँ।” मेरे ऐसा कहते ही वे क्रोधित हो गए।
“देई! तुम्हारे मन में क्या चल रहा है? जब तक तुम्हारे दादाजी थे
जब मैं जीवित थी, तब सब कुछ संभव था। अब मेरे पास एक पैसा भी नहीं है। मैं घर चलाने के लिए संघर्ष कर रही हूँ। घर की हालत समझे बिना तुम बकवास कर रहे हो। अब देखो! पांडियन बैंक में आवेदन भेजो और साक्षात्कार में शामिल हो जाओ। मैं तुम्हारे साथ चलूँगी। नहीं तो घर से निकल जाओ।

उन धमकी भरे शब्दों को सुनकर मेरी आँखों में तुरंत आंसू आ गए।
मैं ज़ोर से चिल्लाना चाहता था कि मेरे अच्छे अंक और पुरस्कार बेकार हैं, लेकिन उस समय मैं फॉर्म भरने और उसे डाक से भेजने के अलावा कुछ नहीं कर सकता था। पंद्रह दिनों के भीतर मुझे साक्षात्कार के लिए बुलाया गया, शायद मेरे असाधारण अंकों और योग्यता के कारण।

बैंक के प्रबंध निदेशक श्री एस.एन.के. ने मेरा साक्षात्कार लिया। सुंदरम। उनका विशाल शरीर और कर्कश आवाज मुझे डरा देती थी। मैंने उनके सामने सारे प्रमाण पत्र पेश किए और गर्व से अंग्रेजी में अपनी उपलब्धियों का वर्णन किया। मुझे देखकर वे जोर से हंसने लगे।
मैं आपको एक क्लर्क की नौकरी दूंगा। आप अगले सप्ताह ज्वाइन कर सकते हैं। आपका सारा काम मेरे लिए प्रमाणपत्रों और अंकों का कोई महत्व नहीं है। शुरुआती तीन महीने आप हमारे बैंक में बिना वेतन के प्रशिक्षु के रूप में काम करेंगे। शाखा प्रबंधक द्वारा आपकी मेहनत और कार्यकुशलता प्रमाणित होने के बाद, आपको अगले नौ महीनों तक चालीस रुपये का वेतन मिलेगा। उसके बाद, प्रबंधक से एक और प्रमाणपत्र और पिता से तीन हजार रुपये का बॉन्ड जमा करने पर, आपको उसके बाद से छियानवे रुपये का वेतन मिलेगा। अपने अंकों पर घमंड मत करो। उन्हें भूल जाओ!
यदि आप और आपके पिता इस वेतन और व्यवस्था से सहमत हैं, तो एक दस्तावेज़ पर हस्ताक्षर करें।
पत्र मुझे अभी दे दो। तुम अपने गाँव के पास स्थित कल्लदैकुरिची शाखा में शामिल हो सकते हो। वहाँ काम शुरू कर दो। फिर देखेंगे। ठीक है? चलो!" इतना कहकर उसने अपनी मेज पर लगी घंटी दबा दी।
कठिन परिस्थितियों के बारे में सुनकर मुझे निराशा हुई और मैंने यह जानकारी साझा की।
अपने पिता के साथ। "अप्पा! क्या मुझे यहाँ कम वेतन पर काम करना पड़ेगा? और पहले तीन महीनों में तो कोई आमदनी भी नहीं है। क्या हमें कहीं और नौकरी ढूंढनी चाहिए?"
लेकिन वह दफ्तर के अंदर बैठे व्यक्ति से कहीं अधिक कठोर था। "देई!"
हम जैसे लोगों को ऐसी नौकरी कौन देगा? बिना किसी झिझक के स्वीकार कर लो। एक साल तो पलक झपकते ही बीत जाएगा। फिर तुम्हें नब्बे रुपये का वेतन मिलेगा। क्या तुम्हें लगता है कि तुम्हें कलेक्टर की नौकरी मिलेगी? कल्लदैकुरिची पास ही है। पहले तीन महीने के लिए मैं तुम्हें चालीस रुपये दूंगा। तुम किसी के साथ कमरा शेयर कर सकते हो। अपने खर्चों पर नियंत्रण रखना। मैं कृष्णा अय्यर नाम के एक व्यक्ति को जानता हूं जो घर पर खाना परोसता है। तुम वहां खाना खा सकते हो। मैं अपने रिश्तेदार राजा अय्यर से कहूंगा कि तुम्हारे रहने के लिए एक आदर्श जगह ढूंढने में मदद करें।
मेरे पिता बिना कुछ समझने की कोशिश किए लगातार बड़बड़ाते रहे।
मेरे दिमाग में बहुत कुछ चल रहा था। उन्होंने एक कागज़ निकाला, उस पर ज़रूरी लिखा और हस्ताक्षर कर दिए। उन्होंने मुझसे भी हस्ताक्षर करने को कहा और फिर उसे तेज़ आवाज़ वाले डॉक्टर को देने को कहा।
मुझे नौकरी मिलने की ज़रा भी खुशी नहीं हुई। मेरा सीना भारी हो गया था और घर पहुँचने तक मैंने एक शब्द भी नहीं बोला। उस इंटरव्यू के बाद वे मुझे पास के एक होटल में ले गए।

इडली और डोसे से भरा स्वादिष्ट टिफिन भी मेरे स्वाद को जगा नहीं पाया।
कलियाँ। उसके बाद मेरे पिता ने मुझसे बात नहीं की, लेकिन उनका चेहरा चमक रहा था। शायद यही वजह थी कि उन्हें लगा कि एक साल बाद मेरी कमाई बढ़ जाएगी। 1957 में पचास रुपये अतिरिक्त बहुत बड़ी रकम थी। मैंने अपनी किस्मत को स्वीकार करने की कोशिश की। मैं हमेशा से प्रोफेसर बनना चाहता था। लेकिन मेरी किस्मत में सिर्फ एक मामूली क्लर्क बनना लिखा था। कम से कम मुझे शेर की मांद से दूर जाने की आजादी तो मिल गई। यही मेरे लिए एकमात्र सुकून था।
मेरी किस्मत अच्छी थी कि राजा अय्यर की मदद से मुझे रहने की जगह मिल गई।
घर छोटा था और मुझे प्रभु नाम के एक छात्र और पांडियन बैंक में काम करने वाले पद्मनाभन नाम के एक अविवाहित व्यक्ति के साथ रहना पड़ता था। अगले हफ्ते मुझे नौकरी का आदेश मिल गया। मैं अपने रूममेट्स के साथ रहने का आदी हो गया और खुश रहने की कोशिश करने लगा। मेरे पिताजी किसी के माध्यम से मुझे हर महीने चालीस रुपये भेजते थे। पिताजी की सलाह पर मैं कैंटीन/मेस में अच्छा खाना खाता था। कृष्णा अय्यर मेरे प्रति दयालु थे। उनकी एक सुंदर बेटी थी और वे दो साल बाद मुझे अपना दामाद बनाना चाहते थे। वे बातचीत के दौरान अक्सर इस बात का जिक्र कर देते थे, लेकिन मैं इस विषय में कोई दिलचस्पी नहीं दिखाता था।
मेरी अत्यधिक सावधानी के बावजूद भाग्य हमेशा मेरे साथ खेलना पसंद करता था।
प्रकृति। यह बदलाव मेरे रूममेट पद्मनाभ अय्यर के रूप में आया।
अध्याय-19
हताशा के बाद आशीर्वाद
उस घर में आए हुए मुझे दो महीने भी नहीं हुए थे। किस्मत ने अपना खेल खेला।
मुझे उस छोटे से खूबसूरत घर के आराम से दूर करने में वह और भी तेज़ होता जा रहा था। पद्मनाभन अविवाहित था। अचानक मुझे पता चला कि वह समलैंगिक है। एक रात करीब 11 बजे का समय था और मैं गहरी नींद में सो रही थी। उसी रात उसके घिनौने व्यवहार और इरादों का पर्दाफाश हो गया। मैं बेहद सदमे में थी और मैंने उसका हाथ छुड़ा लिया जो मुझे कसकर पकड़े हुए था और उस पर ज़ोर से चिल्लाई।
“महोदय! आपका व्यवहार बिलकुल भी अच्छा नहीं है। मैंने आपको इसलिए सम्मान दिया क्योंकि आप बैंक में एक ज्ञानवान वरिष्ठ लेखाकार हैं, लेकिन मुझे आपसे इस तरह के बुरे व्यवहार की उम्मीद नहीं थी। मैं कल यहाँ से जा रहा हूँ। अब कृपया मुझे अकेला छोड़ दें।”
तुरंत ही उसने पलटवार किया और अपने किए के लिए माफी मांगी। उसने भविष्य में सावधान रहने का वादा किया और मुझसे घर में रहने की विनती की। अगली सुबह, मैंने अपने दूसरे रूममेट प्रभु को अपने अनुभव के बारे में बताया। उसने माना कि एक महीने पहले उसे भी उससे ऐसा ही व्यवहार झेलना पड़ा था और वह घर छोड़ने के मेरे फैसले से पूरी तरह सहमत था। सौभाग्य से, हमें उसी दिन रहने के लिए एक जगह मिल

गई। वह बैंक के पास थी और किराया सिर्फ पांच रुपये था। वहां बिजली बोर्ड में काम करने वाला कुंजन नायर नाम का एक केरलवासी रहता था। वह कम्युनिस्ट था और उसने हमारा खुले दिल से स्वागत किया। "साथियों! मुझे हर महीने बीस रुपये देने में बहुत मुश्किल हो रही थी और मैं सोच रहा था कि आप लोग मेरे साथ जगह साझा करें। मुझे अपनी तनख्वाह से अपने परिवार को भी पैसे भेजने पड़ते हैं। आज तो भगवान गुरुवायुरप्पन ने ही मेरी यह इच्छा पूरी की है।"

हम अय्यर के साथ रकम का निपटारा करके बहुत खुश थे और वहां चले गए।

उसी दिन नए स्थान पर... प्रभु पद्मनाभ अय्यर के अत्याचारों से बचकर राहत महसूस कर रहे थे और उन्होंने इस राहत के लिए भगवान मुरुगन को धन्यवाद दिया।

ऊपर की मंजिल पर नया कमरा विशाल और हवादार था, जिसमें दो

खिड़कियाँ तो थीं, लेकिन शौचालय और स्नानघर बहुत छोटे थे। दोनों नीचे की मंजिल पर स्थित थे। लेकिन हमें इससे कोई आपत्ति नहीं थी।

अगले ही दिन, हमारे रूममेट कुंजन नायर ने हम पर ज़ोर-ज़ोर से बोलने और हंसने के लिए चिल्लाया। "साथियों! तुम दोनों का इस तरह ज़ोर-ज़ोर से बोलना खतरनाक है। इस घर की मालकिन नीचे रहती हैं और वो बहुत ताक-झांक करने वाली और सख्त मिजाज़ की हैं। वो तुम्हारे बारे में बुरी-बुरी बातें फैला देंगी। मेरे एक दोस्त ने मुझे गलत समझा था, और इस तरह मेरा अनुभव मेरे साथ हो चुका है।" तब से हम दोनों सावधान हो गए।

लेकिन, एक दिन सुबह करीब 8 बजे, मैं प्रभु से अपने बारे में यूं ही मजाक कर रहा था।

बैंक मैनेजर। मैं उनके सांवले रंग और धूम्रपान की आदत का मज़ाक उड़ा रहा था। मैंने कहा, "उनकी बहन एक प्रसिद्ध पंडित और उपन्यासकार हैं, और उनका चेहरा उनके ज्ञान की चमक से दमकता है। लेकिन, इस आदमी का चेहरा, देखो, कोयले की तरह काला दिखता है।" इन शब्दों का असर शाम तीन बजे के बाद दिखने लगा। प्रभु ज़ोर से हँसे जैसे कि यह कोई बड़ा मज़ाक हो, हालाँकि नायर ने हमें चेतावनी दी थी कि बैंक मैनेजर का मज़ाक न तो बोलें और न ही हँसें। उन्होंने कहा, 'दीवारों के भी कान होते हैं।'

उसी दिन, दोपहर के भोजन के बाद, कार्यालय में मुझे प्रबंधक ने बुलाया और अभिवादन किया। "अरे! आइए, मेरे महान पंडित जी! मैं अपनी बहन से भी अधिक सांवली हूँ और मुझे धूम्रपान की आदत है। क्या किया जा सकता है? क्या मैं सिर्फ इसलिए अपना रंग और अपनी आदत बदल सकती हूँ क्योंकि आप मेरे बारे में ऐसा सोचते हैं?"

इस अचानक पूछे गए सवाल ने मुझे एक पल के लिए स्तब्ध कर दिया। हे भगवान! नायर की चेतावनी, जिसे मैंने अनदेखा कर दिया था, सच हो गई थी। मेरी उपहासपूर्ण और अवांछित टिप्पणियाँ उसके कानों तक पहुँच गई होंगी। मैं तुरंत उसके चरणों में गिर पड़ा और उससे क्षमा माँगी।

"माफ़ कीजिए महोदय! अनजाने में मैंने एक छोटे बच्चे की तरह व्यवहार किया। मुझे पता नहीं था।"

"आप वहां थे। कृपया मुझे क्षमा कर दीजिए!" वाक्य खत्म करते-करते मैं बुरी तरह पसीने से भीग चुका था। मेरे माफी मांगने के तरीके ने शायद उन्हें प्रभावित किया होगा। उन्होंने मुझे उठाया और बोले।
“ए.आर.एस! [बैंक में मुझे इसी नाम से पुकारा जाता था] दरअसल, मैं आपको एक खुशखबरी देने आपके घर आया था। आप मेरे घर से सिर्फ दो घर छोड़कर रहते हैं। इसलिए मैंने सोचा कि आपसे मिलकर बताऊं, लेकिन सीढ़ियां चढ़ते समय मैंने आपकी बातें सुन लीं। आपने मेरे बारे में बहुत ही बुरी टिप्पणी की। इसलिए मैं दुखी होकर वापस लौट आया। अब से दूसरों के बारे में पीठ पीछे बुराई मत करना। इसे एक चेतावनी समझो। अभी आपको जीवन में आगे बढ़ना है। आप होशियार हैं, मेहनती हैं और इसीलिए मैंने प्रबंध निदेशक को आपकी नौकरी जल्द पक्की करने के लिए रिपोर्ट दी थी। मैं आपको इस महीने से चालीस रुपये का वेतन देने का आदेश लेकर आ रहा था। मैं इसे खुद देना चाहता था, लेकिन आपकी बुरी बातें सुनते ही मेरा उत्साह खत्म हो गया। आगे सावधान रहना। यह रहा आपका आदेश।” उनके शब्दों के अच्छे चुनाव और विनम्रता ने मेरी आंखों में आंसू ला दिए।
“महोदय! कृपया बड़े दिल से मुझे क्षमा कर दीजिए। मैं जीवन में कभी ऐसी गलती नहीं दोहराऊंगा और आगे कभी किसी के बारे में बुरा नहीं बोलूंगा।” मेरी दयनीय हालत देखकर उन्होंने मुझे क्षमा कर दिया। उन्होंने मुझे अपनी डेस्क पर वापस जाकर काम शुरू करने को कहा।
उपरोक्त अनुभव और इस बात के मन में उठने वाले डर ने कि मेरी मेहनत और पढ़ाई के लिए किए गए प्रयासों से मुझे इस मामूली नौकरी के अलावा कुछ नहीं मिला, मुझे बीमार कर दिया। लेकिन मेरे दोस्तों ने मेरी देखभाल की और मुझे उचित दवाइयाँ और अन्य आवश्यक वस्तुएँ मुहैया कराईं। घर की मालकिन ने भी दयालुता दिखाते हुए मुझे कुछ दिनों तक दलिया और रोटी दी। मैं तीन दिनों में धीरे-धीरे ठीक हो गया और आसपास के लोगों की इस दयालुता के लिए आभारी था। मैंने तहे दिल से घर की मालकिन और उनकी छोटी बेटी का शुक्रिया अदा किया और उन्हें बताया कि मेरे प्रति उनकी चिंता के लिए मैं उनका बहुत आभारी हूँ। पूरी तरह ठीक होने के बाद, मैं प्रभु के साथ कल्लदैकुरिची पेरुमल मंदिर गया। मैं वहाँ काफी देर तक बैठकर विष्णु सहस्रनाम का जाप करता रहा। मुझे अपने भीतर आनंद की लहर महसूस हुई। उस शाम के छह दिन बाद, मैं गायत्री जप करने बैठा। अचानक, मेरे मन में मेरे बाबा जी का दर्शन हुआ।
“बाबू! अपने सभी अप्रिय अनुभवों को अपने स्वयं के कर्मों का फल समझो। सब कुछ तुम्हारे भले के लिए ही है। समय बीतने के साथ तुम्हारी परेशानियाँ दूर हो जाएँगी। जब भी तुम विचलित हो जाओ, मेरी छवि को याद करना। तुम्हारी समस्याओं का समाधान शीघ्र ही मिल जाएगा।”
उनके शब्दों ने मुझे शांत किया और अपार शांति प्रदान की। “गुरुजी, अब से मेरा जीवन आपके हाथों में है!” ये शब्द मेरे हृदय से निकले। मैंने उन्हें प्रणाम किया और प्रतिज्ञा की कि मैं अब कभी भी अप्रिय घटनाओं से विचलित नहीं होऊँगी और पूर्णतया उनके चरणों में शरण लूँगी।
कुछ महीने बीत गए। जल्द ही, मैंने अपने खर्चों को अच्छे से संभालना सीख लिया और हर महीने अपने पिता को पाँच रुपये भेजने लगा। मैं नियमित रूप से पत्र भी लिखता था और बाद में मुझे पता चला कि मेरे पिता

मुझसे पत्र और पैसे पाकर बहुत खुश और गौरवान्वित होते थे। उन्होंने अपने सभी दोस्तों को इसके बारे में बताया था, जिसका पता मुझे दिवाली के दौरान घर लौटने पर चला।
अपने पिता से पहली बार प्रशंसा सुनकर मैं अत्यंत प्रसन्न हुआ। उन्होंने पैसे बचाने के मेरे प्रयासों की सराहना की और मुझे अगले महीने से चालीस रुपये अपने पास रखने को कहा। उन्होंने मुझे पर्याप्त भोजन करने की सलाह भी दी ताकि मेरा दुबला-पतला शरीर ठीक रहे। उन्होंने कहा, 'अच्छी तस्वीर के लिए अच्छा फ्रेम ज़रूरी है।' यह तमिल में हमारे स्वास्थ्य का ध्यान रखने के लिए एक लोकप्रिय कहावत है।
पिता के मुंह से ऐसे स्नेह भरे शब्द सुनकर मैं आश्चर्यचकित रह गया और खुद को चुटकी काट ली। वे समझ गए और मेरी ओर मुस्कुराए। “बाबू, देखो! ये तो मैं कह रहा हूँ। तुम्हारी सेहत हमारे लिए सबसे ज़्यादा ज़रूरी है। दो महीने में तुम्हारी नौकरी पक्की हो जाएगी और तुम ज़्यादा कमाने लगोगे।” उन्होंने मुझे आशीर्वाद दिया।
दिवाली के उत्सव के बाद, मैं खुशी-खुशी अपने काम पर लौट आया।
शाम को मंदिर में मेरी मुलाकात मेरे दोस्त, मेरे बैंक अकाउंटेंट, राजगोपाल से हुई। यह एक गुप्त मुलाकात थी। उन्होंने धीमी आवाज़ में कहा, “ए.आर.एस.! मुझे कुछ कहना है। कृपया यह बात अपने तक ही रखना। हमारे बैंक मैनेजर उतने अच्छे इंसान नहीं हैं जितना तुम सोचते हो। उन्होंने तुम्हें पूरी तरह से माफ नहीं किया है। उन्होंने तुम्हारी छवि खराब की है और तुम्हारा तबादला किसी और जगह करने का सुझाव दिया है। तैयार रहो। तुम्हारा तबादला दस दिनों के भीतर हो सकता है। बिना विरोध किए इसे स्वीकार कर लेना। हमारे मैनेजर एक खतरनाक सांप की तरह हैं। चूंकि कोई भी पत्र मेरी जानकारी के बिना मुख्यालय तक नहीं पहुंच सकता, इसलिए मुझे ये सब पता चल गया है। मुझे पूरा विश्वास है कि तुम जहां भी जाओगे, सफलता पाओगे। इसलिए, हिम्मत रखो!” इतना कहकर उन्होंने स्नेहपूर्वक मेरी उंगलियां पकड़ लीं।
उनकी ये सारी बातें सुनकर मेरा मन जड़ से हिल गया।
और मुझे यह जानकर उतना ही आश्चर्य हुआ कि इस दुनिया में ऐसे भयानक लोग भी मौजूद हैं। राजगोपाल की चेतावनी के अनुसार, एक शनिवार को, विषैले साँप ने नाराज़ चेहरा बनाया और मेरे सामने एक पत्र निकाला।
“ए.आर.एस! मुझे आपको यह तबादला आदेश देते हुए दुख हो रहा है। हमारे प्रबंध निदेशक ने आपका तबादला एट्टायपुरम में कर दिया है। यह एक अच्छा गाँव है। ईश्वर आपको यह सहन करने की शक्ति दे। ठीक है? शुभकामनाएँ! मजबूत रहो!”
हालांकि उसके चेहरे पर दयालु भाव दिख रहे थे, लेकिन मुझे उसमें एक ज़हरीली प्रवृत्ति नज़र आ रही थी। अंदर ही अंदर मुस्कान फैल रही थी।

अध्याय-20
मेरी नौकरी चली गई

मैंने अपना सामान पैक किया, दोस्तों को अलविदा कहा और अपनी यात्रा शुरू की।
अगले दिन घर वापस जाते समय, मेसर्स अय्यर, कृष्णन ने मधुर आवाज में, लेकिन उदास चेहरे के साथ मुझसे बात की।
“बाबू साहब! मुझे लगा था कि आप यहाँ स्थायी रूप से रह जाएँगे।”
अधिकारी के पद पर पदोन्नति और वेतन वृद्धि... मेरी यही इच्छा थी कि तुम मेरी बेटी से शादी करो। मैंने इस बारे में तुम्हारे पिता से भी बात की थी। अब तो सब कुछ मेरे लिए एक सपने जैसा हो गया है।
मैं जवाब नहीं दे सका, लेकिन मैंने चुपके से उनकी बेटी की आँखों में देखा और उसे 'अलविदा' कहा। उसने उदास होकर 'हाँ' कहा और मुझसे उनके साथ संपर्क में रहने को कहा।
अपनी माँ को देखने के बाद, मुझे नहीं पता कि मेरे अंदर क्या हुआ।
मैं रोने लगा और मेरी माँ ने मुझे दिलासा देने की कोशिश की। “चिंता मत करो, बाबू! सोचो कि सब कुछ तुम्हारे भले के लिए है। अगर तुम अलग-अलग जगहों पर जाओगे, तो तुम्हें और अनुभव मिलेगा। है ना?” मेरे पिताजी भी यही महसूस करते थे।
“बाबू! अगर तुम वहीं रहते, तो वो मैनेजर तुम्हारा करियर ज़रूर बर्बाद कर देता। कम से कम तबादला तो सिर्फ़ एट्टायपुरम में हुआ है। तुम्हारे प्रिय कवि सुब्रमण्यभारती का जन्मस्थान। यहाँ से ज़्यादा दूर नहीं है। इसलिए, हिम्मत रखो।”
पांच दिन बाद, भारी मन से, मैं एट्टायपुरम के लिए रवाना हो गया। हालाँकि मैं
मुझे डर था कि वहाँ क्या हो सकता है, इसलिए मैंने यह सोचकर खुद को तसल्ली दी कि मैं भारती के घर, उनके मणिमंडपम और अन्य महत्वपूर्ण स्थानों पर जा सकती हूँ। लेकिन मेरी उम्मीदें जल्द ही टूट गईं। बैंक के लोग मेरे प्रति दयालु थे, लेकिन जिस भोजनालय में उन्होंने मुझे नियमित भोजन करने का सुझाव दिया, वहाँ का अनुभव मुझे अच्छा नहीं लगा। खाना नमकीन था, घी और छाछ बहुत घटिया गुणवत्ता के थे और उनमें बदबू आ रही थी। मैं खुद को रोक नहीं पाई और तीन दिन बाद मैंने भोजनालय की मालकिन (मामी या आंटी) से इस बारे में पूछा।
“मामी! मुझे घी नहीं चाहिए, लेकिन क्या आप छाछ और सब्ज़ियाँ ज़्यादा स्वादिष्ट नहीं बना सकतीं? मेरी माँ बहुत अच्छा खाना बनाती हैं और मुझे हमेशा अच्छा खाना खाने की आदत है।” चेहरे पर मुस्कान लिए मैंने अपनी बात को सबसे अच्छे तरीके से समझाने की कोशिश की। लेकिन, बात बिगड़ गई।
“अरे! जो बीस रुपये तुम दे रहे हो, उससे बस इतना ही मिलेगा। अगर तुम्हें अच्छे खाने की इतनी ही ज़रूरत है, तो अपनी माँ को बुला लो और अपने साथ रहने को कहो। यहाँ पानी की कमी है। अरुमुगकोनार के अलावा हमारे पास दूध का कोई और स्रोत नहीं है। यह एक छोटा सा गाँव है। हालात के हिसाब से ढलने की कोशिश करो। मुझसे चालाकी करने की कोशिश मत करो।”
उसके मुंह से ये शब्द तीखे स्वर में निकले। इसलिए मैं कुछ बदल नहीं सका और जैसे-तैसे एक महीने तक गुजारा किया। मैंने अपने पिता को खाने की गुणवत्ता के बारे में बताया और कहा कि मेरी सेहत पर बहुत जल्द

बुरा असर पड़ सकता है। चूंकि मेरे दोस्त मांसाहारी थे, इसलिए वे दूसरी जगहों पर खाना खा रहे थे। मैंने अपने पिता से कहा कि मुझे कम से कम शाम को कहीं और अच्छा टिफिन खाने के लिए अतिरिक्त पैसों की जरूरत है।
मेरे पिता ने जवाब दिया कि मुझे उन्हें कोई पैसा भेजने की ज़रूरत नहीं होगी।
और मैं उस रकम का इस्तेमाल पिल्लई मेस में अच्छा खाना खाने के लिए कर सकता हूँ, जिसे वह किसी न किसी तरह जानते हैं, और अपनी सेहत सुधारने के लिए कर सकता हूँ। मैं उनके दयालु जवाब से हैरान रह गया; जिस तरह से उन्होंने चिंता से लिखा था, वैसा मैंने उनसे पहले कभी अनुभव नहीं किया था। मेरे मन में एक काव्यात्मक विचार आया। 'काँटेदार तने के दूसरे सिरे पर कोमल पंखुड़ियों वाला गुलाब होता है'। तुरंत ही मैंने अपने बाबा जी की छवि को याद किया और उनसे प्रार्थना की कि वे मेरे जीवन को सही राह पर ले चलें और इसे सुचारू रूप से आगे बढ़ाएँ।
दो दिन बाद, शाम को मैं बाहर देखने गया।
भरथियार का घर और मणि मंडपम। भरथी की सुंदर और आकर्षक कविताओं की हस्तलिखित प्रतियां देखकर मुझे बहुत प्रसन्नता हुई। अक्षर साफ-सुथरे ढंग से लिखे गए थे, उनके बीच पर्याप्त जगह छोड़ी गई थी। कुछ छंदों ने मेरा ध्यान आकर्षित किया। मैंने उन्हें उत्साहपूर्वक याद करने का प्रयास किया। जी हां, 'अच्छा सोचो, सद्गुणों का पालन करो, दृढ़ इच्छाशक्ति रखो और शुद्ध ज्ञान प्राप्त करो' जैसे गहरे अर्थ को समझकर, मैंने एट्टायपुरम में जीवनयापन के लिए आवश्यक कुछ महत्वपूर्ण मूल्यों को सीखा।
यह जानकर राहत मिली कि पिल्लई द्वारा संचालित होटल में अच्छी गुणवत्ता का भोजन मिलता था और जब मेरे पास पैसे खत्म हो गए, तो मेरे दोस्तों ने दयालुता दिखाते हुए मुझे आर्थिक सहायता प्रदान की और मुझे साहसी और खुश रहने के लिए प्रोत्साहित किया।
“ए.आर.एस! अगर सकारात्मक पक्ष देखें तो कुछ चीजें सस्ती मिल रही हैं। आप हर दिन केले खा सकते हैं।”
उनकी दिखाई गई दया और समर्थन के पीछे कोई और ही मकसद था, जिसका मुझे बाद में ही पता चला!
जी हाँ! एक यूनियन (श्रमिकों की) थी, जो बैंक प्रबंधन के खिलाफ गुप्त रूप से चलाई जा रही थी। बैंक श्रमिकों का शोषण कर रहा था, उनसे लंबे समय तक काम करवा रहा था और कम वेतन दे रहा था। यूनियन में शामिल होने का आवेदन पत्र मात्र पचास पैसे का था। उन्होंने मुझे यूनियन में शामिल होने के लिए मना लिया, हालाँकि मैंने शुरू में मना किया था। मैंने कारण बताया कि मैं एक अस्थायी क्लर्क था और अगर प्रबंधन को मेरे शामिल होने के बारे में पता चला तो सबसे पहले मुझे ही बर्खास्त किया जाएगा। लेकिन, उन्होंने मेरी बात को सिरे से खारिज कर दिया और कहा कि लगभग 2000 अस्थायी क्लर्क यूनियन में हैं। उन्होंने सूची भी दिखाई। अगर सभी मिलकर लड़ाई लड़ें, तभी हमें वेतन वृद्धि, दिवाली बोनस और कम काम के घंटे मिल सकते हैं। उन्होंने यह भी कहा कि जानकारी गुप्त रखी जाएगी। मैंने उनकी बात पर विश्वास कर लिया!
उनकी चालाकी भरी बातों पर विश्वास करके मैंने शुल्क का भुगतान किया और फॉर्म पर हस्ताक्षर कर दिए।

इसलिए मैंने यूनियन में शामिल होने पर सहमति जताई। अपनी सूझबूझ का इस्तेमाल करते हुए, मैंने बैंक प्रबंधन के खिलाफ तमिल में चालीस नारे भी लिखे।

दो महीने के भीतर ही मुझे अपने इस काम का बहुत अच्छा इनाम मिला! रात में होने वाली गुप्त बैठकें, नारे लगाना और मैनेजमेंट के खिलाफ विचारों पर चर्चा, हमारे ही एक मुखबिर के जरिए सबके सामने आ गई। किसी तरह एट्टायपुरम मैनेजर को इसकी जानकारी मिल गई। जल्द ही यह खबर मदुरै के मैनेजर तक पहुंच गई। उन्होंने रात में अचानक बैंक का दौरा किया और वहां जमा हुए सभी लोगों को, जिनमें मैं भी शामिल था, बुलाया। उन्होंने गुस्से में चिल्लाया, जिससे मेरे समेत पांच अस्थायी कर्मचारी उनके पैरों पर गिर पड़े और माफी मांगने लगे। बाद में हमें पता चला कि वे शांत नहीं हुए थे। चूंकि मैं मैनेजमेंट के खिलाफ नारे लिख रहा था, इसलिए बर्खास्तगी का आदेश सबसे पहले मुझे मिला। जब मैंने मैनेजर से आदेश लिया, तो मुझे ऐसा लगा जैसे वह मेरे सामने आया दूसरा जहरीला सांप हो।

मुझे डर था कि मेरा भाग्य और भी बदतर होता जा रहा है। मुझे कोई रास्ता समझ नहीं आ रहा था।

मैंने अपने परिवार, विशेषकर अपने पिता को यह खबर बताने का मन बना लिया। लेकिन, मन ही मन में यह सोचकर राहत मिली कि मुझे अपनी माँ की ममता और स्वादिष्ट भोजन मिलेगा।

जब मैं घर वापस आई, तो मैंने रोते हुए सब कुछ बताया।

मेरे पिताजी दुखी थे, लेकिन उन्होंने मुझे दिलासा देने की कोशिश की। "चिंता मत करो बाबू! मैंने तुम्हारे कल्लदैकुरिची के दोस्त रामासुब्बू से छंटनी के बारे में सुना। उन्होंने सब कुछ समझाया और कहा कि चिंता मत करो, क्योंकि काम के बोझ और लंबित कार्यों के कारण घर भेजे गए सभी अस्थायी क्लर्कों को जल्द ही वापस बुला लिया जाएगा। उन्होंने यह भी कहा कि अधिक खर्च के कारण प्रबंधन नए लोगों को भर्ती करने में हिचकिचाएगा। उन्होंने यह बात अपने मुख्यालय के एक करीबी दोस्त से सुनी थी। इसलिए हिम्मत मत हारो। सबसे पहले, तुमने यूनियन क्यों ज्वाइन की? जिस बैंक से तुम्हें वेतन मिलता है, उसके खिलाफ नारे लगाना ठीक नहीं है! तुम्हारे शरारती दोस्तों के बहकावे में आकर तुम्हारा दिमाग कहाँ चला गया था?" उन्होंने मुझे डांटा।

उसके बाद, मैंने जो हुआ उसे स्वीकार कर लिया और माँ के स्नेह का आनंद लिया। मैं उन्हें और अपने भाइयों को यह दिखाकर चिढ़ाता और अभिनय करता था कि मैं दोपहर के भोजन के दौरान नाक बंद करके छाछ और घी कैसे खाता था। इससे माँ और मेरे भाई हँसते थे। वे मेरे साथ रहकर भी खुश होते थे, हर रात मेरी असाधारण कल्पना से बनी और कुछ हद तक वास्तविक घटनाओं से भरी नई-नई कहानियाँ सुनते थे।

मेरे पिता ने रामासुब्बू की बात मानकर मुझे कहीं भी आवेदन करने के लिए दबाव नहीं डाला, क्योंकि उन्हें लगा कि बैंक में मुझे उसी पद पर नियुक्त कर दिया जाएगा। इससे मुझे कुछ समय के लिए राहत मिली। लेकिन, मेरी नियति मुझे एक अलग ही बुरे रास्ते पर ले गई, यानी रेल की पटरियों पर।

उस घटना का एकमात्र कारण वेम्बु मामी (चाची) और उनकी बेटी सीता थीं, जो किसी न किसी रूप में हमसे दूर के रिश्तेदार थीं! मैं आने वाले अध्याय में विस्तार से बताऊंगा कि मैंने रेलवे ट्रैक पर सिर रखकर लेटने

जैसा चरम कदम क्यों उठाया और मेरे गुरु बाबा जी ने उस कठिन समय में मेरा मार्गदर्शन या सहायता क्यों नहीं की।

अध्याय-21

एक रहस्यमयी आवाज से आदेश!

ओह! क्या मैंने यह कहा था कि मेरे गुरु बाबा जी ने मुझे मेरी चरम स्थिति से नहीं बचाया?

निर्णय? क्षमा करें! मैं पूरी तरह गलत था। हालांकि महान योगी और संत शुरू में कुछ समय तक हमारे कर्मों के फलने-फूलने का इंतजार करते हैं, लेकिन जब वे देखते हैं कि हमारी आस्था और भक्ति अटल और सच्ची है, तो वे हमें प्रकृति के नियम के विरुद्ध कर्मों के चंगुल से मुक्त कर देते हैं। यह बात मुझे बाद में समझ आई। घर लौटने पर मुझे कोई नौकरी नहीं मिली, इसलिए मैंने दो सप्ताह तक घर के कामों में माँ की मदद की। रात में पढ़ाई में मदद करके मैंने अपने भाइयों का भी ध्यान रखा। मेरे पिता को मेरी नौकरी की कोई चिंता नहीं थी और उन्होंने मुझे अपनी मर्जी से जीने दिया। दो सप्ताह बाद, एक सोमवार को, मेरे पिता की चचेरी बहन घर आई और उसने एक अनुरोध रखा।

“रामजी! मेरी बेटी को कलेक्टर कार्यालय में हिंदी शिक्षिका के पद के लिए साक्षात्कार के लिए बुलाया गया है। यह तिरुनेलवेली में है और मुझे उसे अकेले भेजने में डर लग रहा है। अगर आप बाबू को उसके साथ भेज देंगे, तो मुझे खुशी और राहत मिलेगी। सीता को भी अच्छा लगेगा।”

“तो क्या हुआ वेम्बु! बाबू घर पर खाली बैठे हैं। वो सीता के साथ जा सकते हैं।” सीता की बात मानकर मेरे पिताजी ने मुझे सारी जानकारी दी। तय हुआ कि यात्रा और खाने का खर्च सीता उठाएगी। हालांकि वो मुझसे तीन महीने बड़ी थी, हम बचपन के दोस्त थे और एक-दूसरे को खूब चिढ़ाते थे।

तो, तिरुनेलवेली की यात्रा हंसी-मजाक से भरपूर और आनंदमय बन गई। जल्द ही हम कलेक्टर कार्यालय पहुंचे, जहां भारी भीड़ थी। हिंदी और संस्कृत शिक्षकों के पदों के लिए 158 उम्मीदवारों ने आवेदन किया था। कई अधिकारियों द्वारा साक्षात्कार लिए जाने के बावजूद, सीता की बारी दोपहर दो बजे तक नहीं आई। अंत में, एक क्लर्क ने दोपहर के भोजन की घोषणा की और शेष उम्मीदवारों को भोजन करने और बाद में इकट्ठा होने के लिए कहा। सीता बाहर आईं और मुझे दोपहर के भोजन के लिए ले गईं।

हालांकि घंटों तक एक ही जगह बैठे रहना बहुत उबाऊ था, फिर भी मुझे
शिकायत करने का कोई कारण नहीं था क्योंकि मेरे पिताजी की इच्छा थी कि सीता की मदद की जाए।

दोपहर के भोजन के बाद, मैं उसी जगह वापस आ गया, यह सोचकर कि सीता की बारी जल्दी आएगी और हम जा सकेंगे। ऊब के मारे मैं अपने सिर के ऊपर लगे पेड़ के पत्ते गिनने लगा। समय तेजी से बीत रहा था, लेकिन पाँच बजे तक सीता का कोई अता-पता नहीं था। मैं और नहीं बैठ सका और कार्यालय की चारदीवारी के किनारे टहलने का फैसला किया। चारदीवारी के किनारे-किनारे घूमने का मेरा यह फैसला एक बड़ी गलती साबित हुआ।

शाम करीब 5:30 बजे मैं उसी जगह वापस आया। उसका कोई अता-पता नहीं था। मैंने उसे ढूंढते हुए चारों ओर चक्कर लगाया, लेकिन कोई फायदा नहीं हुआ। आखिरकार, मैंने हिम्मत जुटाई और एक क्लर्क से पूछने के लिए दफ्तर के अंदर गया। मैंने उसे बताया कि मैं सीता नाम की एक उम्मीदवार के साथ आया था और मुझे वह नहीं मिली। क्लर्क ने मेरी तरफ देखा और व्यंग्य से कहा...

“ओह! क्या तुम ही उसके साथ आए थे? उसकी बारी पाँच बजे खत्म हो गई और वह तुम्हें हर जगह ढूंढ रही थी। वह लगभग रोने ही वाली थी। उसने मुझे बताया कि अगर तुम उसके बारे में पूछने आओ तो उसे बता देना कि वह घर वापस जा रही है। उसने तुम्हें भी घर वापस आने के लिए कहा है। तुम तो बड़े अच्छे साथी हो!! हा हा!” उसने मुझे चिढ़ाया और अपना काम फिर से शुरू कर दिया।

घबराहट से भरी हुई, मुझे यह बात बुरी तरह से समझ आ गई कि इधर-उधर घूमने का मेरा प्रयास पूरी तरह से विफल हो गया था। मुझे सबसे ज़्यादा डर अपने पिता का सामना करने से लग रहा था। घर से निकलने से पहले, मेरी माँ ने मुझे किसी भी आपात स्थिति में इस्तेमाल करने के लिए कुछ पैसे दिए थे।

मेरे मन में तरह-तरह के विचार उमड़ रहे थे। ‘क्या सीता में ज़रा भी अक्ल है? क्या वो थोड़ी देर इंतज़ार नहीं कर सकती थी? वो क्या सोच रही थी? क्या उसे समझ नहीं आ रहा था कि मैं पूरे समय वहाँ ऊबकर बैठी थी?’ मैं खुद से यही बातें कर रही थी। थकी हुई सी मैं उसे ढूंढने बस स्टैंड की ओर भागी। तब करीब 6:30 बज रहे थे और मैं वीरवनल्लूर जाने वाली सभी बसों में चढ़-उतर रही थी। मैं वहाँ खड़ी उलझन में थी और वेम्बु मामी और उनकी बुरी बेटी की वजह से ऐसी मुसीबत में फँसने के लिए अपनी किस्मत को कोस रही थी। ये सब मेरे पिता की वजह से था। हर सोमवार मेरे लिए बुरा दिन होता था।

आखिरकार, मैं बस में सवार होकर सीधे सीता के घर चली गई। सीता ने समझ लिया था कि मुझे बोरियत हो रही है क्योंकि खाना खाते समय मैंने इंतज़ार करने की शिकायत की थी। उन्हें लगा कि मैंने घर वापस जाने का फैसला कर लिया है। सीता की माँ ने बताया कि मेरी गलती थी कि मैं उसी जगह पर नहीं थी जहाँ मैं पहले थी। वे दोनों मेरे घर गईं और मेरे पिता को मेरे बारे में चिंता न हो इसलिए उन्होंने सब कुछ समझा दिया। वेम्बु मामी ने मुझे भविष्य में सावधान रहने और अपनी ज़िम्मेदारी से मुंह न मोड़ने की चेतावनी दी।

मैंने यह निष्कर्ष निकाला कि वे दोनों महिलाएं स्वभाव से अहंकारी और स्वार्थी थीं। अपना काम पूरा होने तक ये लोग किसी भी हद तक झुक जाते हैं और फिर मुसीबतों से बचने के लिए दूसरों को दोष देते हैं।

मन ही मन गुस्से से बड़बड़ाते हुए मैं घर में दाखिल हुआ। आमतौर पर,

उस समय के आसपास, मेरे पिता पड़ोसी के घर के सामने वाले आँगन में बैठे दुनिया भर की महत्वपूर्ण खबरों के बारे में बातें करते रहते थे। लेकिन उस दिन, वह घर के अंदर बैठे मुझ पर झपटने का इंतजार कर रहे थे।

“देई! क्या तुम खुद को बड़ा राजा समझते हो? क्या तुम एक जगह रुककर उसका इंतज़ार नहीं कर सकते? इधर-उधर क्यों घूम रहे थे? तुमने मेरी बदनामी कर दी। बेचारी सीता! वो थकी-हारी रोती हुई घर लौटी। तुम किसी काम के लायक नहीं हो। छोटी-मोटी मदद भी ठीक से नहीं कर सकते!” वह चिल्लाता रहा और मेरे

गालों और पीठ पर मारता रहा। “वेम्बु ने मुझ पर बहुत इल्ज़ाम लगाए हैं और मुझे शर्म आ रही है। ये सब तुम्हारी गलती है। जल्दी नौकरी ढूंढो और इस घर से निकल जाओ।”
इससे पहले कि मेरी और पिटाई होती, मेरी मां दौड़कर आई और उसने उसके हाथ पकड़कर मेरी रक्षा की। “बाबू बड़ा हो गया है और उसे इस तरह पीटना ठीक नहीं है। अगर उसे कुछ हो गया तो हम क्या करेंगे? ये तो बस सीता की गलती थी। क्या वो बाबू के वापस आने तक इंतज़ार नहीं कर सकती थी? बड़ी शरारती लड़की है। उसे छोड़ दो। उसे और मत पीटो! मैं उसका ख्याल रखूंगी।” मेरी माँ ने मुझे गले लगाया और अंदर ले गईं। “तुम्हारे अत्यधिक लाड़-प्यार के कारण ही वो बिगड़ रहा है।” उसने धीरे से बुदबुदाते हुए अपने दोस्त के घर चला गया। मेरी माँ ने मुझे प्याज़ के सांभर के साथ दही-चावल खिलाकर मेरी भूख मिटाई। उस पल मुझे एहसास हुआ कि ‘एक दयालु माँ कभी अपनी ज़िम्मेदारी से मुंह नहीं मोड़ती’। खाते-खाते, मैं रोते-रोते उनसे बोला, “अम्मा! मैं किसी काम का नहीं हूँ। अगर मुझे नौकरी वापस नहीं मिली, तो मैं मर जाऊँगा।” मेरी माँ काँप उठीं और कोमल उंगलियों से मेरा मुँह बंद करते हुए बोलीं, “बाबू, ऐसे मत बोलो! ये तो मेरे ऊपर अंगारे फेंकने जैसा है। तुम मेरे प्यारे बेटे हो... तुम्हारी तनख्वाह कम होने के बावजूद तुमने घर पैसे भेजे। भला कौन ऐसा करेगा! उन दोनों औरतों का दिल अच्छा नहीं है। अब से उनके घर मत जाना। उन्होंने झूठ बोलकर तुम्हारा नाम खराब कर दिया है।” उन्होंने प्यार से मेरी आँखें पोंछीं।

मुझे पता था कि वह मेरा साथ देने और मेरे दिल की बात समझने की कोशिश कर रही थी। उसके बिना जीवन के बारे में सोचना भी डरावना था। थकान के कारण मैं रात 9 बजे बिस्तर पर गया, एक किताब उठाई और मन बहलाने के लिए पढ़ने की कोशिश की। जल्द ही मुझे नींद आ गई। पिता के क्रोध के डर से मेरे भाई मुझसे बात करने या मुझे सांत्वना देने के लिए मेरे पास नहीं आए।

हमेशा की तरह, मैं सुबह 5 बजे उठ गया। मेरी माँ सामने का आंगन साफ करने और चावल के आटे से कोलम (रंगोली) बनाने के लिए बाहर गई थीं। जब वह अंदर लौटीं, तो अचानक एक दृढ़ निश्चय और नकारात्मक विचारों की लहर ने मुझे जकड़ लिया। मैंने कमीज़ पहनी, तौलिया और टूथब्रश लिया और नहाने के बहाने घर से बाहर निकल गया। मेरी चाल बहुत तेज़ थी। दो बूढ़े आदमियों ने मुझे देखा और आपस में कहने लगे कि मुझे इतनी सुबह देखकर उन्हें कितना अजीब लग रहा है। मैं तालाब के पास गया और अपने दांत साफ किए। फिर मैंने पास के पिल्लई होटल से एक गिलास गर्म कॉफी पी। फिर मैं वीरवनल्लूर रेलवे स्टेशन की ओर चलने लगा जो दो मील दूर था। मैंने पेट्टई स्टेशन का टिकट खरीदा। दस मिनट बाद एक ट्रेन आई। वह बिल्कुल खाली लग रही थी और मैं उसमें चढ़ गया और एक सीट पर बैठ गया।

आत्मदया की लहर ने मुझे घेर लिया, मैंने अपना चेहरा ढक लिया और शुरू कर दिया।

रोते हुए, मेरा मन पांडियन बैंक में शामिल होने के बाद से घटी सभी घटनाओं का विश्लेषण करने लगा। मैंने खुद से सवाल किया, 'सोमवार को ही मुझे असफलता क्यों मिल रही है? मैं सुबह-शाम पूरी निष्ठा से महा विष्णु जप और गायत्री मंत्रों का जाप करता हूँ। क्या मैं जप पर ध्यान नहीं दे रहा हूँ? इन सबके बावजूद, मैं अपने गुरु बाबा जी का बहुत आदर करता हूँ, जो मेरे सपनों और जप में प्रकट होते हैं। फिर भी, मुझे इतनी परेशानियाँ क्यों झेलनी पड़ रही हैं, वो भी सीता के रूप में?'

नकारात्मक विचारों से घिरे होने के कारण, मैंने अपनी जान देने का फैसला किया। मैं पेट्टई स्टेशन पर उतरा और दाहिनी ओर एक सीमेंट की बेंच पर बैठ गया। मेरा मन लगातार यह सोच रहा था कि मेरा फैसला सही है या गलत। लेकिन, अंततः मेरे कमजोर मन की जीत हुई।

मैंने मन ही मन सोचा, 'बस बहुत हो गया। मैं अपने जीवन में कुछ भी हासिल नहीं कर सकती, अपने पिता की मार-पीट और दुर्व्यवहार अब और बर्दाश्त नहीं कर सकती। मैं अपना जीवन निरंतर भय में नहीं बिता सकती।'

मैं धीरे से बेंच से उठा और पश्चिम की ओर चल पड़ा। आसपास कोई नहीं था। मैंने घनी झाड़ियों के बीच से होकर गुजरती एक पगडंडी देखी। चलते-चलते मेरे मन में कुछ अस्पष्ट विचार आ रहे थे। 'अगर मैं अपना सिर वहाँ रख दूं, तो स्टेशन से कोई मुझे पटरियों पर लेटे हुए नहीं देख पाएगा। यहाँ तक कि ड्राइवर भी मुझे नहीं देख पाएगा।'

मैं पटरियों पर लेट गया। पाँच मिनट खामोशी में बीत गए। मैंने आसमान की ओर देखा। वह उज्ज्वल दिख रहा था, मानो संकेत दे रहा हो कि मैं जल्द ही इन सभी दुखों से मुक्त हो जाऊँगा। मुझे दूर से आती एक ट्रेन की हल्की सी सीटी सुनाई दी। 'ठीक है! दो-तीन मिनट में मेरी जिंदगी खत्म होने वाली है।' एक असीम खुशी

ने मुझे घेर लिया। मुझे ट्रेन के पास आने की आवाज सुनाई दी। मैंने अपनी आँखें कसकर बंद कर लीं। सीटी की आवाज ने एक अजीब सा एहसास दिलाया और उसी क्षण एक अनजानी आवाज सुनाई दी।
“दे बाबू! मेरी ओर ध्यान से देखो! मैं तुम्हारा गुरु बोल रहा हूँ। पांडियन बैंक से आदेश आया है कि तुम फिर से काम पर लौट आओ। तुम्हारा भविष्य उज्ज्वल है। तुम यहाँ क्यों लेटे हो? तुरंत उठो। दौड़कर घर वापस जाओ।”
मेरी भौंहों के बीचोंबीच मुझे अपने गुरु का चमकता हुआ चेहरा दिखाई दिया। वे मुस्कुरा रहे थे और हाथ की एक तेज़ हरकत हुई, मानो वे मुझे उठने में मदद कर रहे हों। मैं अब और लेट नहीं सकता था और झाड़ियों की ओर दाहिनी ओर कूद गया। ट्रेन पटरियों पर तेज़ी से दौड़ रही थी और बाल-बाल मुझे टक्कर मारते-मारते बची। मैं सिर से पैर तक बुरी तरह कांप गया था।
एक भयानक हादसे से बच निकलने के बाद, मेरा दिल ज़ोर से धड़क रहा था।
सीने में जकड़न। “मैं क्या सोच रहा था? मैंने कायरतापूर्ण व्यवहार क्यों किया? मैं अपने गुरु को कैसे भूल गया?”
मैंने खुद को कोसते हुए पेट्टई स्टेशन की ओर चलना शुरू किया और वापसी की ट्रेन का इंतजार करने लगा। मैं एक बेंच पर बैठ गया। मैं थोड़ी देर पहले हुई सारी घटनाओं के बारे में सोचता रहा।
मुझे बहुत भूख लगी थी। तभी, मानो मेरे गुरु ने किसी खास को मेरे लिए भेजा हो, एक छोटा लड़का खाने के पैकेट लेकर मेरी तरफ आया। “अन्ना! तुम भूखे लग रहे हो। मेरे पास वड़ाई, दही-चावल और बोंडा के पैकेट हैं। मैं ये सब तुम्हें एक रुपये में दे दूंगा।” उसने पैकेट मेरे हाथ में थमा दिए। मैं हँस पड़ा, यह सोचकर कि उसे मुझ पर कितना भरोसा है कि मैं उसे पैसे वापस कर दूंगा। मैं उठा, पैसे दिए और पास के पानी के पंप से हाथ धोए। गायत्री मंत्र का जाप करते हुए, मैंने उत्सुकता से खाने के पैकेट खोले।

अध्याय-22

गुरु बाबाजी द्वारा अभिमंत्रित मंत्र

स्टेशन मास्टर के लिए एक छोटे लड़के को देखना अजीब होता।
वह गहरी सोच में डूबा हुआ और उदास चेहरे के साथ बैठा था। वह गश्त पर था। वह मेरे पास आकर खड़ा हुआ और चिंता से मेरा हालचाल पूछा।
“मेरे बेटे! तुम कौन हो और कहाँ से आए हो? क्या तुम पेट्टई हिंदू कॉलेज में पढ़ रहे हो या घर से भाग गए हो?”
ऐसे सवाल से मैं चौंक गया। मैं सच बताना नहीं चाहता था, इसलिए मैंने कहा कि मैं वीरवनल्लूर ट्रेन का इंतजार कर रहा था। मैंने उन्हें टिकट दिखाया, लेकिन वे मेरे जवाब से संतुष्ट नहीं हुए।
“ठीक है! जो भी कहो, मुझे पता है तुम मुझसे कुछ छिपा रहे हो... अपने माता-पिता के बारे में सोचो और घर वापस जाओ। ट्रेन पाँच मिनट में आ जाएगी।” जब वह आखिरकार चला गया तो मुझे राहत मिली।

जी हां, ट्रेन ठीक पांच मिनट में आ गई। मुझे लगा कि मुझे खाना मिल गया, यह मेरी किस्मत थी। वरना गांव पहुंचते-पहुंचते मैं बेहोश हो जाती।
वीरवनल्लूर स्टेशन पर उतरने के बाद, मैं दो किलोमीटर धीरे-धीरे चला।
घर पहुँचने में मीलों का सफर तय करना पड़ा। तब तक घड़ी में 10 बज चुके थे। जैसा मैंने अनुमान लगाया था, मेरी माँ रोते हुए मेरी ओर दौड़ती हुई आई। "बाबू! तुम कहाँ चले गए थे? हम सुबह 5 बजे से तुम्हें ढूंढ रहे थे!"
मेरे पिता मेरे सामने खड़े थे लेकिन कुछ नहीं बोले। उन्होंने कुछ देर तक मुझे घूरा और फिर मेरी माँ की ओर मुड़ गए।
"सोरनम! उसे छोड़ दो! राजा क्रोधित हो गए होंगे और जानबूझकर तुम्हें रोते देखने के लिए इधर-उधर घूमे होंगे। जो भी हो! क्या मैंने नहीं कहा था कि उसे यहाँ भोजन के लिए वापस आना होगा? है ना? उसे अंदर ले जाओ और उसका अच्छे से ख्याल रखो।" उसने व्यंग्य से कहा और रायर बैंक में अपने दोस्तों के साथ समय बिताने के लिए घर से निकल गया।
तब तक मेरे भाई स्कूल जा चुके थे। मैंने अपनी माँ को सब कुछ बता दिया था, सिवाय उस मूर्खतापूर्ण विचार के जो मैंने रेलवे ट्रैक पर लेटकर उनका दिल तोड़ने के डर से सोचा था। इस बारे में किसी को पता नहीं था। मैंने कहा कि जब मेरे पिता मुझे पीटते थे तो मुझे बहुत शर्म आती थी। इसलिए मैंने मद्रास जाकर कोई काम करके गुज़ारा करने का फैसला किया। लेकिन, मैं पेट्टई स्टेशन पर सो गया और सपने में एक संत प्रकट हुए। उन्होंने मुझे घर वापस जाने का आदेश दिया क्योंकि मुझे पांडियन बैंक से जल्द ही दोबारा काम पर लौटने का पत्र मिलने वाला था।
मेरी भोली-भाली माँ ने मेरी बात पर विश्वास कर लिया। "यह सच होगा, बाबू! तुम्हारा
आपकी कुंडली बहुत अच्छी है और आप अपने जीवन में सफलता की बुलंदियों पर पहुंचेंगे, जैसा कि अथाझनल्लूर और कल्लिदैकुरुचि के ज्योतिषियों ने भविष्यवाणी की है। साथ ही, आप नियमित रूप से विष्णु सहस्रनाम का जाप कर रहे हैं। ईश्वर आपको कभी निराश नहीं करेंगे।
यह सचमुच एक चमत्कार था! दोपहर लगभग बारह बजे, एक डाक लिफाफा
मेरे पिता के नाम से एक पत्र आया। उसमें पांडियन बैंक का आदेश था कि मुझे जल्द से जल्द विरुधुनगर शाखा में ज्वाइन करना है। वेतन 85 रुपये बताया गया था। उस दिन मेरी माँ बहुत खुश थीं। उन्होंने अपनी खुशी इस तरह ज़ाहिर की कि मुझे गोद में उठाकर इधर-उधर उछल-कूद करने की बजाय उन्होंने मेरे माथे पर कई बार चूमा। उन्होंने कहा कि मैं बहुत भाग्यशाली हूँ। मेरे पिता भी बहुत खुश थे और उनके लिए वेतन वृद्धि अप्रत्याशित थी। उन्होंने कहा;-
"माफ़ करना बाबू! कभी हिम्मत मत हारना। अपनी माँ की तरह।"

उन्होंने कहा, "तुम बहुत भाग्यशाली हो और तुम्हारा भाग्य आगे भी बना रहेगा। हिम्मत रखो! बैंक में नाम कमाओ। आने वाला सोमवार शुभ है और हम तुम्हारे लिए कुछ अच्छे रेडीमेड कमीज और पैंट खरीदने तिरुनेलवेली जाएंगे। मैं तुम्हें विरुधुनगर शाखा तक छोड़ने खुद आऊंगा। ठीक है?"
मैं हर्ष से फूला नहीं समा रहा था और साथ ही इस बात से आश्चर्यचकित भी था कि मेरे गुरु बाबा जी ने मुझे घर वापस बुलाकर मृत्यु के चंगुल से कैसे बचाया। मैं इस बारे में सोचता रहा और स्तब्ध रह गया। मैंने संकल्प लिया कि भविष्य में मैं किसी भी चीज से नहीं डरूंगा और अपने गुरु के वचनों के अनुसार ही कार्य करूंगा।
अगले दिन, मैं और मेरे पिता तिरुनेलवेली पहुँचे और कुछ सामान खरीदा।
सुंदरम टेक्सटाइल्स की दुकान पर अच्छे कपड़े मिले। सोमवार को शुभ मुहूर्त पर हम पांडियन बैंक की विरुधुनगर शाखा में गए। मैनेजर धनपाल ने हमसे विनम्रता से बात की। वे अच्छे इंसान लगे। उन्होंने चपरासी को बुलाया और हमें गांधीमथी आची के घर ले जाने को कहा। उन्होंने उसे मेरे लिए एक महीने के खाने के कूपन खरीदने का भी आदेश दिया।
फिर उन्होंने मेरी तरफ देखा। “ए.आर.एस! उसके साथ जाओ। दोपहर हो चुकी है। आज तुम आराम कर लो और कल से काम शुरू कर देना, क्योंकि कल अमावस्या है। चूंकि तुम आज आ गए हो, मैं तुम्हारा नाम हाजिरी रजिस्टर में लिख देता हूं, ताकि तुम्हें आज से ही वेतन मिल जाए। पिछले दो दिनों से मैं तुम्हारा इंतजार कर रहा था। यहां काम का बोझ बहुत ज्यादा है और दो क्लर्कों की कमी है। लक्ष्मणन नाम का एक और व्यक्ति कल से काम पर आ रहा है। तुम दोनों अगली गली में ऊपर वाले कमरे में दस रुपये किराए पर रह सकते हो। खाना आची मेस से मिलेगा और उसका मासिक कूपन सिर्फ 25 रुपये का है। वे सुबह टिफिन और दोपहर व रात का खाना देंगे। खाना बहुत स्वादिष्ट होगा। पास में ही एक और होटल है, जिसे एक अय्यर चलाते हैं। लेकिन वहां का खाना कीमत के हिसाब से अच्छा नहीं है।” उन्होंने नरमी से कहा।
मुझे और मेरे पिताजी को सब कुछ सस्ते दामों पर पाकर बहुत खुशी हुई। हम दोनों चपरासी नचिमुथु के साथ ऊपर गए और अपने बैग कमरे में रख दिए। हमने साफ-सफाई की और आची से मिलने नीचे गए। बुढ़ापे के बावजूद, वह बहुत चुस्त-दुरुस्त लग रही थीं। हमने उनसे बात की, कूपन खरीदे और फिर दोपहर का भोजन किया। जैसा कि मैनेजर ने कहा था, खाना स्वादिष्ट था। उसमें दो तरह की सब्जी की करी, नरम चावल और घर का बना दही था। मुझे आची की सुंदर पोती को देखकर भी खुशी हुई, जो खाना परोसने में उनकी मदद कर रही थी।
मेरे पिता व्यवस्था से संतुष्ट थे और उन्होंने मेरे खर्चों के लिए पचास रुपये दिए। वे तुरंत घर वापस जाना चाहते थे और मुझसे हर महीने कम से कम तीस रुपये भेजने को कहा। मैं मान गया और उन्हें छोड़ने के लिए बस स्टैंड चला गया।
पहली मंजिल का कमरा बहुत हवादार था। मैं शाम 5 बजे तक गहरी नींद में सो रहा था, तभी चपरासी आया और मुझे जगा दिया। अगले दिन मैंने काम शुरू किया। मैनेजर के कहे अनुसार, काम का बोझ बहुत ज्यादा था और यह रात 8 बजे तक चलता रहा।

लक्ष्मणन अय्यर ने उसी दिन बैंक में काम शुरू किया। उनकी उम्र लगभग 22 वर्ष थी और वे अच्छी कद-काठी के थे। वे हंसमुख, बुद्धिमान और काम में फुर्तीले प्रतीत होते थे। उन्होंने किसी तरह मैनेजर को मना लिया और बैंक के स्नानघर में नहाने की अनुमति मांग ली, क्योंकि वहां का पानी स्वच्छ था। उन्होंने कारण बताया कि वे थेनी से आए हैं, जहां पानी की गुणवत्ता बेहतर है। साथ ही, उन्हें जाप और मंत्रोच्चार के लिए कुछ एकांत की भी आवश्यकता थी।

“ठीक है, लक्ष्मणन! मैं तुम्हें विशेष अनुमति दे रहा हूँ। लेकिन सावधान रहना। यह मेरा दफ्तर है। यहाँ ज्यादा भीड़ नहीं होती और किसी को भी अंदर मत आने देना। सुरक्षा मेरे लिए सर्वोपरि है।” उन्होंने लक्ष्मणन और चौकीदार को चेतावनी दी। बाकी क्लर्क और लेखाकार उनसे इस तरह की विनती करने पर उनका मजाक उड़ाने लगे।

मैं हर दिन सुबह जल्दी उठकर ब्रश करता और पास के कुएँ पर नहाने जाता था। वह मेरे कमरे से एक मील दूर था। पानी एक बड़ी टोकरी से निकाला जाता था। हर व्यक्ति को दस पैसे में तीन टोकरी पानी दिया जाता था। इस्तेमाल किया हुआ पानी बीस नारियल के पेड़ों, चार आम के पेड़ों और कुछ फूलों के पौधों वाले खेत में बह जाता था।

विरुधुनगर में मेरा जीवन बहुत अच्छा और आनंददायक था। सुबह 7:30 बजे तक स्नान करने के बाद मैं अपने कमरे में लौट आता था। विष्णु सहस्रनाम और गायत्री जप के साथ-साथ कुछ व्यायाम करना मेरी दिनचर्या का हिस्सा बन गया था। लक्ष्मणन अय्यर सुबह जल्दी टहलने जाते थे और 7 बजे तक बैंक के स्नानघर में स्नान करने के लिए पहुँच जाते थे। हमारे बीच अच्छी समझ थी और हम कोई अनावश्यक बातें नहीं करते थे। जब वे कमरे में होते थे, तो श्लोकों का जाप करने में अपना समय व्यतीत करते थे। लगभग 8:30 बजे हम आची मेस में टिफिन खाने जाते थे। 9:20 बजे तक हम बैंक पहुँच जाते थे। लगभग आठ महीनों तक, मेरे सभी अच्छे दोस्तों के साथ जीवन सुचारू रूप से और खुशी से बीतता रहा।

लेकिन, जून के महीने के आसपास, वहां रहने वाले लोगों को समस्याओं का सामना करना शुरू हो गया। पानी की भारी कमी थी। आस-पास के सारे कुएँ सूखने लगे थे, सिवाय उस कुएँ के जहाँ मैं रोज़ नहाता था। अगर मैं ज़रा भी देर से जाता, तो वहाँ पहले से ही बहुत भीड़ जमा हो जाती, जिससे मुझे अपनी बारी आने के लिए आधे घंटे से ज़्यादा इंतज़ार करना पड़ता। गरीब लोग अपने घड़े इधर-उधर धकेलते हुए लंबी कतारों में इंतज़ार करते रहते थे। इस देरी से मुझे रोज़ चिंता होती थी। एक दिन मैं अपने कमरे में घंटों बैठा रहा और उन सभी लोगों की समस्या के बारे में सोचता रहा।

जब लक्ष्मणन ने मुझे इस तरह बैठे देखा, समय बीतने का उन्हें कोई आभास नहीं था, तो उन्होंने मुझे दिलासा देने की कोशिश की। “चिंता मत करो, ए.आर.एस! तुमने एक बार कहा था कि सपने में और जप करते समय एक संत प्रकट होते हैं। तुम उनसे गहरी प्रार्थना करते हो और समाधान मांगते हो। चूंकि यह पूरे समाज के कल्याण के लिए है, इसलिए पूछने में कोई बुराई नहीं है। अगर वे प्रकट हों, तो बेझिझक बोलो। मैं भी अपनी

देवी अन्नपूर्णी से प्रार्थना करूंगा कि वे हमें रास्ता दिखाएं। इस समस्या का समाधान अवश्य निकलेगा। ठीक है?"

मैंने इसे ईश्वर का संकेत समझा और प्रतिदिन प्रार्थना करना शुरू कर दिया। मैंने मन ही मन अपने भीतर मौजूद गुरुजी बाबाजी से मदद की विनती की।

कितना बड़ा आश्चर्य! छठे दिन मेरे गुरु बाबा जी मेरे दर्शन में आए।

"मेरे प्रिय पुत्र, मेरा आशीर्वाद सदा तुम्हारे साथ है! तुम जन कल्याण के लिए प्रार्थना कर रहे हो, और यह सदा उचित कार्य है। सौ वर्ष पूर्व यहाँ भी इसी प्रकार का सूखा पड़ा था। पलवन्ना नादर नामक एक परोपकारी व्यक्ति ने इसका समाधान निकाला। जहाँ तुम अब रह रहे हो, वहाँ से बाज़ार के पश्चिम दिशा में दो मील दूर, वलवन तालाब नामक एक विशाल जलकुंड है। यह लगभग तीन एकड़ क्षेत्र में फैला हुआ है। नादर ने इस क्षेत्र के चारों ओर की झाड़ियों और कंटीली वनस्पतियों को हटवाने का कार्य किया, और चारों ओर की गाद और कीचड़ को साफ किया। उन्होंने वलवन देवता की एक छोटी मूर्ति स्थापित की और उन्हें प्रसन्न करने के लिए विस्तृत अनुष्ठान किए। मूर्ति को तालाब के पूर्वी किनारे पर स्थापित किया गया। उन्होंने सभी दिशाओं में दस विशाल जल पाइप इस प्रकार बिछाए कि विभिन्न स्थानों से एकत्रित वर्षा का जल सीधे पाइपों के माध्यम से विशाल तालाब में गिरता था। जब भी वर्षा होती थी, चारों ओर से पानी तेज़ी से आता था और तालाब भर जाता था। भूजल स्तर भी बढ़ने लगा। आसपास के कुएँ हमेशा पर्याप्त पानी से भरे रहते थे। लेकिन, बीते वर्षों में जातिगत भेदभाव, आर्थिक तंगी और एकता की कमी के कारण लोगों में तरह-तरह की समस्याएं पैदा हो गईं। लोग वलवन तालाब की देखभाल करना भूल गए। यह कूड़े के ढेर में बदल गया है और इसकी सारी पाइपलाइनें जाम हो गई हैं। लोग अपनी लापरवाही और जातिगत भावनाओं का खामियाजा भुगत रहे हैं।

"अब, इस समस्या को दूर करने के लिए, मेरी कही बात अपने मैनेजर को बता दीजिए। पंचायत सदस्यों के सभी खाते आपके पांड्यन बैंक में हैं। उन्हें तालाब के बारे में समझाकर उन्हें प्रभावित कीजिए और उनसे वहां आने का आग्रह कीजिए। झाड़ियों के बीच वलवन देवता की मूर्ति विराजमान है और उसके पास ही 'वलवन कुलम' लिखा एक नामपट्ट पड़ा है। यह चालीस वर्षों से वहीं है। सब कुछ बेकार हो चुका है। युवा पीढ़ी को इसकी जानकारी नहीं है। लेकिन, बुजुर्ग लोग शायद उन दिनों को याद करते होंगे जब यह तालाब चालू और उपयोगी था। अपने मैनेजर के साथ जाकर उन लोगों से बात कीजिए। आपकी इस प्रथम सामाजिक और धार्मिक सेवा के लिए मेरा आशीर्वाद सदा आपके साथ है।"

यह कहते ही वह गायब हो गया। लेकिन, उस दृश्य की चमक अभी भी बाकी थी। वह लंबे समय तक मेरे दिल में बसी रही और मुझे भरपूर खुशी देती रही।

अगले अध्याय में, मैं विस्तार से समझाऊँगा कि कैसे मेरे गुरु बाबा जी की भविष्यवाणी जल संकट की समस्या के निवारण में सच हुई। दुर्भाग्यवश, मैं विरुधुनगर में लंबे समय तक नहीं रह सका। अगस्त माह में, मेरे नौ महीने के प्रवास के भीतर ही, बैंक ने मेरा तबादला श्रीविल्लिपुथुर शाखा में कर दिया।

अध्याय-23

मेरा गुप्त कार्य

जब शाम को मेरे बैंक मैनेजर श्री धनपाल थोड़े आराम में दिखे, तो मैंने उन्हें विस्तार से बताया कि मुझे ध्यान के दौरान अपने गुरु बाबाजी से क्या ज्ञान प्राप्त हुआ।

मेरे गुरु ने कहा कि पंचायत सदस्यों और पार्षदों के पास

उनके खाते हमारे बैंक में हैं। अगर आप अभी उनसे मेरी कही बात पर चर्चा करें, तो शायद यहाँ व्याप्त जल संकट का कोई समाधान निकल आए। आपको सराहना भी मिलेगी, महोदय! कृपया अपना सर्वश्रेष्ठ प्रयास करें।

वह ईश्वर से डरने वाला व्यक्ति था। जब मैंने उससे आवश्यक कार्य करने का आग्रह किया,

उन्होंने बिना किसी झिझक के इस प्रयास के लिए हामी भर दी। उन्होंने पंचायत पार्षदों और कुछ वरिष्ठ नागरिकों (ग्राहकों) जैसे संबंधित लोगों को इस मुद्दे पर चर्चा करने के लिए बुलाया। चर्चा का विषय जानकर वे आश्चर्यचकित रह गए। वे भी लंबे समय से इस समस्या का समाधान ढूंढने की कोशिश कर रहे थे, लेकिन उन्हें समझ नहीं आ रहा था कि आगे क्या करें। मैनेजर से सब कुछ सुनने के बाद उन्होंने मुझे बुलाया। उन्होंने मेरी प्रशंसा की और जल्द से जल्द कार्रवाई शुरू करने का वादा किया। यह सुनकर हम दोनों बेहद उत्साहित हो गए।

मेरे गुरुजी ने जिस जगह के बारे में बताया था, वह एक कूड़े के ढेर जैसी थी।

एक ऐसी जगह जिसकी पहचान करना मुश्किल था, चारों ओर कंटीली झाड़ियाँ और अवांछित वनस्पति फैली हुई थी। उस जगह को अच्छी तरह साफ करने और गाद, कूड़ा-कचरा आदि हटाने में लगभग बीस दिन लग गए।

अंततः, बाबा जी की भविष्यवाणी के अनुसार, एक कोने में एक छोटी सी मूर्ति मिली।

बगल में एक नामपट्टिका पड़ी थी जिस पर 'वालवन' लिखा था। मूर्ति को निकालकर साफ किया गया। एक छोटा चबूतरा बनाया गया। ढोल की थाप और मंत्रोच्चार के साथ, चमकती हुई मूर्ति को चबूतरे पर स्थापित किया गया। देवता को फूलों और मालाओं से सजाया गया और कई दीपक जलाए गए। एक बकरे की बलि देकर वालवन देवता का अभिषेक किया गया।

इस अनुष्ठान के बाद, बड़ी संख्या में लोगों ने खुशी-खुशी भाग लिया।

तालाब के जीर्णोद्धार में दान प्राप्त हुआ। सड़कों तक फैली लंबी और टूटी हुई पाइपों को बदल दिया गया। अन्य पाइपों को अच्छी तरह साफ करके उनमें से रुकावटें और मलबा हटाया गया। तालाब और उसके आसपास से गाद और मिट्टी हटाने के बाद, वह स्थान अब सुंदर दिखने लगा। आसपास के मंदिरों में वर्षा के लिए अनुष्ठान किए गए। होमम और विशेष मंत्रों के जाप आदि के दो दिनों के भीतर ही तीन दिनों तक भारी वर्षा हुई। मुख्य सड़क और ब्राह्मण एवं नादर गलियों से बहने वाला पानी बिछाई गई पाइपों के माध्यम से इस

नए तालाब में आ गया। तालाब भर गया और लोग बहुत प्रसन्न हुए। इस प्रकार बाबा जी की कृपा से वहां की जल समस्या का समाधान हो गया।

शाम को बैंक में हमारा काम खत्म होने के बाद, हम

मैंने उत्सव में भाग लिया। पंचायत सदस्यों ने मेरे मैनेजर और मुझे नए विचार और गांव के लोगों को लंबे समय से चली आ रही समस्या के समाधान की पहल के लिए सम्मानित किया। मैंने अत्यंत प्रसन्नता से लक्ष्मण को बताया कि यह मेरे जीवन का सुनहरा समय है। लेकिन यह खुशी ज्यादा देर तक नहीं टिकी।

मुझे उसी दिन श्रीविल्लिपुथुर के लिए स्थानांतरण आदेश प्राप्त हुआ। उस शाखा में दो लोग पहले ही इस्तीफा दे चुके थे और बैंक ने मुझे तुरंत कार्यमुक्त करने का आदेश दिया था। मैं टूट गया। मैंने अपने भाग्य को कोसा, जिसने हमेशा आशा और खुशी की किरण दिखाई और फिर उसे मुझसे जबरदस्ती छीन लिया।

घटनाक्रम देखकर मेरे मैनेजर को दुख हुआ। "ए.आर.एस! देवी जी!"

आपके मामले में, वह आपको एक सुंदर खिलौना देती है। वह आपको थोड़ी देर तक उससे खेलने देती है, फिर उसे आपसे वापस ले लेती है।

उन्हें उन सभी कठिनाइयों के बारे में पता था जो मैंने पांडियन बैंक में शामिल होने के बाद झेली थीं।

उन्होंने मुझे आश्वासन दिया कि वे बैंक की सहायक निदेशक कमला महोदया से मुझे उसी शाखा में बनाए रखने के लिए विनती करेंगे। उन्होंने अपने वादे के मुताबिक उन्हें फोन किया, लेकिन उन्हें केवल एक रूखा जवाब ही मिला।

"महोदय! ए.आर.एस. में ऐसी क्या खास बात है? क्या वह आपका बेटा है? ऐसा मत कीजिए।"

एक क्लर्क से भावनात्मक लगाव है। हम अगले महीने तक दूसरा क्लर्क भेज देंगे। उसे आज ही बिना किसी देरी के कार्यमुक्त कर दें।

इसलिए, मैंने अपना सामान पैक किया और आची और उसे धन्यवाद देने के लिए चली गई।

अपनी प्यारी पोती के आतिथ्य सत्कार के लिए मैं उनका आभारी हूँ। मैंने उसी दिन बस से अपने नए स्थान की यात्रा शुरू की।

श्रीविल्लिपुथुर शाखा के प्रबंधक श्री सुब्रमणियन थे।

मेरे आने का इंतज़ार कर रहे थे। उन्होंने चपरासी आंदियाप्पन को मुझे मेरे कमरे तक ले जाने को कहा, जो प्रसिद्ध आंदल मंदिर के पास स्थित था। रोज़ाना का खाना 'अप्पन अयंगर मेस' में तैयार किया जाता था। मैंने अगले ही दिन काम शुरू कर दिया। हालाँकि मेस का खाना मुझे काफ़ी स्वादिष्ट लगा, लेकिन मुझे लगा कि जिस तरह से खाना परोसा जाता था, वह आची की मेहमाननवाज़ी की बराबरी कभी नहीं कर सकता था।

इसके अलावा, विरुधुनगर में हुई घटना का असर पूरे क्षेत्र में फैल गया था।

लेकिन मुझे इस बात पर ज़रा भी गर्व नहीं था। मैंने अपने दोस्तों से यह कहकर बात साझा की कि यह मेरे गुरु का आशीर्वाद मात्र था, इसमें और कुछ जोड़ने की ज़रूरत नहीं है।

जिस कमरे में मैं रुका था, उसमें दो और लोग ठहरे हुए थे। हमारे लिए
हमारी रोज़ सुबह की दिनचर्या में शिव मंदिर के पास स्थित 'मदवर वलागम' नामक तालाब पर जाना शामिल था, जो हमारे कमरे से दो मील दूर था। और जब मैं कभी बीमार पड़ जाती थी, तो वहाँ जाना बहुत मुश्किल हो जाता था।
काम का बोझ भी बहुत ज़्यादा था और कई बार मुझे ऐसा लगता था कि मेरी आज़ादी छिन गई है। मेरे रूममेट्स में से एक, माधवन नायर, कमरे की चाबियाँ लेकर जानबूझकर बाहर चला जाता था। मेरे पास उसके आने का इंतज़ार करने के अलावा कोई चारा नहीं था। शायद मैं उसे बच्चा लगता था। वह मुझसे अक्सर काम भी निकलवा लेता था।
अब और बर्दाश्त न कर पाने पर, मैंने मंदिर के पुजारी की मदद से रहने के लिए एक अच्छी जगह यानी एक अच्छा घर ढूंढ लिया। हालांकि किराया 8 रुपये मेरे लिए थोड़ा ज़्यादा था, लेकिन मेरे साथ रहने वाले लोग बहुत अच्छे थे। हमने साथ में खूब मस्ती की; फ़िल्मों के गाने गाए और खूब बातें कीं।
बैंक मैनेजर की पत्नी, शिवगामी मामी ने मेरे साथ अपने जैसा व्यवहार किया।
मेरी अपनी बहन। उसने कहा कि मैं अविवाहित हूँ, इसलिए वह विशेष अवसरों और त्योहारों पर मेरे लिए खाना बनाने का प्रस्ताव रखती थी। मैनेजर ने सहर्ष इस विचार को स्वीकार कर लिया। चूंकि उसका घर दफ्तर के अंदर ही था, इसलिए पके हुए खाने की खुशबू पूरे दफ्तर में फैलती रहती थी। मैनेजर सुबह-सुबह उस खुशबू का पीछा करते हुए रसोई में जाया करता था। जब वह चेहरे पर संतुष्टि भरी मुस्कान लिए वापस आता, तो क्लर्क असहज और ईर्ष्यालु महसूस करते थे।
उन्होंने भी मेरा मजाक उड़ाया, मुझे मामी का लाडला और भाग्यशाली बताया।
वहाँ अच्छा खाना मिलता था। उसी साल मेरी तनख्वाह में दस रुपये की बढ़ोतरी हुई। आठ महीने बाद, मुथु अय्यर नाम के एक नियमित ग्राहक ने चुपके से हिंदू अखबार की एक कतरन लाकर मुझे दिखाई, जब मैं अपने कमरे में आराम कर रहा था।
“ए.आर.एस! तुम कब तक एक छोटी सी चीज के लिए इतनी मेहनत करते रहोगे?”
वेतन? मैं तुम्हें अपने छोटे भाई की तरह मानता हूँ। तुम बहुत बुद्धिमान हो। यह भारतीय रिज़र्व बैंक, मद्रास में क्लर्क पद का विज्ञापन है। तुम सारी जानकारी एक सफेद कागज़ पर भरकर मुझे दे दो। मैं इसे अपने पूजा कक्ष में रखूँगा और फिर डाक से भेज दूँगा। इसे गुप्त रखना और देखते हैं क्या होता है।” उसने मेरे कानों में धीरे से फुसफुसाया।
हालांकि मुझे शुरू में डर लग रहा था, फिर भी मैंने अपने गुरु बाबा जी से इस बारे में राय पूछी।
मुझे रात में ध्यान करते समय यह बात पता चली। मुझे लगभग एक घंटे तक बैठना पड़ा, तब जाकर उन्होंने मेरी दुविधा का जवाब दिया। “विश्वास करो! मैं तो बस तुम्हें मुथु अय्यर के माध्यम से आरबीआई में आवेदन करने के लिए कह रहा हूँ। सब ठीक हो जाएगा। सफलता तुम्हारे प्रयासों का फल देगी। चिंता मत करो!” बाबा जी ने कहा।

उनकी बातें सुनकर मुझे आत्मविश्वास और खुशी महसूस हुई। अगले तीन
कई महीने बीत गए और मेरे आवेदन पर कोई सूचना नहीं मिली। मुझे अपने हाथ से लिखे आवेदन को लेकर संदेह होने लगा। मुझे डर था कि कहीं वह कूड़ेदान में न चला गया हो। लेकिन, मुझे आश्चर्य हुआ कि गुरुवार को मुझे जवाब मिला, जिस दिन मैं एक घंटे तक अपने गुरु की पूरी श्रद्धा से प्रार्थना करता हूँ।
मेरे प्रमाण पत्रों को देखते हुए, आरबीआई के पत्र में कहा गया था कि... मेरा आवेदन
मेरा आवेदन स्वीकार हो गया और मुझे अगले महीने की 15 तारीख को लिखित परीक्षा में शामिल होने के लिए कहा गया। परीक्षा स्थल मद्रास में था और परीक्षा से संबंधित सभी विवरण पत्र में स्पष्ट रूप से लिखे हुए थे। मैंने पत्र लिया और दौड़कर मुथु अय्यर को दिखाया, जिन्होंने मेरे लिए आवेदन करने में काफी मेहनत की थी। शाम तक, वे परीक्षा की तैयारी में मेरी मदद करने के लिए कुछ प्रासंगिक पुस्तकें ले आए। मैंने एक महीने तक उन पुस्तकों को पढ़कर खूब मेहनत की। जब मेरे रूममेट्स ने इसके बारे में पूछा, तो मैंने उन्हें यह कहकर टाल दिया कि मैं बैंक परीक्षा की तैयारी कर रहा हूँ।
मुझे खर्चों के बारे में कुछ समझ नहीं आ रहा था। जब मैंने मुथु से पूछा
अय्यर ने मुझसे कहा कि चिंता मत करो। "मेरे चाचा त्रिप्लिकेन में रहते हैं। मैं उन्हें तुम्हारे आने की सूचना दे दूंगा और उनकी अनुमति ले लूंगा। वे तुम्हारी मदद करेंगे। चिंता मत करो।" उन्होंने मुझे परीक्षा में अच्छा करने के लिए प्रोत्साहित किया। उन्होंने मुझे अपने चाचा की तस्वीर भी दिखाई। उन्होंने मुझे कुछ पैसे भी दिए।
अपने परिवार से मिलने के बहाने, मैंने मद्रास के लिए बस पकड़ी।
वह जगह मेरे लिए थोड़ी मुश्किल भरी थी, लेकिन बस स्टैंड पर मुथु अय्यर के चाचा की मौजूदगी से मुझे बहुत मदद मिली। वे मुझे अपने घर ले गए और मेरा अच्छे से ख्याल रखा। अगले दिन वे मेरे साथ आरबीआई के परीक्षा केंद्र तक भी गए। चूंकि मैं शहर में नया था, इसलिए उन्हें डर था कि कहीं कोई नकलची मुझे ठग न ले। उन्होंने परीक्षा खत्म होने तक मेरा इंतजार किया। परीक्षा काफी कठिन थी, लेकिन मैंने उसे अच्छे से पूरा कर लिया।
घर लौटने के बाद हमने अच्छा खाना खाया। हम बातें कर रहे थे।
मैं अपने काम के बारे में सोच रहा था और धीरे-धीरे मुझे नींद आने लगी। मेरी हालत देखकर उस दयालु दंपति ने मुझे अतिथि कक्ष में पलंग पर सोने के लिए कहा और आराम से सोने और अगले दिन के लिए निकलने की सलाह दी। हालांकि मुझे शर्म आ रही थी, लेकिन मैं मना नहीं कर सका। तकिए पर सिर रखते ही मुझे तुरंत नींद आ गई।
शाम को मैंने ध्यान किया और बाबा जी के आशीर्वाद का अनुभव किया।
उनके पूजा कक्ष में... भोजन अच्छे से परोसा गया था। उन्होंने मेरी ध्यान साधना और आध्यात्मिक खोज में मेरी रुचि के बारे में उत्सुकतापूर्वक प्रश्न पूछे। मैंने उन्हें विनम्रतापूर्वक उत्तर दिया।
सुबह जाने से पहले, मामी ने फलों से भरी एक थाली दी और

कुछ पैसे दिए। उनकी दया और प्रेम से मैं बहुत प्रभावित हुई। अनायास ही मैंने कहा कि मेरे महान गुरु के आशीर्वाद से उन्हें शीघ्र ही संतान प्राप्ति होगी। बाद में मुथु अय्यर के माध्यम से मुझे पता चला कि मेरी बात सच हो गई। मैं बहुत खुश हुई।

मद्रास से आने के ठीक अगले दिन ही मैंने बैंक में काम शुरू कर दिया।

मैंने परीक्षा के बारे में किसी से एक शब्द भी नहीं कहा और इसे गुप्त रखा। शाम को मुथु अय्यर मेरे कमरे में आए और मेरी परेशानी के बारे में पूछा। मैंने उन्हें बताया कि मैंने परीक्षा अच्छी तरह से दी है और अगर मेरा चयन हो जाता है, तो मुझे उस पद के लिए रिक्ति आने तक प्रतीक्षा सूची में रखा जाएगा। इसमें छह या सात महीने लग सकते हैं।

मुथु अय्यर ने सुझाव दिया कि मैं एक बार अपने पिता को इस बारे में बता सकता हूँ।

मुझे आदेश मिला और फिर मैंने मद्रास जाने की अनुमति मांगी। "यह भारत का एक प्रतिष्ठित केंद्रीय बैंक है और तुम्हें वहां काम करते देखकर तुम्हारे पिता को कोई आपत्ति नहीं होगी। तब तक, इस बात को अपने तक ही रखो और खुश रहो।"

मेरा मन लगातार मुथु अय्यर की कही बातों के बारे में सोचता रहा। मुझे डर लग रहा था।

मुझे इस बात की चिंता सता रही थी कि मेरे पिता को पता चले कि मैंने उनसे सलाह लिए बिना ही परीक्षा देने का फैसला कर लिया है, तो उनकी क्या प्रतिक्रिया होगी। और अगर पांड्यान बैंक के अधिकारियों को पता चल गया तो क्या होगा? हो सकता है मेरी मौजूदा नौकरी चली जाए और मुझे आरबीआई में नौकरी न मिले। मेरे पिता मुझ पर खूब चिल्लाएंगे। तरह-तरह के विचारों ने मुझे उलझन में डाल दिया और डरा भी दिया, हालांकि मेरे अंदर खुशी की एक छोटी सी किरण भी दौड़ गई। यह मेरे पिता के खिलाफ मेरा पहला साहसिक कदम था। मैं दस मिनट तक बरामदे में मूर्ति की तरह बैठी रही।

मुझे पता था कि सब कुछ होने में कम से कम छह महीने लगेंगे।

साकार हो गया। परीक्षा हॉल में मौजूद अधिकारी ने ऐसा कहा था। अपने विचारों से आश्वस्त होकर मैंने अपनी घड़ी देखी। अरे! सात बज चुके थे और मेरे खाने का समय हो गया था। मैं प्रार्थना के अपने दैनिक अनुष्ठान के लिए जल्दी से अपने कमरे में चला गया।

अध्याय-24

मेरे काव्यात्मक शब्द-- प्रसिद्धि का मार्ग

श्रीविल्लिपुथुर में मेरा जीवन नौ महीने में अचानक समाप्त हो गया।

मेरा प्रवास बहुत छोटा था और मेरे लिए कुछ खास यादें संजोने लायक नहीं थीं। एकमात्र सुखद स्मृति रिजर्व बैंक की परीक्षा लिखने में की गई मेरी मेहनत और दो महीने बाद प्राप्त पत्र की थी। पत्र में उल्लेख था कि मुझे प्रतीक्षा सूची में रखा गया है और प्रस्ताव मिलते ही बैंक में शामिल होने के लिए तैयार रहना चाहिए।

मैंने श्रीविल्लिपुथुर के श्री अंडाल मंदिर में मंगलवार को जाना शुरू किया।

और शुक्रवार को मैं प्रार्थना करता था कि मुझे जल्द से जल्द दीक्षा मिल जाए। एक बुजुर्ग वैष्णव (अयंगर) व्यक्ति ने मंदिर में मेरे नियमित आगमन पर ध्यान दिया। वह मेरे बारे में और अधिक जानना चाहते थे। मैंने उन्हें विनम्रतापूर्वक संक्षिप्त उत्तर दिया। उनके पीछे एक सुंदर लड़की खड़ी थी, जिसका चेहरा चमक रहा था और आँखों में जिज्ञासा थी। वह अक्सर हमारी बातचीत में दखल देती थी।

अपनी आवाज में एक सच्ची विनती के साथ, उसने गुप्त रूप से यह बात कही। उसने मुझे बताया कि उसने दसवीं कक्षा अच्छे अंकों से पास की है और पास के ही कॉलेज से डिग्री हासिल करना चाहती है, लेकिन उसके पिता इसमें बाधा बन रहे हैं। उसने मुझसे अपने कॉलेज की योजनाओं के बारे में अपने पिता से बात करने को कहा। हालांकि वह सुंदर थी और मुझसे अक्सर मिलने की कोशिश करती थी, फिर भी मैं अपनी सीमा पार न करने को लेकर बहुत सतर्क था। वरना, ध्यान के मेरे नियमित अभ्यास में बाधा आ सकती थी। साथ ही, मुझे अपने पिता का भी डर था। सौभाग्य से, संतुलन बनाए रखने का मेरा संघर्ष बहुत जल्द समाप्त हो गया।

मेरे मार्गदर्शक, गुरु बाबा जी मेरे सपने में प्रकट हुए।

मुझे सलाह दी गई कि मैं ऐसे तुच्छ मुद्दों में न उलझूं और एक सप्ताह के भीतर मेरा तबादला किसी दूसरी जगह होने वाला है।

मेरे गुरु की सलाह पर मेरा तबादला शिवकाशी शाखा में हो गया।

'हर चीज़ किसी न किसी अच्छे कारण से होती है', इस सकारात्मक सोच के साथ मैंने इसे हल्के में लिया। लेकिन, मैंने बिना सोचे-समझे अपने दो दोस्तों को, जो उस समय मेरे साथ थे, अपने इरादे बता दिए।

"हे भगवान! मैं शिवकाशी में ज्यादा दिन नहीं रुकने वाला। मैं यहीं बसने जा रहा हूँ।"

मैं जल्द ही मद्रास जा रहा हूँ। यह पांडियन बैंक मुझे हर छह महीने में अलग-अलग जगहों पर भेज देता है। मैं उच्च वेतन के लिए रिजर्व बैंक में शामिल होने जा रहा हूँ।" उनके शब्द गर्व से भरे हुए थे। वे मेरे अहंकार पर मानो हँस रहे थे।

मेरी जल्दबाजी में कही गई बात का असर जल्द ही हुआ। एक हफ्ते के भीतर ही मैंने अपने पिता को देखा। अचानक वह गुस्से से भरे चेहरे के साथ मेरे कमरे के सामने खड़ा हो गया। किसी तरह उसे वह पता मिल गया था जहाँ मैं शिवकाशी स्थित पांड्यान बैंक यूनिटी होम में अपने दोस्तों के साथ रह रहा था।

हे भगवान! तुम्हारी हिम्मत तो देखो! तुम्हारे कमरे के दोस्तों में से एक

"केशव ने मुझे एक पत्र लिखकर रिजर्व बैंक में शामिल होने के तुम्हारे गुप्त निर्णय के बारे में बताया। मुझे तुमसे मिलने के लिए तुरंत आना पड़ा।" मुझे तुरंत समझ आ गया कि यह मेरा रूममेट केशव था। वह मुझसे मेरे घर का पता पूछकर मुझे परेशान कर रहा था और अब मुझे इसका कारण पता चल गया। मैंने मन ही मन उसे कोस दिया।

"आपको पांडियन बैंक की नौकरी क्यों छोड़नी पड़ रही है? वे

आपकी नियुक्ति पहले ही पक्की हो चुकी है और आपको वेतन वृद्धि भी मिल गई है। क्या आप इसके लिए शुक्रगुजार नहीं हैं? आरबीआई में आवेदन करने से पहले आपने मुझसे राय तक नहीं ली। अब आप कहते हैं कि आपका नाम प्रतीक्षा सूची में है। अगर मौजूदा बैंक को इस बारे में पता चल गया, तो आरबीआई द्वारा नियुक्ति की पुष्टि होने से पहले ही आपको निकाल दिया जाएगा। फिर आप क्या करेंगे?
उन्होंने मुझसे एक के बाद एक कई सवाल पूछे। एकमात्र राहत की बात यह थी कि
उन्होंने मुझे सार्वजनिक रूप से पूछताछ करने के बजाय मेरे दोस्तों से दूर ले जाकर पूछताछ की। मैंने साहसपूर्वक अपने पिता के चेहरे की ओर देखा और बोला,
“अप्पा! (पिताजी) ऐसा कुछ भी नहीं है जो आप नहीं जानते। आरबीआई एक
प्रसिद्ध केंद्रीय सरकारी बैंक। मेरे करीबी दोस्त मुथु अय्यर ने बताया कि मद्रास में शुरुआती वेतन 465 रुपये प्रति माह है। उनके भाई का बेटा सौम्यन वहाँ काम करता है। मैं उसे भी जानता हूँ। श्रीविल्लिपुथुर उसका पैतृक स्थान है। मुथु अय्यर ने ही मुझे परीक्षा देने के लिए प्रेरित किया था। उन्होंने यह भी सुझाव दिया कि चेन्नई मेरे विकास के लिए सही जगह है और मैं अगले दस वर्षों में उच्च पद प्राप्त कर सकता हूँ। उन्होंने यह भी कहा कि पांड्यान बैंक मुझे बेवजह इधर-उधर भटका रहा है और मेरी योग्यताओं के हिसाब से वेतन बहुत कम है। छह महीने के भीतर आरबीआई मुझे साक्षात्कार के लिए बुलाएगा, अप्पा! मैं वहाँ से आपको और पैसे भी भेज सकता हूँ।

मेरे पिता वेतन वाले हिस्से पर जोर देते ही तुरंत खुश हो गए।
लेकिन उन्होंने मुझे आगाह किया। “अब से तुम्हें बहुत सावधान रहना होगा, बाबू! केशव से जैसी बातें की थीं, वैसी लापरवाही से इधर-उधर मत बोलना। लोग पहले से ही तुमसे ईर्ष्या करते हैं। बहुत सी बुरी निगाहें तुम पर टिकी हैं। ठीक है?”
मेरे पिता ने इसके लिए पांच सौ रुपये भेजने का वादा किया था।
चेन्नई पहुँचने के बाद मुझे खर्चों का भुगतान करना पड़ा। इस घटना के बाद मुझे बहुत राहत महसूस हुई, मानो एक बड़ा तूफान एक छोटी सी हवा के झोंके के रूप में टल गया हो।
जैसा कि उम्मीद थी, दो महीने के भीतर ही मुझे चेन्नई बुलाया गया।
आरबीआई में शामिल होने के लिए मैंने औपचारिकतावश साक्षात्कार दिया। 1 जुलाई, 1963 को मैंने नए कार्यालय में कार्यभार संभाला। मेरे पिता ने वादा किया था कि वे मुझे शुरुआती खर्चों के लिए पैसे भेजेंगे। उन्होंने मुझसे कहा कि जब तक मुझे रहने के लिए अच्छी जगह न मिल जाए, तब तक मैं उनके चचेरे भाई कृष्णन के घर पर रहूँ।
तो, पहले से तय तारीख पर, मैं उनके (मेरे पेरियाप्पा के) घर पहुँच गया।
चेन्नई। मैंने उनके बच्चों [तीन बेटियाँ और दो बेटे] को अपने जीवन में पहली बार देखा। जब हम छोटे थे, तो मेरे पिता खर्चों के डर से हमें कहीं नहीं ले जाते थे।
अब वे सब मेरे प्रति दयालु थे और मुझसे अच्छे से बातचीत करते थे। मेरे चाचा (पेरियप्पा) सचिवालय में उच्च पद पर कार्यरत थे। वे मुख्यमंत्री के निजी सचिव थे। वे अपने कार्यालय में काफी जाने-माने और सम्मानित व्यक्ति थे।
मैंने आरबीआई में नौकरी शुरू की और धीरे-धीरे काम सीखा।
यह अनुभव पांडियन बैंक में मेरे अनुभव से अलग था, लेकिन इसने मुझे खुशी और संतोष दिया। एक महीने तक मैं अपने चाचा के घर से बस से अपने कार्यस्थल तक आता-जाता रहा। अपनी पहली तनख्वाह मिलने के बाद, मैंने अपने चाचा को बताया कि मैं ट्रिप्लिकेन में मुरुगेसा नाइकर मेंशन में रहना चाहता हूँ। कुंवारे लोगों के बीच यह रहने के लिए एक प्रतिष्ठित जगह थी। मैंने जानबूझकर ऐसा किया, ताकि सात लोगों के परिवार में मेरे खर्च का बोझ मेरे चाचा पर न पड़े। घर भी छोटा था और मैं उनकी निजता में दखल नहीं देना चाहता था। कभी-कभी मुझे वहाँ अपनी बड़ी बहनों के साथ थोड़ी आज़ादी लेने में अजीब लगता था।
मुझे यह भी समझ आ गया था कि परिवार में कोई समस्या उत्पन्न होने वाली है।
ध्यान साधना के दौरान मुझे पता चला कि मेरे बड़े चचेरे भाई श्री पिचाई को अपने ही दोस्त की बहन से प्रेम हो गया था। जब मैंने उनसे इस बारे में अपने तरीके से पूछा, तो उन्होंने सब कुछ बता दिया। उस समय वे पशु चिकित्सा विज्ञान डॉक्टर (BVSC) की पढ़ाई कर रहे थे।
“बाबू! आपको यह कैसे पता चला? आप तो कमाल के हैं! वह मेरी है

मेरी दोस्त की बहन है, लेकिन वे आर्थिक रूप से पिछड़े परिवार से हैं। मुझे नहीं पता कि मैं यह बात अपने पिता को कैसे बताऊँगा। मैं बहुत डरा हुआ हूँ।" मैंने उससे पूछा कि क्या लड़की का परिवार उसे दामाद के रूप में स्वीकार करेगा। वह इसका कोई ठोस जवाब नहीं दे सका। मैंने उसे एक सुझाव दिया।

"देखो मेरे भाई! तुम पढ़ाई के दूसरे साल में हो। तुम अभी दो साल और पशु चिकित्सक के रूप में एक साल का अभ्यास बाकी है। अगर इस उम्र में तुम प्यार में पड़ गए, तो पढ़ाई और अच्छे अंक लाने में तुम्हारी एकाग्रता और रुचि कम हो सकती है। ठीक है? लड़की के परिवार को यह बात समझा दो और अगले तीन साल तक उससे दूर रहो। इस बीच, मैं तुम्हारे लिए चाचा से बात करूंगा और इसे सफल बनाने की कोशिश करूंगा। तब तक, मैं तुम्हारे लिए प्रार्थना करूंगा।

हालांकि मैं उनसे उम्र में छोटा था, फिर भी उन्होंने मेरी बातों को गंभीरता से लिया।

मैं उसके दोस्त के घर गया और मैंने उसे उसके परिवार की स्थिति और उसके पिता के स्वभाव के बारे में बताया। लड़की के माता-पिता ने सच्चाई को समझा और मेरी बात मान ली।

"देखो बाबू! हम अमीर नहीं हैं। इसलिए, जैसा कि आप कहते हैं, अगर हमारा दामाद

अगर वह अपने करियर में उत्कृष्ट प्रदर्शन करता है, तो भला इसे कौन मना करेगा?

वह लड़की बहुत सुंदर और बुद्धिमान थी। सभी ने अच्छा सहयोग दिया और मेरे चचेरे भाई ने अपनी पढ़ाई में उत्कृष्ट प्रदर्शन किया और पशु चिकित्सक बन गया।

मेरे चाचा श्री कृष्ण अय्यर को किसी तरह जल्द ही उस लड़की के प्रति मेरे प्रेम के बारे में पता चल गया। 1960 के दशक में प्रेम करना एक वर्जित विषय था। उन्होंने अपने बेटे के इस फैसले को स्वीकार नहीं किया। इसलिए वे मदुरै में अपने मित्र के घर गए और अपने बेटे के लिए एक रिश्ता तय कर दिया। हालांकि मेरे भाई ने बहुत विरोध किया, लेकिन उनके पिता को मनाना संभव नहीं था और मदुरै की उस लड़की से शादी को टाला नहीं जा सका।

बाद में, जब मैंने ध्यान के दौरान अपने गुरु से इस बारे में पूछा, तो उन्होंने

मेरी चाची का मानना था कि यह शादी ज़्यादा दिन नहीं चलेगी और पिचाई अपनी प्रेमिका के साथ उत्तर भारत चला जाएगा। शादी से पहले जब मैंने अपनी चाची से बात की, तो उन्होंने कहा कि इस मामले में अपने बेटे का साथ देना उनके लिए नामुमकिन है। आखिरकार दो साल बाद, मेरे भाई पिचाई ने अपनी पत्नी को तलाक दे दिया, जबकि उनका उससे एक बच्चा भी था, और अपनी प्रेमिका से शादी करके उत्तर भारत चले गए।

मेरे चाचा का पूरा परिवार शोक में डूब गया और मैंने कुछ वर्षों तक उनसे मिलना बंद कर दिया, क्योंकि उन्हें लगता था कि मैं भी इस साजिश में शामिल हूं।

एक और कारण यह था कि मेरे दो छोटे भाई यहाँ से आए थे।

वीरवनल्लूर मेरे साथ ट्रिप्लिकेन स्थित मेरे कमरे में रहने के लिए आए थे। वे मेरे पिता के स्वभाव और सख्त व्यवहार को सहन नहीं कर पाए। एक अच्छी बात यह हुई कि उन दोनों को मद्रास में अच्छी नौकरियाँ मिल गईं। चूंकि मैं हम सभी के मासिक खर्चों को किफायती तरीके से नहीं संभाल पा रही थी, इसलिए हमने आपस

में बात करके मद्रास के पश्चिम माम्बलम में एक छोटा सा घर किराए पर लिया, जिसमें एक रसोईघर और एक कमरा था। हमने कुछ बर्तनों और एक चूल्हे से खाना बनाना शुरू किया। मेरा भाई वेंकट खाना बनाने में माहिर था। इसलिए, मेरे भाइयों ने मुझे पैसे बचाने और वादा किए अनुसार पिता को भेजने में बहुत मदद की।

दो साल सुचारू रूप से बीत गए। हम खुश थे और मैं स्वतंत्र थी और इससे मिली आजादी का आनंद उठाती थी। लेकिन, जिंदगी हमेशा ऐसी नहीं रहती। मेरे लिए शादी का एक अच्छा प्रस्ताव आया। उस समय मेरे पिता तिरुनेलवेली अरसन कंपनी में काम करते थे। यह मार्च 1967 का महीना था। मुझे अपने पिता से एक पोस्टकार्ड मिला। 'बाबू! मैंने पलायमकोट्टई में आपके लिए एक लड़की देखी है, और वह अच्छे परिवार से है। हम दोनों की कुंडली भी अच्छी तरह से मेल खाती है। वह सुंदर और शांत स्वभाव की है। आपको उनसे मिलने की औपचारिकता पूरी करने के लिए यहां आना होगा। अगर आप सहमत होते हैं, तो जून में शादी तय हो सकती है।'

मुझे अपना समय बर्बाद न करने की खुशी भरी सोच से मन भर गया।

रातें मैं अकेले छत पर बैठकर आसमान को निहारते और तारे गिनते हुए बिताता था। शाम होते-होते मैं पलायमकोट्टई के लिए निकल पड़ा और अगली ही सुबह अपने पिता को चौंका दिया। मेरे पिता दिल खोलकर हँसे और अपने रूममेट श्री शंकर से मेरे इतनी जल्दी पहुँचने का मज़ाक उड़ाया।

“मेरे बेटे शंकर को देखो! मैंने अभी-अभी उसे कुछ पंक्तियाँ लिखकर दी हैं कि...”

"आओ और लड़की को देखो। खुद पर काबू न रख पाने के कारण वह सुबह ही आ गया है।" लेकिन शंकर ने दोस्ताना जवाब दिया। उसने मेरा समर्थन किया। "वह छब्बीस साल का हो चुका है! कब तक अकेला रह सकता है? किस्मत ने ही उसे यह रास्ता दिखाया है।"

पिता के कमरे में पर्याप्त आराम करने के बाद, एक संदेश भेजा गया।

हमने लड़की के पिता को बताया कि हम शाम को उनके घर आएंगे। अचानक मिली इस सूचना से वे चौंक गए क्योंकि यह योजना बहुत कम समय में बनाई गई थी। लड़की के पिता बहुत अच्छे इंसान थे। वे इंडिया सीमेंट्स कंपनी में सीनियर स्टेनोग्राफर के पद पर कार्यरत थे और घर पर होम्योपैथी का अभ्यास भी करते थे।

जिस शाम का सबसे बेसब्री से इंतज़ार था, वो आ गई। मैंने लड़की से गाने का अनुरोध किया और मैंने सबके सामने निडर होकर शादी के लिए अपनी सहमति दे दी। मेरे पिता यह जानकर बहुत प्रसन्न हुए कि मुझे उनकी चुनी हुई लड़की से पहली नज़र में ही प्यार हो गया था। एक शुभ तिथि तय की गई। मेरी प्रिय कामाक्षी से मेरा विवाह 4 जून, 1967 को तिरुनेलवेली में धूमधाम से संपन्न हुआ, जो गांधीमथी अम्मन मंदिर के लिए प्रसिद्ध था। मैंने अपनी माँ और भाई-बहनों के साथ पश्चिम माम्बलम के वृंदावन स्ट्रीट में एक बड़ा घर किराए पर लिया और अपनी पत्नी के साथ खुशी-खुशी रहने लगा।

मेरे ससुराल वालों को लगा कि चार साल बाद बच्चे का जन्म होना स्वाभाविक है।

देरी हो रही थी। इसलिए उन्होंने कुछ अनुष्ठान किए, जिसके बाद वे तिरुचेंदूर के भगवान मुरुगन मंदिर गए। विशेष प्रार्थनाओं के बाद, मेरी पत्नी गर्भवती हुईं और 1971 में उन्होंने एक सुंदर बच्ची को जन्म दिया।

मेरे गुरु बाबा जी के आशीर्वाद से, वह समय जब मेरी बेटी
इस दुनिया में कदम रखते ही, मुझे मायलापुर में आयोजित प्रथम काव्य सम्मेलन में 'सौंदर्य' विषय पर कविता पाठ करने का निमंत्रण मिला। इस पहले अवसर ने मेरे लिए कविताओं के माध्यम से प्रसिद्धि प्राप्त करने का मार्ग प्रशस्त किया। आगे के अध्यायों में घटनाक्रम आपके सामने सुखद रूप से प्रकट होगा।
अध्याय-25

आध्यात्मिक अलगाव का चरण

हाँ! यह मेरे लिए वाकई एक आश्चर्य की बात थी। जिस दिन मेरा
मेरी बेटी का जन्म हुआ और मुझे पहली बार एक काव्य सम्मेलन में अपनी तमिल कविता का मंचन करने का अवसर मिला। मैं कलाइमामणि कोथमंगलम सुब्बू का बहुत सम्मान करता था, जो एक प्रख्यात व्यक्तित्व और कवि थे। वे कावियारंगम के मुख्य अतिथि थे और उन्होंने मंच पर अपनी प्रस्तुति दी। यह मेरे लिए एक सपने के सच होने जैसा था। मैंने इस अनुभव को अपनी निजी डायरी में लिख लिया ताकि जीवन भर इन यादों को संजो कर रख सकूँ।

एक सप्ताह पहले, मेरी मुलाकात मेरे कार्यालय में वी.एस. मणि नामक व्यक्ति से हुई थी।
संयोगवश। वे भारती युवा संघ के सचिव थे। उनसे बातचीत के दौरान, उन्होंने तमिल साहित्य में मेरी रुचि और प्रसिद्ध कवि सुब्रमण्यम भारती के प्रति मेरे आदर और प्रेम को भांप लिया। उन्होंने मेरे हाथों में एक रसीद पुस्तिका थमा दी और मुझसे आरबीआई के मित्रों से संघ के लिए चंदा इकट्ठा करने को कहा। साथ ही, उन्होंने उसी सप्ताह मेरी प्रतिभा को प्रदर्शित करने की व्यवस्था भी कर दी।

उनके द्वारा बढ़ाए गए आत्मविश्वास और मेरे उस सपने के साथ जो मैं संजोए हुए था...
अपनी कविताओं को एक नए स्तर पर ले जाने के लिए, अपने गुरु के प्रति आस्था के साथ, मैंने 'सौंदर्य' विषय पर साठ पंक्तियाँ लिखीं। मैंने घर में कई बार कविता का पाठ करने का अभ्यास किया।
14 अप्रैल, 1971 मेरे लिए एक शुभ दिन था। इसने मुझ पर खुशियों की वर्षा की।
मुझे बेहद खुशी हुई। मैंने अपनी कविता की पंक्तियों में हास्य का पुट डाला था। दर्शक आनंद ले रहे थे और मुख्य अतिथि श्री कोत्थामंगलम सुब्बू लगातार तालियाँ बजाकर मेरी सराहना कर रहे थे। अंत में, उन्होंने मेरी प्रशंसा की और मुझे 'वेधम' नाम दिया, जो बाद में मेरा उपनाम बन गया।
जैसे ही मैं पोडियम से नीचे उतरा, युवाओं का एक समूह मेरे पास आ गया।
मेरे प्रदर्शन की सराहना करने के लिए मेरे चारों ओर लोग जमा हो गए। उनमें से एक, जो काफी बुद्धिमान लग रहा था, ने मुझसे कहा कि मैं अपने व्याकरण पर ध्यान दूं और कविता लिखने की नई शैली के बजाय पुरानी शैली पर ध्यान केंद्रित करूं। उन्होंने दृढ़ता से यह भी कहा कि अगर मैं अपनी लेखन शैली में बदलाव करता रहूं, तो मेरी प्रतिष्ठा बढ़ सकती है। उनके चले जाने के बाद, मैंने उनके बारे में पूछताछ की। पता चला कि वह कोई और नहीं बल्कि तमिलनाडु के प्रसिद्ध कवि 'तमिलझगन' थे, जो अपने साहित्यिक कार्यों के लिए जाने जाते हैं।
रात करीब दस बजे घर पहुंचते ही मेरा सामना हुआ
एक और सुखद आश्चर्य। मेरे ससुर जी का टेलीग्राम आया था जिसमें उन्होंने बताया था कि मुझे एक बेटी हुई है। अगले ही दिन मैंने तीन दिन की छुट्टी ली और पालमकोट्टई के लिए बस पकड़ी। मेरी प्यारी सी नन्ही बेटी मेरी खूबसूरत पत्नी के बगल में लेटी हुई अपने नन्हे हाथों को हिला रही थी। उसकी आँखों की चमक ने मेरे दिल में एक झनझनाहट पैदा कर दी, जिससे उसके लिए एक सुंदर कविता की प्रेरणा मिली, जिसे मैं आज भी संजोकर रखता हूँ और अपनी डायरी में लिखे हुए को याद करके खुश होता हूँ।
मैंने अपनी प्यारी सी नन्ही परी का नाम 'सुधा' रखा है। मैंने यह खुशखबरी सबको सुनाई।
मेरे सबसे प्रिय कवि मित्रों में से एक, कविममणि इलंधई रामास्वामी के साथ, जिन्होंने तुरंत ही व्याकरण की उत्कृष्ट शैली से परिपूर्ण कुछ काव्यात्मक पंक्तियाँ लिख डालीं। उनकी बौद्धिक क्षमता को देखकर मैं वास्तव में आश्चर्यचकित रह गया कि उन्होंने इतनी कम समय में इतने कठिन शब्दों को एक साथ पिरो लिया।
जब मैंने इसके बारे में पूछा, तो उन्होंने कुछ पुस्तकों का सुझाव दिया।

व्याकरण (वेन्बा) की वह पुस्तक, जिसका उन्होंने स्वयं उपयोग करके इतनी महारत हासिल की थी। उनके प्रेरणादायक शब्द आज भी मुझे याद हैं। मैंने वे पुस्तकें खरीदीं और बड़ी मेहनत से और कविताएँ लिखने का अभ्यास किया। भारती युवा संघ में अपनी प्रतिभा का प्रदर्शन करने से मुझे काफी अवसर मिले। मुझे काव्य क्षेत्र में मानद उपाधियाँ प्राप्त हुईं और मैंने वाद-विवाद और विभिन्न सभाओं में भाग लिया। मैंने संघ के लिए धन भी जुटाया और जल्द ही, 1973 में, मुझे 'भारती पट्टिमंद्र अकादमी' के 'सहयोगी सचिव' के पद से सम्मानित किया गया। इससे मुझे विशाल जनसमूह का सामना करने और महान लोगों से मिलने का और अधिक अनुभव और आत्मविश्वास मिला।

छह साल के भीतर ही मैं 'कविग्नर वेधम' के नाम से प्रसिद्ध हो गया।

साहित्यिक मंडली। मेरे कार्यालय के सहकर्मी भी मुझे ए.आर.एस. के बजाय 'वेधम सर' कहकर बुलाने लगे। इन सबके बीच, मैं नास्तिकों के एक समूह से परिचित हो गया, जो खुद को 'नास्तिक' कहते थे। समाज में व्याप्त अंधकारमय राजनीति और अन्याय को देखते हुए, मुझे ईश्वर के अस्तित्व पर संदेह होने लगा।

इस तरह के परिणाम को देखकर मेरा मन बुरी तरह विचलित हो गया।

मेरे आस-पास के भेदभावों ने मुझे लगभग चालीस कविताएँ लिखने के लिए प्रेरित किया। इन कविताओं में पक्षपातपूर्ण समाज के परिणामों और उसमें व्याप्त बुराइयों का वर्णन है। मैंने भारती मंड्रम के विभिन्न चरणों पर अपने विचार व्यक्त किए हैं। ये पंक्तियाँ मुख्य रूप से ईश्वर के उस रवैये के विरुद्ध हैं जो न तो बुराइयों की निंदा करता है और न ही संसार को सही राह पर लाने के लिए आगे आता है।

भारती कलाई कज़गम (एक प्रसिद्ध तमिल सभा) के प्रमुख

श्री सूरज और कवि श्री ना. श्री वरदराजन और तमिझझगन ने मुझे सलाह दी कि मैं ईश्वर के विरुद्ध मार्ग पर न चलूँ और काव्य जगत में अपना भविष्य और प्रतिष्ठा बर्बाद न करूँ। उन्हें डर था कि नास्तिकता के प्रति मेरा रवैया मुझे पतन की ओर ले जाएगा। 1972-1974 के दौरान मेरे इस रवैये ने घर में भी भ्रम की स्थिति पैदा कर दी थी।

1972 और 1974 के दौरान मुझे एक और बेटी का सुख प्राप्त हुआ।
मेरे दो बेटे हुए, एक बेटी राजी और एक बेटा स्वामीनाथन। मेरी आर्थिक स्थिति और भी खराब हो गई और परिवार में कुछ झगड़े भी होने लगे। बाद में मुझे एहसास हुआ कि इसका एक कारण आध्यात्मिक साधनाओं को अचानक छोड़ देना और गुरु बाबा जी से संपर्क टूट जाना था। दूसरा कारण मेरे अगले भाई वेंकिटाचलम द्वारा की जाने वाली बुरी प्लैंचेट (एक तख्ता जिस पर भूतों से बात करवाई जा सकती है) की प्रथा का प्रभाव था। इससे पूरे परिवार पर बहुत बुरा असर पड़ा और हम ईश्वर की उपासना से दूर होने लगे। बाद में मुझे एहसास हुआ कि हमारे पूर्वजों में से किसी एक की बेचैन आत्मा ने परिवार में अराजकता फैलाने की सोची थी, और इसीलिए यह सब भ्रम और त्रासदी हुई।

हिंदू धर्म की धार्मिक प्रथाओं से जुड़े व्यक्ति के रूप में, मैं मैं पाठकों को आगाह करना चाहता हूँ कि वे हमारी पारंपरिक पूजा-अर्चना और मंत्रोच्चार का पालन न करने के प्रति सचेत रहें। ऐसा न करने पर हम अपने आसपास के नकारात्मक तत्वों से गुमराह हो जाएँगे और इसके बुरे परिणाम भुगतने पड़ सकते हैं। यह मेरे व्यक्तिगत अनुभव से बिल्कुल सिद्ध है। मैं इसे संक्षेप में समझाने का प्रयास करूँगा।
मेरे भाई वेंकट अपने एक दोस्त के यहाँ से एक प्लानशेट घर लाए थे।
उसके दोस्तों ने ही उसे यह सिखाया था कि इसका इस्तेमाल करके वह दिवंगत आत्माओं से जानकारी और रहस्य कैसे प्राप्त कर सकता है। उसने हमारे सबसे छोटे भाई कृष्णन (14 वर्ष) और हमारी एक बहन (10 वर्ष) को माध्यम बनाकर जानकारी प्राप्त की। कुछ जानकारी सही साबित हुई, लेकिन कुछ गलत। पहले तो मुझे घर में हो रही इन सब बातों की जानकारी नहीं थी, इसलिए मैं उसे रोक या नियंत्रित नहीं कर पाई। लेकिन धीरे-धीरे घर में अराजकता फैलने लगी। वेंकट ने शाम को अपनी सभी आध्यात्मिक साधनाएँ बंद कर दीं और धार्मिक गतिविधियों से दूर होता चला गया। आखिरकार जब मुझे इन सब बातों का पता चला, तब तक बहुत देर हो चुकी थी। मैंने उसे तख्ती फेंक देने के लिए मनाने की कोशिश की और उससे सही रास्ते पर चलने की विनती की, साथ ही बुरी शक्तियों के कृत्यों के बारे में अपनी चिंता भी जताई। उसने मेरी हर बात को यह कहकर खारिज कर दिया कि वह केवल अच्छी आत्माओं का आह्वान कर रहा है। उसे पूरा विश्वास था कि इससे हमारे पड़ोसियों और दोस्तों को लाभ हुआ है। उसने मेरे डर का मज़ाक उड़ाया और मुझे कायर कहा।

इस वजह से मैं न तो अपने ध्यान पर एकाग्र हो सका और न ही मुझे अपने गुरु से दिव्य मार्गदर्शन प्राप्त हुआ। मेरा मन सदा दुःख से ग्रस्त रहता था।

मेरी पत्नी के सांत्वना भरे और प्यार भरे शब्द भी मेरे दिल को छू नहीं सके। खुशी। मेरे मन में नास्तिक विचार बार-बार उभर रहे थे। अगर ईश्वर या कोई सर्वोच्च सत्ता है, तो उसे अब तक हमारी रक्षा कर लेनी चाहिए थी। घर में असमंजस का माहौल था और मैं किसी चमत्कार की कामना करने लगी थी। उस समय मेरे पिता तिरुनेलवेली में काम करते थे। मेरी माँ एक भोली-भाली और बेहद विनम्र महिला थीं। वह अपने पति और बेटों के मिजाज से डरते हुए अपना जीवन व्यतीत करती थीं।

एक दिन, सत्र के दौरान, एक आत्मा ने वेंकट से बात की। “तुम्हारा जीवन
आपका कर्म समाप्त हो गया है। आपने लोगों की बहुत मदद की है। आपके कर्मों का फल आपको मिल चुका है। आपको बार-बार जन्म लेने की आवश्यकता नहीं है। किसी भी तरह अपना जीवन समाप्त करें, प्लैंचेट जला दें और हमारे साथ जुड़ जाएं। भगवान नारायण आपको देवलोक बुला रहे हैं।
वह यह नहीं समझ सका कि यह बुलावा एक दुष्ट आत्मा की ओर से था।
उस पर विश्वास करते हुए, उसने आधी रात को खुद को आग लगा ली और अपनी जान दे दी। उसने जो आखिरी अच्छा काम किया, वह यह था कि उसने इस बारे में विस्तार से एक पत्र लिखा और यह भी कहा कि उसके इस फैसले के लिए उसके परिवार वाले जिम्मेदार नहीं थे। इस तरह हम सब पुलिस की गिरफ्तारी से बच गए।

मानो इतना ही काफी नहीं था, मेरा दूसरा भाई मानसिक रूप से बीमार था। वह परेशान था और तीन महीने तक इधर-उधर भटकता रहा। सौभाग्यवश, वह जल्द ही ठीक हो गया। एक दिन उसने मुझसे कहा, “भाई! मैं आत्माओं के निर्देशों का उपहास कर रहा था। शायद इसी वजह से मुझे यह पीड़ा सहनी पड़ी!” ये अप्रिय घटनाएँ एक ऐसे परिवार में घटीं जो कभी धार्मिक और ईश्वर से डरने वाला था।

जल्द ही मुझे अपने ऑफिस में एक नया दोस्त मिल गया। उसका नाम वासुदेवन था।
वे पूरी तरह से आध्यात्मिकता के प्रति समर्पित थे और उन्होंने विवाह का त्याग कर दिया था। उनकी दोनों बहनें भी ऐसा ही करती थीं। उन्होंने मुझे मेरी उलझन और नास्तिक मानसिकता से बाहर निकालने में बहुत मदद की। उन्होंने मुझे योगियों और संतों पर बहुत सी किताबें दीं। हम दोपहर के भोजन के समय इन सब विषयों पर खूब बातें करते थे। धीरे-धीरे मेरा आध्यात्मिक विश्वास फिर से जागृत हो गया।
1975 में, एक दिन गुरु बाबा जी मेरे सपने में प्रकट हुए और मुझसे बात की।
“मेरे पुत्र! तुमने दूसरा रास्ता क्यों चुना? क्या उससे तुम्हें सुख मिला? क्या उससे तुम्हारी समस्याओं का कोई स्थायी समाधान मिला? ऐसा नहीं है। तो फिर तुमने खुद को भ्रमित क्यों होने दिया? क्या तुमने नकारात्मक शक्तियों का प्रभाव देखा? तुम्हारे कुछ बुरे कर्मों के कारण मैं तुम्हारी रक्षा या सहायता नहीं कर सका। क्या तुमने सचमुच हिंदू दर्शन या भारती के गीतों का गहन अध्ययन किया? यदि हाँ, तो तुम्हें पता चल जाता कि उनमें नास्तिकता थी या नहीं। मैं तो बस यह देख रहा था कि तुम दूसरे रास्ते पर कितना आगे जा सकते हो। इसीलिए मैं लंबे समय तक तुम्हारे भीतर प्रकट नहीं हुआ। अब जब तुम अपने नियत मार्ग पर लौट आए हो, मैं तुम्हारे सामने हूँ। हम दोनों आध्यात्मिकता की गहरी नदी में लीन हैं और दिव्य रत्नों की पूजा कर रहे हैं। यह बात कभी मत भूलना!”
यह कहते हुए, उन्होंने मुझे आशीर्वाद देने के लिए अपने हाथ मेरे सिर पर रखे और
वह गायब हो गया। इस घटना के बाद, आध्यात्मिक मार्ग पर चलने का मेरा दृढ़ निश्चय हो गया। कुछ दिनों बाद, मैं संत श्री वेदत्री महर्षि से उनके तिरुवनमियूर आश्रम में मिला और उनका दिव्य स्पर्श तथा आगे की आध्यात्मिक उन्नति प्राप्त की।
धीरे-धीरे, मैं अपनी कविताओं के माध्यम से प्रसिद्ध होने लगा।
सन् 1975 में मैंने एक साहित्यिक प्रतियोगिता में भाग लिया। इसके लिए मैंने 'गायत्रीयिन कादल' नामक एक कहानी लिखी। गुरु के आशीर्वाद से यह कहानी मैंने बहुत कम समय में रच ली थी। प्रतियोगिता का आयोजन प्रसिद्ध तमिल साहित्यिक पत्रिका 'अमुधासुरभि' के संपादक श्री विक्रम और अंग्रेजी मासिक पत्रिका 'पोएट' के संचालक कवि श्री कृष्णश्रीनिवास ने किया था। लगभग छह सौ प्रतिभागियों ने भाग लिया था, लेकिन मेरी रचना सर्वश्रेष्ठ कृतियों में से एक चुनी गई और मुझे प्रथम पुरस्कार के साथ एक हजार रुपये की राशि मिली, जो उस समय काफी मूल्यवान थी।

अध्याय-26
मेरे गुरु कौन हैं?

एक हजार रुपये की पुरस्कार राशि दी गई
विश्वप्रसिद्ध कवि डॉ. कृष्णश्रीनिवास के हाथों से मुझे यह उपहार मिला, उस समय महान उपन्यासकार ना.पा., न्यायमूर्ति महाराजन और ‘कलाईमामणि’ विक्रम भी उपस्थित थे। भारती कलाइकाझगम [एसोसिएशन] के

मेरे मित्र और फिल्मी कवि वैरामुथु भी भीड़ में शामिल थे, जिन्होंने मेरा उत्साह बढ़ाया और मेरी प्रशंसा की। उस समय वैरामुथु को सिनेमा जगत में कई प्रस्ताव मिल रहे थे और वे अपने करियर के विकास के दौर में थे। उन्होंने मुझे गले लगाया और खुशी से बातें कीं।

“वेधम सर, मुझे आपके लिए बहुत खुशी है! मुझे कई ऑफर मिल रहे हैं।”

"मेरे गीतों के लिए सिनेमा जगत में जगह बनेगी, जैसा कि आपने उस दिन भविष्यवाणी की थी! मुझे पूरा विश्वास है कि मैं भी आपकी तरह मशहूर हो जाऊंगा।" मुझे आज भी उनकी आवाज़ मेरे कानों में गूंजती हुई याद है।

इस घटना के बाद मुझे कई कार्यक्रमों के लिए बुलावा आया।

विभिन्न संगठनों में भाग लेने के दौरान, मुझे नाटक सभाओं और कविरंगमों (कवियों के सम्मेलन) में मुख्य अतिथि के रूप में भी आमंत्रित किया गया। अपने कौशल को निखारने के उद्देश्य से, मैंने अमर कवियों, भारती और कंबर के बारे में अधिक जानकारी जुटाने और शोध करने का कार्य शुरू किया। इसके माध्यम से, मुझे डॉ. अव्वई नटराजन, डॉ. सिलंबोली चेल्लाप्पन और कई अन्य समान विचारधारा वाले अच्छे लोगों से परिचय हुआ। मुझे अपनी प्रतिभा को प्रदर्शित करने के लिए और अधिक मंच मिले।

इसी बीच, भारतीय रिजर्व बैंक, मद्रास ने मेरे लिए राशि आवंटित कर दी।

बेसंतनगर स्थित रिजर्व बैंक स्टाफ क्वार्टर्स में एक अपार्टमेंट था। मेरा फ्लैट तीसरी मंजिल पर था। मैं अपनी पत्नी और तीन छोटे बच्चों के साथ खुशी-खुशी वहां रहने लगा। गुरु के आशीर्वाद से मेरे भाई-बहनों ने अच्छी शिक्षा प्राप्त की और बाद में एक-एक करके उनकी शादी हो गई।

मेरी पत्नी कामाक्षी ने घर के सारे काम बखूबी संभाल लिए।

उन्होंने परिवार की देखभाल करने और मेरी बहनों की शादियों में भी बहुत अच्छा सहयोग दिया। पैसों की कमी होने पर उन्होंने तुरंत अपने गहने उधार दे दिए और मेरे कर्तव्यों को निभाने में मेरी मदद की... मेरे माता-पिता उनके इस दयालु स्वभाव से बहुत प्रभावित हुए और उनकी बहुत प्रशंसा की। मैंने उनके प्रति अपनी कृतज्ञता और आभार व्यक्त करते हुए उन पर एक कविता लिखी।

अप्रैल 1976 में, मेरे वरिष्ठ आरबीआई अधिकारी श्री बालू मुझे अपने साथ ले गए।

विभिन्न बैंकों में पुराने करेंसी नोटों का निरीक्षण। उन्होंने मेरे काम की सराहना की और मेरे बारे में उच्च अधिकारियों को एक अच्छी रिपोर्ट लिखी। मैं था

मुझे अधिकारी पद की परीक्षा में बैठने के लिए कहा गया। 1976 के अंत तक, मुझे अधिकारी पद पर पदोन्नति मिल गई। मुझे आरबीआई के नए विभागों में काम करने का सौभाग्य प्राप्त हुआ और मैंने कुछ विभागों में काम करने/विवरण तैयार करने आदि के नीरस और दोहराव वाले तरीकों में बदलाव लाने के लिए नए विचार और तकनीकें लागू कीं। मेरे क्लर्कों और अन्य अधिकारियों ने मेरे प्रयासों और काम की सराहना की। उन्होंने व्यवस्था में बदलाव लाने के लिए मुझे धन्यवाद दिया।

मेरे कुछ करीबी दोस्त, जो अधिकारी और क्लर्क थे, उन्होंने तमिल कविताएँ रचने में अपने कौशल को निखारने और बेहतर बनाने के लिए मुझसे तमिल व्याकरण सीखा। मैंने उनमें से कुछ कविताओं को प्रकाशित करवाने में मदद की।

जल्द ही, मेरे यहाँ एक तमिल साहित्यिक संघ की स्थापना हुई। आवासीय क्वार्टरों में... पंद्रह उत्साही सदस्यों का एक समूह शामिल हुआ और उन्होंने हर महीने एक बैठक आयोजित करने पर सहमति जताई। कई जाने-माने कवियों और विद्वानों ने इसमें भाग लिया। प्रस्तुत की गई कविताओं की तकनीक और व्याकरण पर कोई रोक-टोक नहीं थी। यहां तक कि हाइकु कविताओं को भी आरबीआई निवासियों से खूब सराहना मिली। कविताओं की हस्तलिखित प्रतियां वितरित की गईं और साथी निवासियों द्वारा सराही गईं।

इन सबके बीच, 1976 के अंत में, मेरी प्यास और बढ़ गई।

अपने गुरु के बारे में और अधिक जानने की जिज्ञासा मुझमें जागृत होने लगी। जब मैंने अपने ध्यान सत्र के दौरान अपने गुरु से अपने विचार साझा किए, तो उन्होंने मुझे एक सच्ची खोज के माध्यम से उत्तर खोजने के लिए कहा, जिससे मेरी रुचि और भी बढ़ जाएगी। मैंने अपने गुरु के बारे में संक्षिप्त जानकारी देकर अपनी खोज शुरू की। मासिक पत्रिका 'अमुधासुरभि' के संपादक श्री विक्रम एक महान विद्वान थे, जिन्हें इतिहास और आध्यात्मिकता में अपार रुचि थी।

जब मैंने उनसे पूछा कि मेरा गुरु कौन है, (यह बताते हुए) मेरे सपनों में गुरुजी के जो रूप दिखाई देते हैं!)_ उन्होंने कहा। “वेदम! मुझे नहीं पता। हालाँकि मैंने सिद्ध-पुरुषों पर लेख लिखने के लिए कई लेखकों से संपर्क किया था, लेकिन ध्यान के इस मार्ग में मेरी कोई विशेष रुचि नहीं है। इसका कारण यह है कि दिव्य मामलों में मेरी एकाग्रता की कमी है और साथ ही मेरे पत्रिका के काम की कठिन प्रकृति भी इसका कारण है।”

लेकिन, मैं आपको के.आर. वासुदेवन नाम के एक व्यक्ति से मिलवा सकता हूँ, जो दिनामणि कधिर के संपादक हैं।” यह कहते हुए उन्होंने तुरंत एक कागज़ निकाला और उन्हें व्यक्तिगत रूप से पत्र लिखा।

के.आर.वी. दिनामणि कधिर में संपादक के रूप में कार्यरत थे। उस समय मैंने अमुधासुरभि में वेधम नाम से पाँच लघु कथाएँ लिखी थीं। विक्रम ने मुझसे कहा कि प्रकाशन के लिए उनसे मिलने जाते समय मैं कुछ लघु कथाएँ अपने साथ ले जाऊँ।

अपनी पहली यात्रा के दौरान, मैं अपनी दो रचनाएँ साथ ले गया था और

मैं उनसे मायलापुर स्थित उनके घर पर मिलने गया। उन्होंने उन्हें प्रकाशित करने का वादा किया और राजनीति एवं सांसारिक मामलों पर चर्चा करने लगे। चूंकि तीन आगंतुक पहले से ही उनका इंतजार कर रहे थे, इसलिए मैं अपनी खोज के विषय पर बात नहीं कर सका। इसलिए मैंने अपने मित्र के साथ उनसे दोबारा मिलने का वादा किया। निकट भविष्य में अपने गुरु के बारे में जानने की संभावना बढ़ गई थी। ऐसा इसलिए था क्योंकि मेरे मित्र श्री जयराधन ने कुछ लेखकों का व्यक्तिगत रूप से साक्षात्कार लेने के बाद शिरडी

साईबाबा के प्रति के.आर.वी. की भक्ति और आस्था तथा 'ट्रिब्यून' में 'सिद्धारों' पर उनके लेखों के बारे में बहुत कुछ बताया था।

अब तक, मुथु नाम का एक प्रिंटर एक मिनी जर्नल छाप रहा था जिसका नाम था
'अनुविरधम' जैन साहित्य की एक मासिक पत्रिका थी। मैं इस पत्रिका में लेख लिखता था और सेवा भाव से प्रूफरीडिंग में भी मदद करता था। मुथु ने मेरी तीस कविताओं की पहली पुस्तक और पुरस्कार विजेता 'गायत्रीयन कादल' को प्रकाशित करने के लिए आगे आए।

उनके वादे के मुताबिक, किताब एक महीने में प्रकाशित हो गई और तब से यह
यह मेरा पहला प्रयास था। मैंने अपने आरबीआई आवास पर एक छोटे पैमाने पर पुस्तक विमोचन समारोह का आयोजन किया। बैंक अधिकारियों की अनुमति से यह समारोह मुख्य हॉल में आयोजित किया गया, जिसे आधिकारिक बैठकों और नाटक आदि के आयोजन के लिए बनाया गया था। तमिल के महान विद्वान और लेखक ना. पार्थसारथी, जिन्हें प्यार से ना. पा कहा जाता था, मुख्य अतिथि थे और श्री विक्रम (मेरे अमुधासुरभि के संपादक मित्र) ने मेरी कविता पुस्तक के बारे में बोलने की सहमति दी। सब कुछ बहुत अच्छे से संपन्न हुआ।

उस शाम करीब छह बजे, मेरे लिविंग रूम के प्रवेश द्वार पर
क्वार्टर में, मुझे एक लंबी दाढ़ी वाले बूढ़े मुस्लिम व्यक्ति ने रोक लिया। उन्होंने मुझसे मज़ाकिया लहजे में कहा, "क्या चल रहा है, अय्यर? लगता है किताब आज ही प्रकाशित हुई है! हम्म... तुम्हारे गुरु के बारे में तुम्हारी खोज का जवाब कल मिलेगा... क्या मैं सही कह रहा हूँ? बहुत बढ़िया!"
मैं उनके शब्दों से सचमुच स्तब्ध रह गया। “जी जी सर! आपने जो कहा वो बिल्कुल सही है।”
अभी जो कहा वो बिलकुल सही है। मैं आपको पहचान नहीं पा रहा हूँ, लेकिन आपके शब्द पहेली के टुकड़ों की तरह लग रहे हैं। कृपया घर आइए, एक कप कॉफ़ी पीजिए। फिर हम बात कर सकते हैं।
वह ज़ोर से हँसा। "क्यों, क्यों! क्या तुम मुझे कैद करने की कोशिश कर रहे हो?"
आपका विश्वास? क्या आपको लगता है कि यह सचमुच संभव है?” यह कहते हुए वह तेज़ी से चले और दूध के ठेले पर पहुँचते ही धुएँ के झोंके की तरह गायब हो गए। मैं उनके अचानक गायब होने से स्तब्ध रह गया और मुझे पूरा विश्वास था कि वह एक सिद्धार थे। मुझे अचानक अपराधबोध और एक तरह की तड़प महसूस हुई। काश मैं उनसे अपने गुरु के बारे में पूछ पाता।
लेकिन, अगली सुबह उनके उलझन भरे सवालों का जवाब मिल गया।
रविवार होने के कारण मेरा मित्र जयराधन मुझे श्री वासुदेवन के पास ले जाने के लिए मेरे घर आया। “वेदम! चलो आज उनसे मिलते हैं और तुम्हारे गुरु के बारे में जरूर पूछेंगे। मैं अपना नया उपन्यास लाया हूँ और उन्हें देना चाहता हूँ। उनकी बातों के बीच में मैं तुम्हारे गुरु की याद दिलाने की कोशिश करूँगा। नहीं तो वे बिना रुके बोलते ही रहेंगे।”

मैं उस बूढ़े आदमी की कही बातों के बारे में सोचता रहा। उसके शब्द थे...
यह सच हो गया और मैं अवाक रह गया। उत्साह से भर कर मैं अपने दोस्त के साथ मायलापुर के लिए रवाना हो गया। हम श्री वासुदेवन के घर पहुँचे, जिन्होंने मेरे दोस्त से किताब लेकर साईं की तस्वीर के सामने रख दी।
“हम्म... जयराधन! तुम तो हमेशा से ही कहानियां सुनाने में माहिर हो। तुम्हारी
उपन्यास अच्छा लिखा होना चाहिए!” फिर उन्होंने साईबाबा और अपने दिव्य अनुभवों के बारे में बात करना शुरू किया। विषय तिरुवनमलाई योगी रामसुरतकुमार की ओर मुड़ गया। उन्होंने दिनमणि पत्रिका के विशेष अंक [पोंगल] के लिए इस महान योगी के साथ हुई अपनी मुलाकातों और उनसे प्राप्त आध्यात्मिक रहस्यों के बारे में विस्तार से बताया। बातचीत का विषय इतना रोचक था कि हम कुछ समय के लिए अपनी भूख भूल गए और दोपहर हो चुकी थी।

अंततः, लगभग दो बजे, उनकी पत्नी तीन कटोरे लेकर आईं। उन्होंने हमें सब्जी का सूप दिया और कहा कि हम काफी देर से बैठे हैं और भूख लग सकती है, इसलिए पी लें। भूख की तेज चुभन को भांपते हुए हमने देखते ही देखते सूप के दो कप खत्म कर दिए। लेकिन संपादक वासुदेवन ने एक कप से ज्यादा सूप पीने से इनकार कर दिया और कहा कि महान लेखकों (मेरी और जयराथन की ओर इशारा करते हुए) से बातचीत ने उन्हें काफी तृप्त कर दिया है। हम विनम्र महसूस कर रहे थे और उनकी पत्नी को स्वादिष्ट सूप के लिए धन्यवाद दिया। ठीक उसी समय, मेरे दोस्त ने बीच में दखल दिया।
“महोदय! मेरा मित्र वेधम संत के बारे में आपसे पूछने आया है।”
जो उनके सपनों में और ध्यान के दौरान हमेशा प्रकट होते हैं। कृपया उन्हें उनके गुरु को ढूंढने में मदद करें।” वासुदेवन ने तुरंत मुझे खुद से पूछने में हिचकिचाने के लिए डांटा। तब मैंने कहा, “गुरुजी! लगभग बारह वर्ष की आयु में मेरे जनेऊ संस्कार के बाद, जब भी मैं पूरी श्रद्धा से गायत्री मंत्र का जाप करता था, मेरे गुरु मेरे सपनों, दर्शनों और बाद में मेरे ध्यान अभ्यास के दौरान प्रकट होते थे। उनका माथा गंजा दिखाई देता है, उनकी छोटी सी मूंछें हैं और उनका पेट निकला हुआ है। वे हमेशा पद्मासन मुद्रा में रहते हैं।”

इससे पहले कि मैं अपना वाक्य पूरा कर पाती, उसने खुशी से जवाब दिया। “ओह! मैं मुझे पता है। ये संत लहरी महाशय स्वामी हैं। ये महावतार बाबाजी के प्रत्यक्ष शिष्य थे। वे अब जीवित नहीं हैं, लेकिन उनकी एक प्रतिमा काशी में है। लगभग 120 वर्ष पूर्व, उन्होंने काशी और कलकत्ता में कई लोगों को क्रियायोग के मार्ग पर दीक्षित किया था। यह योग की एक नई विधि थी जिसमें गहन ध्यान और कुछ व्यायामों का संयोजन था, और मैंने सुना था कि वे ज्ञान प्रदान करने के लिए चुनिंदा लोगों का चयन करते हैं। "आप बहुत भाग्यशाली व्यक्ति हैं, वेधम। मुझे अपना हाथ दीजिए।" उन्होंने मेरा हाथ खींचा और उसे चूमा।

बस इतना ही काफी था कि मुझे चक्कर आने लगे और बिजली का झटका सा महसूस हुआ।

यह विचार मेरे पूरे शरीर में फैल गया। मेरे अंतर्मन ने कहा, “ओह! श्री वासुदेवन को भी योग परंपरा से होना चाहिए। अन्यथा इतने सारे आध्यात्मिक विषयों और प्रबुद्धों के बारे में विस्तार से बात करना असंभव है। उन्हें भी वास्तव में आशीर्वाद प्राप्त होना चाहिए।”

मैं तुरंत उनके चरणों में गिर पड़ा और कांपती हुई आवाज में बोला।
“बहुत-बहुत धन्यवाद, महोदय! क्या आप मुझे कोई ऐसी पुस्तक बता सकते हैं जिससे मुझे अपने गुरु के बारे में और अधिक जानने में मदद मिल सके?”

नरम स्वर में उत्तर देते हुए उन्होंने आगे कहा, “एक किताब है जिसका नाम है
‘ऑटोबायोग्राफी ऑफ अ योगी’। इस पुस्तक के लेखक स्वामी परमहंस योगानंद हैं। मैंने इस पुस्तक को कई बार पढ़ा है, लेकिन अभी यह मेरे पास नहीं है। मैंने इसे अपने एक मित्र को उधार दिया है। क्षमा करें, वेधम!

अचानक मेरी आँखों में एक तीव्र लालसा की चमक दिखाई दी। जयराधन ने पकड़ रखा था।
मैंने कांपती हुई उंगलियों को कसकर पकड़ा और उसे वह किताब देने का वादा किया जो वह हमेशा अपने पास रखता था। “कल घर आ जाना, वेधम! तुम अपने गुरु के बारे में और जान पाओगे। चिंता मत करो!”

अध्याय-27
महान गुरुओं की दृष्टि

मेरे दोस्त के कहे शब्दों ने मुझे कंपकंपा दिया। यह बिल्कुल ही भयानक था। खुशी और आश्चर्य के मारे, मैंने तुरंत उनके घर जाकर आध्यात्मिक पुस्तक लेने का निश्चय कर लिया। उनका घर मेरे घर के रास्ते में ही पड़ता था। हमने दिनामणि कधिर के संपादक श्री वासुदेवन को विदाई दी। तब तक शाम के चार बज चुके थे। रास्ते में मैंने जयराथन से उनके घर चलने की इच्छा व्यक्त की। वे मेरे गुरु के बारे में और अधिक जानने की मेरी उत्सुकता और उनके प्रति मेरे आदर को समझ गए। वे मुझे ले जाने के लिए सहमत हो गए। जैसे ही मैंने उनके घर में कदम रखा, एक अजीब सी अनुभूति ने मुझे घेर लिया।

उनकी पत्नी ने अनुमान लगाया कि शायद हमने ठीक से दोपहर का भोजन नहीं किया था। टेबल पर पूरियों और आलू की करी की थाली सजी हुई थी। उसके बाद गरमागरम कॉफी परोसी गई। खाना बेहद स्वादिष्ट था और मैं उनके लज़ीज़ खाने के लिए उनका जितना भी शुक्रिया अदा करूं कम है। हमने उनका स्वादिष्ट टिफिन खत्म किया।
फिर, इससे पहले कि मैं कुछ कह पाता, जयराधन अंदर चला गया और
मैं ‘ऑटोबायोग्राफी ऑफ अ योगी’ नामक पुस्तक लेकर आया। पुस्तक बड़े करीने से जिल्दबंद थी और मैंने उसे दोनों हाथों से ग्रहण किया और उसके सामने प्रणाम किया। मैंने यूं ही एक पृष्ठ खोला और देखते ही देखते मेरे गुरुजी लहरी बाबा जी का एक सुंदर चित्र मेरे सामने आ गया। उनकी आंखें आधी खुली थीं और वे पद्मासन में समाधि की अवस्था में बैठे थे।
उस तस्वीर ने मेरे अंदर भावनात्मक उथल-पुथल पैदा कर दी। मैं जोर से चिल्ला उठा।
मैं जिस वातावरण में था, उसके बारे में सोचे बिना ही, "मेरे मित्र! देखो! मेरे गुरुजी ने मुझे स्वयं आशीर्वाद दिया है!"
मेरी अचानक हुई इस तीखी प्रतिक्रिया को सुनकर जयराधन की पत्नी लक्ष्मी चौंक गई।
और वह रसोई से दौड़ती हुई आई। लेकिन मेरी दोस्त ने स्थिति को अच्छे से संभाला और उसे बताया कि यह एक शिष्य का भावुक रोना था जो पिछले बीस वर्षों से अपने गुरु के बारे में ज्ञान की खोज कर रहा था।
दस मिनट के भीतर, मैंने अपने द्वारा लिखे गए छह पृष्ठों को पढ़ डाला।
गुरु की तस्वीर पलक झपकते ही प्रकट हो गई! मैं समाधि की अवस्था में चला गया और मेरे गुरु मेरे आज्ञा चक्र (मेरे माथे के मध्य भाग) में प्रकट हुए।

प्रिय! क्या मेरे बारे में जानने की तुम्हारी जिज्ञासा शांत हो गई? अब तक मैंने बहुत सी कठिनाइयों का सामना किया है। लेकिन, यह पुष्टि करने के लिए कि मैं तुम्हारा गुरु हूँ, अपने मित्र से पूछो कि क्या उसने अड़तीस पृष्ठों से आगे पढ़ा है। कहानी में उसकी एकाग्रता और विश्वास खो गया था और उसने दो महीने तक किताब को एक तरफ रख दिया था। वह अड़तीसवें पृष्ठ के बाद नहीं गया था। उससे पूछो कि क्या यह सच है या नहीं। उसके उत्तर से तुम समझ जाओगे कि मैं तुम्हारा गुरु हूँ।" इसके साथ ही उनका दर्शन मिट गया।

मन में एक सुखद अनुभूति के साथ, मैंने वह प्रश्न पूछा जो मेरे गुरु ने पूछा था। यह बात मैंने बताई थी। जयराधन यह सुनकर चौंक गया।

“हाँ, मेरे दोस्त! तीस पढ़ने के बाद मैं अपना ध्यान केंद्रित नहीं कर पा रहा था।” आठ पन्ने। मैं पूरी तरह से हैरान था कि चौदह साल का एक लड़का (उसने श्री परमहंस योगानंद का जिक्र किया, जो उस अद्भुत दिव्य ग्रंथ के लेखक हैं!) अपने गुरु की खोज में बर्फ से ढके हिमालय में घर से कैसे निकल सकता है। अविश्वास के कारण मैंने किताब वापस रख दी और आगे पढ़ना बंद कर दिया। "तुम्हें ये सब किसने बताया?" मेरे दोस्त ने संदेह और भय से भरी आँखों से पूछा।

हंसते हुए मैंने अपने गुरु की तस्वीर की ओर इशारा किया। “उन्होंने यह भी कहा था कि अगर आपने अभी-अभी मेरी बात से सहमति जताई, इससे मुझे यकीन हो जाना चाहिए कि वे मेरे गुरु हैं। आपके जवाब से यह पुष्टि हो गई है कि वे वास्तव में मेरे गुरु हैं। इससे मुझे बहुत खुशी हुई!

मेरी खुशी भरी प्रतिक्रिया देखकर मेरी दोस्त की आंखों में आंसू आ गए। मुझे भी वैसी ही खुशी हुई। उन्होंने तुरंत मेरे हाथ पकड़ लिए। “जैसा कि श्री वासुदेवन ने कहा, आप सचमुच एक सच्चे ईश्वरीय वरदानी व्यक्ति हैं। कृपया मेरे और मेरे पूरे परिवार के लिए प्रार्थना कीजिए। अब मुझे आपके सामने नतमस्तक होने का मन कर रहा है। आपके गुरु एक महान संत हैं।”

वह मेरे पैरों पर गिरने के लिए उठा लेकिन मैंने उसे ऐसा करने से रोक दिया। “जेयारधन, तुम ये क्या कर रहे हो? हम दोनों एक ही नाव में सवार हैं। तुम एक महान लेखक और ज्योतिषी हो। तुम मुझसे उम्र में बड़े हो। ऐसा कभी मत करना।”

यह कहते हुए मैं तुरंत खड़ा हो गया और उससे कहा कि यह था अब जाने का समय हो गया है क्योंकि मेरी पत्नी चिंतित होगी, क्योंकि मैं सुबह बहुत जल्दी घर से निकल गया था। मैंने उसे आश्वासन दिया कि मैं किताब पढ़ने के बाद लौटा दूंगा और मद्रास के माउंट रोड स्थित हिगिनबोथम्स से उसकी एक प्रति खरीद लूंगा।

प्रिय मित्र! आपकी अपार सहायता से मेरी खोज पूरी हो गई है। ऐसा करके आपने मेरे दिल में हमेशा के लिए जगह बना ली है। आपको मेरा हार्दिक प्रणाम! अगर मेरे गुरुजी आपके बारे में मुझे और कुछ बताते हैं, तो मैं आपको जरूर बताऊँगा। अब मैं चलता हूँ।" मैंने उन दोनों को उनके आतिथ्य के लिए धन्यवाद दिया और घर से निकल गया।

अपने गुरु के दर्शन या दर्शन के प्रतीक के रूप में और अपनी ओर से यह संदेश देते हुए
गुरुजी के उनके बारे में कहे शब्दों को सुनकर, जयराधन ने श्री लहरी महान का आशीर्वाद पाने के लिए बाकी की किताब पढ़ने का वादा किया और ऑटो पकड़ने में मेरी मदद करने के लिए मेरे साथ सड़क तक आए। उन्होंने यात्रा का किराया भी दिया। मैं उनकी इस दयालुता को ठुकरा नहीं सका और उनके इस भाव से चकित रह गया।

मैंने दो दिनों के भीतर ही किताब पूरी कर ली। सौभाग्यवश, कार्यालय दो दिन तक मैं कार्यालय बंद रहा और पुस्तक का हर एक शब्द मैं पूरी तरह समझ और याद रख सका। पुस्तक ने मेरे भीतर आध्यात्मिक लहरें पैदा कर दीं और मैं समाधि जैसी अवस्था में पहुँच गया। पढ़ने के तीसरे दिन से मुझे लगातार चक्कर आने लगे। मेरा शरीर बहुत गर्म था और मस्तिष्क में भी अत्यधिक गर्मी महसूस हो रही थी। मैं अपना रोज़मर्रा का काम ठीक से नहीं कर पा रहा था। इसलिए मैंने कार्यालय से एक सप्ताह की छुट्टी ले ली। मेरा पूरा परिवार मेरी हालत देखकर भयभीत हो गया और उन्होंने जयराधन से मदद मांगी। वे तुरंत मुझसे मिलने आए और मेरी हालत समझ गए।

“आपके पति ने अपने गुरु को पूरी तरह से समझ लिया है और इस अहसास ने उन्हें परमानंद की अवस्था में पहुंचा दिया है। उन्होंने मेरी पत्नी को सांत्वना दी, लेकिन बात यहीं खत्म नहीं हुई।

He called Isaikavi. Ramanan’s father, Sri. Anantha Ramaseshan, जो ‘हिंदू’ में सहायक संपादक थे। उन्होंने मेरी स्थिति के बारे में बताया और पूछा कि क्या वे मेरी मदद कर सकते हैं। श्री रामसेसन मुझसे मिलने आए और उन्होंने मुझे अगले रविवार को अपने मंत्र गुरु श्री राम अयंगर स्वामीगल के पास ले जाने का वादा किया।

'सिंगपेरुमल कोइल' एक जगह है जो तांबरम के पास स्थित है, मराइमलाई नगर के पास। श्री राम अयंगर स्वामीगल वहाँ रहते थे। घर के सामने लगे तीन केले के पेड़ों ने हमारे प्रवेश करते ही स्वागत में अपने पत्ते ज़ोर से हिलाए। सामने एक छोटा सा बरामदा था। जब हम पहुँचे, उस समय घर में बहुत कम लोग थे। हमने घर की मालकिन से एक थाली माँगी और उसमें फल, पान के पत्ते और सुपारी रख दी। फिर हमने उनके सामने प्रणाम किया। मंत्र उपासना स्वामीगल लकड़ी के एक लंबे तख्ते पर बैठे थे। उनकी पंचकच्ची धोती उनकी लंबी लहराती दाढ़ी की तरह सफेद थी। उनकी त्वचा दमक रही थी और एक पल में ही महान शिरडी साईं का रूप मेरी आँखों के सामने प्रकट हो गया। मन में यह विचार आया कि शिरडी साईं मंत्र का स्वरूप श्री राम अयंगर स्वामीगल के रूप में जन्म लिया है। वे शेषन को गुरुवायूरप्पन कहकर पुकारते थे।

“गुरुवायूरप्पा! आप दोनों को मेरा आशीर्वाद। क्या आप लाए हैं?

क्या इस बार ‘अबिरामी’ का कोई भक्त है? लगता है वो परमानंद की अवस्था में है! बताओ, क्या हुआ?

सेशान ने मेरी वर्तमान स्थिति का कारण समझाने की कोशिश की।

“कई वर्षों बाद, एक पुस्तक के माध्यम से, उन्होंने अपने गुरु को पहचान लिया।

उस दिन से वह न तो ठीक से खा-पी रहा है और न ही अपना रोज़मर्रा का काम कर पा रहा है। उसकी पत्नी उसकी हालत को लेकर बहुत चिंतित है। मंत्रों का जाप करने के अलावा उसे किसी और चीज़ में कोई दिलचस्पी नहीं है। इसीलिए मैं उसे यहाँ लाया हूँ। कृपया उसे कोई रास्ता दिखाएँ।

“ओह! वह किताब जो परमहंस योगानंद ने लिखी थी! मुझे उसमें एक झलक दिख रही थी।”
"महान आधी बंद आँखों से बैठे हैं। उनका नाम क्या है?" मुझसे सवाल करते हुए उन्होंने मेरी आँखों में तीक्ष्णता से देखा। मैं चौंक गया और अपने गुरु का नाम लेकर उनसे पूछा कि उन्हें ये सब कैसे पता चला। शेषन ने मेरी जांघ पर हल्के से थपथपाया और मुझे ऐसे महान व्यक्ति से ऐसे मूर्खतापूर्ण प्रश्न न पूछने के लिए कहा, जिन्हें हर बात का गहरा ज्ञान था। फिर वह अपने गुरु की ओर मुड़े और उपाय पूछा।

लेकिन स्वामीगल ने कहा, “गुरुवायूरप्पा, ऐसा क्यों? क्या आपको नहीं पता?” क्या आप जानते हैं कि कितने लोग अपने जीवनकाल में ऐसी उच्च अवस्था प्राप्त करने की इच्छा रखते हैं? अपने पिछले जन्मों में अपने गुरु के साथ संबंध के कारण, इस व्यक्ति को यह कृपा प्राप्त हुई है। उन्होंने अपने पिछले जन्म में अपने गुरु की बहुत सेवा की, उनके चरणों को हवा दी और मालिश की। उन्होंने योग-सिद्धि में उच्चतर उपलब्धि की प्रार्थना की थी। चूंकि उस समय उनकी परिपक्वता और समय परिपक्व नहीं था, इसलिए उनके गुरु ने उन्हें प्रतीक्षा करने के लिए कहा। शीघ्र ही उनका जीवनकाल उस पिछले जन्म में समाप्त हो गया, लेकिन उनके गुरु ने उन्हें यूं ही नहीं छोड़ा। अपना वचन पूरा करने के लिए, वे उनके अगले जन्म में वेदों के साथ आए और उन्हें योग के अभ्यास में दीक्षित किया।
फिर स्वामीजी ने मुझसे उस विशेष प्रकार के योगम का नाम बताने को कहा।

मैंने उनके प्रश्न के उत्तर में कहा, “क्रिया योगम।” फिर उन्होंने आगे कहा, “हम्म! हाँ। वही। वेधम सचमुच भाग्यशाली है!”

यह सुनकर शेषन ने कहा, “स्वामी जी! मुझे पहले से ही पता था। मैंने तो बस यूं ही कह दिया था।” मैंने घर पर उनकी कुंडली देखी। उन्हें कवि और योगी बनने का आशीर्वाद प्राप्त था। अभी-अभी आपने इसकी पुष्टि कर दी!

Swamigal interrupted Seshan’s talk.

वह अचानक मेरी ओर मुड़ा। “अरे! क्या बारह साल की उम्र में तुम्हारे घर पर कोई भरथियार की किताब तुम्हारे सिर पर गिर गई थी? उस समय तुम अपने गाँव के घर में किताबों की अलमारी में कुछ ढूंढ रही थी। मुझे उसका दृश्य दिखाई दे रहा है।”

मैं अवाक रह गया। “जी स्वामी जी! मेरे जनेऊ संस्कार के बाद, मैं मुझे अपने दादा गार्गर के साथ श्लोकों का पाठ करने की आदत थी। एक दिन उन्होंने मुझसे अलमारी खोलने और अपनी मनपसंद किताब निकालने को कहा। जब मैं किताबों को खंगाल रहा था, तो 'महाकवि भारती' की किताब मेरे सिर पर गिर पड़ी। उसके बाद से, मैं सुबह-शाम पूरी लगन से श्लोकों को पढ़ने और याद करने लगा।

“जी स्वामी जी! यह सच है! कभी-कभी वेधम उन गीतों को गाता है।

बेमेल स्वर।” शेषन अपने ही मजाक पर हँस पड़ा। उपासक स्वामी भी हँसे। “इसमें कुछ भी गलत नहीं है! देवी माँ बहुत दयालु हैं। उन्हें भी उसकी आवाज सुनना अच्छा लगता है। इसीलिए उसे भगवान मुरुगन और माता अबिरामी का आशीर्वाद प्राप्त है।”

उन मधुर शब्दों को सुनते ही मेरी आंखों से आंसू बहने लगे। नीचे झुककर, “क्या यह सच है, स्वामी जी? क्या मुझमें इतना वरदान है? मैं आपका बहुत आभारी हूँ, स्वामी जी!” मैंने अत्यंत प्रसन्नता और आस्था के साथ एक बार फिर उनके समक्ष प्रणाम किया। “आपके वचन मुझे आध्यात्मिकता और योग एवं प्राणायाम के अभ्यास में अपार विश्वास दिला रहे हैं, जिनका मैं प्रतिदिन अभ्यास करता हूँ।” मैंने दृढ़ विश्वास के साथ कहा।

कोई बात नहीं। खुद पर ज्यादा दबाव मत डालो। एक बार शुरू करने के बाद... एक चक्र से दूसरे चक्र तक आंतरिक यात्रा करते समय आपको सर्दी-जुकाम और ब्रोंकाइटिस जैसी कठिनाइयों का सामना करना पड़ सकता है। लेकिन अभ्यास करना न छोड़ें। यह आपको योग के सही मार्ग पर ले जाएगा। चिंता न करें। आने वाले महीने में आपकी मुलाकात कांची महापेरियवा से होगी। उनकी कृपा से आपकी सभी मौजूदा समस्याएं दूर हो जाएंगी।

यह कहकर उन्होंने मेरे सिर पर हाथ रखकर मुझे आशीर्वाद दिया। मेरे सिर का भारीपन और उमंग पल भर में गायब हो गए और मुझे ऐसा लगा जैसे मेरा शरीर गुलाब के फूल की तरह हल्का हो रहा हो। स्वामी और शेषन के बीच आध्यात्मिक विषयों पर और चर्चा होने के बाद, हमने उन्हें प्रणाम किया और विदा ली।

बाहर आते ही मैंने शेषन सर को मुझे यहाँ लाने के लिए धन्यवाद दिया। ऐसे महान व्यक्तित्व से मिलना मेरे लिए सौभाग्य की बात थी। अगले दिन, मैं काफी बेहतर महसूस कर रहा था और अपने कार्यालय के लिए निकल गया।

मेरी पत्नी मेरे अनुभव सुनकर बहुत खुश हुई। “क्या आप

मेरी प्यारी, क्या तुम हमें अगले हफ्ते उपासकर स्वामी से मिलवाओगी? मैं उनसे मिलने के लिए बहुत उत्सुक और उत्साहित हूँ। मैंने 'हाँ' में जवाब दिया और रविवार को अपने परिवार को उस संत से मिलवाने और उनका आशीर्वाद लेने के लिए ले गई।

उन्होंने मेरे बेटे स्वामीनाथन की ओर देखा। “हे भगवान! तुम ज़रूर सफल होगे।”

आपका भविष्य उज्ज्वल हो। आप विज्ञान के एक नए क्षेत्र में अच्छी कमाई करेंगे और आपके नेतृत्व में एक टीम काम करेगी। आपकी बड़ी बहनों की शादी अच्छे स्थान पर होगी और आप सभी का जीवन सुखमय होगा। किसी भी बात की चिंता न करें। आपके पिता पास में ही एक घर खरीदेंगे। हालांकि शुरुआत में कुछ कठिन समय आएगा, लेकिन समय के साथ सब कुछ ठीक हो जाएगा। आप सभी को मेरी शुभकामनाएं। उन्होंने हमसे विदा ली।

ठीक पंद्रहवें दिन, जैसा कि स्वामी जी ने पहले कहा था, सर्दी-जुकाम से जुड़ी समस्याएं शुरू हो गईं। मुझे बहुत खांसी थी और डॉक्टर को लगा कि यह ब्रोंकाइटिस है, इसलिए उन्होंने मुझे दवाइयां और एक इंजेक्शन दिया। मुझे फिर से काम से कुछ दिनों की छुट्टी लेनी पड़ी। ठीक होने में मुझे लगभग एक हफ्ता लग गया।

उपासक स्वामी के कहे अनुसार ही घटनाएँ घटने लगीं। बेसंतनगर के रत्नगिरिश्वरार मंदिर से श्रद्धालुओं के एक समूह ने ऋषि कांची महा-पेरियावा के दर्शन करने के लिए यात्रा पर जाने का निर्णय लिया।

उस समय कांची महापेरियवा थेनंबक्कम में डेरा डाले हुए थे। उपन्यासागर श्री मुक्कूर श्रीनिवासचार्य के नेतृत्व में, सभी लोगों के लिए तीन बसों की व्यवस्था की गई थी। मैंने समूह के लिए विशेष सेवा का विकल्प चुना और अपने परिवार के साथ निर्धारित दिन पर एक बस में सवार हो गया। [यह घटना सितंबर 1978 में घटी]

साढ़े तीन घंटे की यात्रा के बाद बसें वहाँ पहुँचीं। यह एक अस्थायी और सुविधाजनक आवास था जहाँ पूज्य संत का ठहरना था। वहाँ एक बड़ा हॉल था जिसके चारों ओर बांस की बाड़ लगी थी ताकि लोग महापेरियवा के बहुत करीब न जा सकें। कई स्वयंसेवक लोगों की जरूरतों का ख्याल रखने के लिए आसपास मौजूद थे।

केंद्र में, कुछ दूरी पर, महापेरियवा योग मुद्रा में बैठे हुए थे। वे ध्यानमग्न सिंह के समान दिख रहे थे। उस समय उन्होंने मौन व्रत धारण किया हुआ था (काष्ट मौनम)। उनकी आँखें सूर्य की तीव्र किरण की तरह चमक रही थीं, जो उनके सामने झुके हुए लोगों पर प्रतिबिंबित हो रही थीं। उनका दाहिना हाथ निरंतर गतिमान था और उनसे उनकी कृपा निरंतर बरस रही थी।

मुक्कूर श्रीनिवासचार्यर धीरे-धीरे आगे बढ़ते हुए रास्ता बनाने लगे। भीड़ में से वह संत की ओर बढ़ा। वह उनके पास गया और प्रणाम किया। उसने अपने हाथ छाती पर बांधे और कमर पर लिपटे कपड़े का सिरा अपने मुंह के पास ले जाकर कुछ शब्द कहे। हालांकि संत के चेहरे पर कोई भाव नहीं प्रकट हुआ, लेकिन उनकी आंखों से यह स्पष्ट हो गया कि उन्होंने कही गई बातों को आत्मसात कर लिया है। श्री मुक्कूर के निर्देशानुसार, मैं बांस के खंभों के पीछे खड़ा होकर महान संत (महा पेरियावा) को देख रहा था।

अब, श्री मुक्कूर ने सफेद कागज की शीट दी (जिस पर मैं

मैंने उन्हें अपनी कविता लिखी। उस कागज में कुछ पंक्तियाँ थीं जिनमें पिछले कुछ दिनों से मुझे हो रही स्वास्थ्य समस्याओं का वर्णन था। मैंने उनसे यह भी निवेदन किया था कि "मुझे इन योगिक अभ्यासों को जारी रखने या न रखने के बारे में मार्गदर्शन दें, भविष्य में ऐसी कठिनाइयों से उबरने के लिए उनका आशीर्वाद और कृपा प्राप्त करने का अनुरोध करें। उनकी सहायता के बिना मेरा जीवन व्यर्थ होगा।" - यह उस कविता का सार था।

संत ने धीरे-धीरे पंक्तियाँ पढ़ीं और श्री को कुछ संदेश दिया। मुक्कूर ने हाथ के इशारों से मुझे उस महान हस्ती के सामने सीधा खड़ा होने को कहा। मैंने वैसा ही किया और महापेरियवा ने इशारे से मुझे उनकी आँखों में देखने का निर्देश दिया। यही आखिरी बात थी जो मुझे याद है। उनकी आँखों से एक विशाल प्रकाश निकला जो किसी विशाल बाघ की आँखों जैसा था। वह प्रकाश मेरे शरीर में समा गया और चारों ओर फैल गया। दो मिनट के भीतर ही मेरा शरीर काँपने लगा और साँप की तरह कुंडली मारकर गिर पड़ा। मेरी चेतना मेरे मस्तिष्क से अलग हो गई।

मेरी पत्नी और बाकी लोग घबरा गए। उन्होंने मुझे हाथों से उठाया और ले गए।

मुझे उस जगह ले जाया गया जहाँ खाना और पानी परोसा जा रहा था। मुझे एक बेंच पर बैठाया गया और मेरे चेहरे पर ठंडा पानी छिड़का गया। उन्होंने मुझे कुछ खाने को दिया। लगभग एक घंटे बाद, मुझे होश आया और हम घर वापस जाने के लिए निकल पड़े। मैं अभी भी अर्धचेतना की अवस्था में था। पूरी रात मुझे हल्का बुखार था और मैं आधी नींद में बड़बड़ाता रहा। मेरे सिर और आँखों में जलन हो रही थी। मैं सुबह जल्दी ही ठीक से सो पाया।

सुबह नौ बजे मेरी पत्नी ने मुझे जगाया। उसने मुझे खाना खिलाया। और वे मुझे हमारी पारिवारिक डॉक्टर, श्रीमती मंगला के पास ले गईं। मेरी पत्नी ने मेरी स्थिति समझाने की कोशिश की, लेकिन मैंने उसे बीच में ही रोक दिया।

'डॉक्टर! मैं अपनी आँखें पूरी तरह से नहीं खोल पा रहा हूँ और मुझे बस तेज रोशनी ही दिखाई दे रही है।' हर जगह तेज़ रोशनी है जिससे मुझे डर लग रहा है। बिजली के तार ऐसे लग रहे हैं जैसे उनमें आग लगी हो। क्या मैं भ्रम में हूँ? डॉक्टर साहब, मुझे क्या हो गया है?" रुक-रुक कर रोते हुए मैंने अपनी हालत समझाने की कोशिश की।

मेरी सबसे बड़ी बेटी सुधा ने कहा कि कांचीपेरियवा ने मेरे पापा ने जब सिर्फ उनसे आशीर्वाद मांगा तो वह उनके पिता को मंत्रमुग्ध कर बैठीं।

"नहीं! नहीं! तुम्हें इस तरह बात नहीं करनी चाहिए, सुधा! पेरियावा की आँखें..." लंबे वर्षों की तपस्या के कारण वे अत्यंत शक्तिशाली हैं! क्या कोई उनकी आँखों में सीधे देख सकता है? वे आग के गोले के समान हैं। आपके पिता को पेरियावा का आशीर्वाद प्राप्त है, जो उनके लिए सौभाग्य की बात है। वे बहुत जल्द ठीक हो जाएँगे।

चार साल पहले, मेरे चाचा के बेटे को महापेरियवा से 'नयन दीक्षा' (आँखों के माध्यम से दीक्षा) प्राप्त करने का सौभाग्य मिला था। इसलिए, मैं जानता हूँ कि यह क्या होता है। कांचीपेरियवा की तपस्या से थोड़ी सी अग्नि ऊर्जा आपके अप्पा के शरीर में प्रवेश कर गई है। यह उनके अच्छे कर्मों का फल है। खैर, मैं उनके बुखार के लिए दवा लिख देता हूँ। इसे चार दिनों तक दीजिए। सब ठीक हो जाएगा।

डॉक्टर ने मेरी प्रशंसा की, साथ ही मुझे विश्वास और थोड़ी सी तसल्ली भी दी। मुझे थोड़ा सा सहारा मिला जिससे मुझे बेहतर महसूस हुआ। लेकिन, वे चार दिन मेरे लिए और मेरे आस-पास के लोगों के लिए भी नरक जैसे थे और बहुत कठिन थे। मेरी पत्नी ने मुझे पद्मासन में बैठने और ध्यान करने की सलाह दी ताकि मैं अपनी समस्याओं को कुछ समय के लिए भूल सकूँ। धीरे-धीरे मैंने अभ्यास शुरू किया और मेरा शरीर सामान्य होने लगा। आँखों में चुभन और जलन धीरे-धीरे कम हो गई।

एक दिन श्री रामासेशान मुझसे मिलने आए और हंसते हुए बोले, "देखो!

जैसा कि रामा अयंगर स्वामी ने भविष्यवाणी की थी, आपको महापेरियवा से आशीर्वाद और नयन दीक्षा प्राप्त हुई है। आप बहुत भाग्यशाली हैं। अब से सब कुछ बेहतर होगा।

मेरे मित्र जयराधन भी मुझसे मिलने आए और उन्होंने मेरी सराहना की।

प्रयासों और भाग्य से। मानो किसी प्रेरणा से, मैंने एक पीला कपड़ा लिया और उस पर कुमकुम पाउडर फैलाया, अपने गुरु का नाम जपा और उन्हें दे दिया। मैंने समाधि की अवस्था में उनसे कहा कि वे अब से अपने साहित्यिक क्षेत्र में खूब तरक्की करेंगे और अधिक प्रशंसा और पहचान प्राप्त करेंगे। उस समय मैं अत्यंत आनंदमय अवस्था में था।

किसी तरह मेरी पत्नी ने गुरु लाहिरी की एक बड़ी सी तस्वीर फ्रेम करने में कामयाबी हासिल कर ली।

मैंने महाशय की तस्वीर खरीदी और उसे पूजा कक्ष में रख दिया। जयराधन ने अपने एक मित्र से 'योगी की आत्मकथा' की एक नई प्रति खरीदी थी। उसने वह मुझे दे दी और अपनी खुद की ले ली। कई दिनों की अनुपस्थिति के बाद, मैं अपने कार्यालय लौटा। मेरे जीवन के इस महत्वपूर्ण मोड़ के बारे में जानने वाले लोगों ने मुझे शुभकामनाएं दीं।

मेरे करीबी दोस्त वासुदेवन ने रोते हुए मुझे गले लगाया अत्यधिक उत्साह से। "देखो! तुम्हें महापेरियवा के माध्यम से एक महान वरदान प्राप्त हुआ है। तुम्हें नियमित रूप से साधना का अभ्यास शुरू कर देना चाहिए। तभी तुम्हारे चक्र एक-एक करके तुम्हारे पहले मूलाधार चक्र से शुद्ध होंगे और ऊर्जा तुम्हारी भौहों के केंद्र में स्थित आज्ञा चक्र की ओर ऊपर की ओर प्रवाहित होने लगेगी।"

उन्होंने मुझसे यह भी अनुरोध किया कि मैं अपने गुप्त दिव्य अनुभवों का खुलासा न करूं। ये बातें सबके साथ साझा करने के लिए नहीं थीं, इसलिए मैंने इन्हें सिर्फ उन्हीं के साथ साझा किया। उन्होंने कहा, 'कृपया इन सभी घटनाओं को अपने मन में गुप्त रखें।' मैंने उनकी बातों को गंभीरता से लिया, यह मानते हुए कि ये मेरे गुरु ने उनके माध्यम से कही हैं।

फिर मैंने बिना किसी भय के प्रतिदिन अपनी साधना का अभ्यास करना शुरू कर दिया। एक महीने बाद, मैंने अपने संपूर्ण अस्तित्व में सुधार महसूस किया। मुझे कमल के समान चक्रों की सुगंधित बहार का अनुभव हुआ। दिव्य प्राणियों के साथ-साथ नए सूक्ष्म प्रकाश प्रकट हुए। मैं विभिन्न दिव्य रूपों द्वारा प्रदत्त कृपा को स्पष्ट रूप से देख सका। उन रूपों में लीन होकर और गहराई से उतरकर मुझे अक्सर भगवान मुरुगन (कार्तिकेयन), देवी सरस्वती और अबिरामी के दर्शन हुए। प्राणायाम और प्रकाश ध्यान में मेरी आस्था कई गुना बढ़ गई। निरंतर अभ्यास से अंततः मुझे अपने गुरु बाबा जी के दर्शन हुए।

"मेरे प्यारे बेटे, क्या अब तुम संतुष्ट हो? तुमने "महापेरियवा और मेरी कृपा से दीक्षा प्राप्त कर ली है! बहुत जल्द मैं तुम्हें श्री महावतार बाबा जी की गुफा में ले जाऊंगा।" मेरे गुरु श्री लहरी बाबा ने मुझसे वादा किया।

जी हाँ! पूर्णिमा का दिन आ गया और रात के लगभग बारह बज रहे थे।

इससे दो घंटे पहले, मेरे गुरु ने मुझे मेरे प्रार्थना कक्ष में समाधि की अवस्था में बैठाया। मैं अपने शरीर से बेखबर हो गया। मैं प्रकाश को निचले चक्रों से ऊपरी चक्रों की ओर जाते हुए देख सकता था।

जब यह आज्ञा चक्र [माथे के केंद्र] तक पहुंचा, तो दो प्रकाशमान हाथी अपनी सूंडों में जल के घड़े लिए दोनों ओर प्रकट हुए। उन्होंने घड़ों से अमृत उंडेला। मुझे अपने भीतर दिव्य अमृत का प्रवाह महसूस हुआ। लेकिन मेरे गुरु ने मुझे आंखें न खोलने का निर्देश दिया।

उन्होंने कहा कि कुछ ही मिनटों में हम यात्रा पर निकल जाएंगे। हिमालय की उस गुफा में जहाँ उनके गुरु श्री महावतार बाबाजी तपस्या करते थे। अहंकार के अभाव में, तथाकथित वेदम (मैं) अत्यंत प्रसन्न हुआ। आँखों में आँसू लिए, अपने शरीर की चेतना से अनभिज्ञ होकर, मैंने स्वयं को अपने गुरु के साथ सूक्ष्म (आध्यात्मिक) शरीर में आकाश में तैरते हुए महसूस किया।

अंत में, जब मुझे लगा कि दस मिनट बीत चुके हैं, मेरे गुरु उन्होंने मेरे हाथ पकड़े। उन्होंने प्रणाम किया और मुझे भी ऐसा ही करने को कहा। "पिछले जन्म में आपने हमारे महान गुरु महावतार बाबा जी के दर्शन की कामना की थी। अब उन्हें देखिए!"

मैं अपनी आंखें खोल नहीं पा रहा था और वहां कुछ भी नहीं था। मुझे अपने गुरु से ऐसा करने की अनुमति मिली थी। साथ ही, आंखें बंद करके भी दोनों महान संतों के दर्शन संभव थे। अपनी अंतर्दृष्टि से मैंने उस स्थिति को आत्मसात किया जहां मेरे दो महान गुरु, एक कोमल और शक्तिशाली प्रकाश से घिरे हुए, उस छोटी सी बर्फ से ढकी गुफा में पद्मासन मुद्रा में बैठे थे।

मैं उनके सामने उसी मुद्रा में बैठ गया और उन्हें घूरने लगा। भक्ति भाव। महावतार बाबाजी ने मेरी ओर देखा और आशीर्वाद देने के भाव से अपने हाथ उठाए। उन्होंने कुछ कहा।

"वेधम! तुम ठीक हो जाओगे! तुम्हारे गुरु की कृपा और मेरा आशीर्वाद तुम्हारे साथ है।"

यह आपको एक बेहतर मार्ग की ओर ले जाएगा। अब आपको डरने की कोई ज़रूरत नहीं है। आज की तरह ही प्रतिदिन क्रिया-योग का अभ्यास करें। आपके गुरु आपका पूर्ण मार्गदर्शन करेंगे। सच्चे अभ्यास से आप धीरे-धीरे उच्च स्तर पर पहुँचेंगे जहाँ आपको 'शुद्ध शरीर' प्राप्त होगा और अंततः आप हम तक पहुँचेंगे। जब भी अत्यंत आवश्यकता होगी, जब आपको मेरी तत्काल आवश्यकता होगी, मैं कुछ क्षणों के लिए आपके दर्शन में प्रकट होऊंगा और आपके संदेह दूर करूंगा। उस समय आपका शरीर बुरी तरह कांपेगा और आप थोड़े समय के लिए मदहोश महसूस करेंगे। आपको अपने शरीर और नसों का ध्यान रखना होगा। उन्हें कभी भी लंबे समय तक उच्च ऊर्जा अवस्था में न रखें। अब आप जा सकते हैं। इस क्रिया को केवल सच्चे साधकों को ही सिखाएं। कोई प्रचार-प्रसार न करें। सामान्य व्यवहार करें। हम उन लोगों को भेजेंगे जो आपसे यह योग सीखने के लिए तैयार हैं। आप उनका मार्गदर्शन कर सकते हैं।
उस आनंदमय अवस्था में मुझे और कुछ पूछने का मन नहीं हुआ और मैंने बस सिर हिला दिया।
मैंने अपना सिर झुकाया। फिर, मैंने दोनों 'महान गुरुओं' के चरणों को स्पर्श करने के लिए प्रणाम किया। अब, मेरे गुरु लहरी बाबा जी ने मुझे उठाने के लिए मेरे शरीर को स्पर्श किया। एक मिनट के भीतर, मैं वापस घर आ गया। खुशी के आँसू बहते हुए, मैंने उस शांत रात में थोड़ी ऊँची आवाज़ में प्रणाम किया। तब मुझे एहसास हुआ कि लगभग 2 बजे हैं। आनंदमय ऊर्जा से घिरे हुए, मैं सो गया। शांति की एक गहरी लहर मेरे अवचेतन मन में गहराई तक उतर गई।

(Saint Sri kanchi Mahaperiyavaa and Saint Mahavathar Babaji)-

अध्याय-28
परिशिष्टों

इस अध्याय के साथ, मैं इसे समाप्त कर रहा हूँ। मेरे गुरु श्री लहरी महाशय द्वारा मुझे प्रदान किए गए आध्यात्मिक अनुभव। मेरे प्रिय पाठकों ने पिछले छह वर्षों से इस महान योगिक मार्ग पर चलने से संबंधित कई प्रश्न पूछे हैं। मैं विनम्रतापूर्वक अपनी जानकारी के अनुसार उनके उत्तर दे रहा हूँ!

1. क्रिया योग के अभ्यास से आपको क्या लाभ प्राप्त हुआ है?

2. हालांकि आप लंबे समय से इस रास्ते पर हैं, क्या आप उम्र संबंधी स्वास्थ्य समस्याओं से पीड़ित नहीं हैं या आप उनसे अप्रभावित हैं?

उत्तर- उम्र बढ़ने के साथ-साथ शारीरिक समस्याएं होने लगती हैं। समस्याएँ। इसमें कोई संदेह नहीं है। यह पूरी तरह से हमारे कर्मों से संबंधित है। हमारे पिछले जन्मों के कर्म और वर्तमान जन्म में मन और शरीर द्वारा किए गए कुकर्म ही शेष भोगों की मात्रा निर्धारित करते हैं। हमें कर्मों का संतुलन सहना ही होगा, चाहे हम कोई भी हों।

यह नियम भगवान श्री रमण पर भी लागू होता है। महर्षि, परमहंसर और अन्य महान आत्माओं। क्रिया योग का अभ्यास करने वाला कोई भी व्यक्ति अपने 'स्व' की इस सांसारिक चेतना से परे उठ सकता है। उसे अपने शरीर में होने वाले दर्द की परवाह नहीं होती क्योंकि उसका मस्तिष्क, मन और शरीर के सभी अंग ईश्वर की शुद्ध चेतना में लीन होते हैं। एक सच्चा क्रिया योगी सदा ईश्वर के साथ एकाग्र रहता है, इसलिए वह अपने शरीर द्वारा उत्पन्न दर्द और अक्षमता को अनदेखा कर देता है। अपने गुरु से संवाद करना उसके लिए सहज हो जाता है। वह सदा आनंदमय अवस्था में रहता है।

अब से मैं अपने आप को 'वह' कहकर संबोधित करूंगा, मेरे प्रिय। पाठकों! मैं जल्द ही कुछ ऐसी घटनाओं का उल्लेख करूंगा जिनमें उनके गुरु ने उन पर अपना आशीर्वाद और मार्गदर्शन बरसाया। यह पुस्तक अधूरी रह जाएगी यदि मैं उन कुछ घटनाओं या दिव्य अनुभवों का उल्लेख न करूं जो वेदम को प्राप्त हुए!

1. पूर्णिमा की रात को हुए उस सुखद अनुभव के दो दिन बाद, उसका वेधम की पत्नी की बहन गोमती और उनके पति विश्वनाथन उनसे मिलने उनके बेसंतनगर स्थित आरबीआई क्वार्टर्स स्थित घर आए। उन्होंने वेधम की खराब सेहत के बारे में सुना था, इसलिए उनसे मिलने आए थे। घर में प्रवेश करते ही गोमती ने गलती से अपना कान छुआ और घबरा गईं। वे चिल्लाईं, "मेरी सोने की बाली कहीं गिर गई है!" दोनों दौड़कर नीचे गए और रेत के गड्ढे और उस रास्ते के आसपास खोजने लगे, जिस पर वे थोड़ी देर पहले चले थे। खोज व्यर्थ रही। इसी बीच, वेधम ने उत्साह से अपनी पत्नी को पुकारा और कहा, "बाबा उन्हें डी-ब्लॉक के पास खोजने के लिए कह रहे हैं। बाली रेत में चमक रही है। यह बात अपनी बहन को बता दो।"

मेरी पत्नी नीचे गई और उसने संदेश पहुंचाया। बाली ठीक उसी जगह पर चमक उठी। सभी लोग 'महान गुरु' से मार्गदर्शन पाकर बहुत प्रसन्न हुए।

2. इस घटना के दो साल बाद, उनमें से एक की शादी तय हो गई।

वेधम की बहनों के बारे में। उनके पिता रामजी ने वीरवनल्लूर (तिरुनेलवेली जिला) से एक पत्र लिखा, "बाबू! हमने आपकी बहन के लिए रिश्ता तय कर लिया है। शादी जनवरी में है। दूल्हा अभी उत्तर भारत में रेलवे में काम करता है, लेकिन उसका परिवार अयिकुड़ी का है। मेरे पास पैसे नहीं हैं। कृपया अपने कार्यालय से ऋण लेकर पैसे का इंतजाम कर दीजिए। खर्च के लिए 15000 रुपये भेज दीजिए।"

रामजी गरगर अपने गुस्सैल स्वभाव के लिए जाने जाते थे। वेदम में ऐसा स्वभाव नहीं था।

उनके पास कोई विकल्प नहीं था। उन्होंने पिछले वर्ष किसी आपात स्थिति के लिए अपने भविष्य निधि से 6000 रुपये निकाल लिए थे। इसलिए, उन्हें पता था कि कार्यालय उन्हें और ऋण नहीं देगा। उन्होंने अपने गुरु बाबा जी के समक्ष आत्मसमर्पण कर दिया। वे ठीक से भोजन नहीं कर पा रहे थे। वे दो दिनों तक छह-छह घंटे समाधि में बैठे रहे और ईश्वर से किसी प्रकार की सहायता के लिए प्रार्थना करते रहे। अंततः, दूसरे दिन के अंत में, उनके गुरु प्रकट हुए और उन्होंने उनसे बात की।

"वेधम! चिंता मत करो! गुरु महावतार बाबाजी और मैंने सोचा था हम कई तरह से आपकी मदद करने के लिए तैयार हैं। हमने फैसला किया है कि हम पैसे सीधे आपके पिता को देंगे। उन्हें इस बारे में लिख देना।" - वेधम ने ये सब एक कार्ड पर लिखा। लेकिन, उनके पिता समझ नहीं पाए और गुस्से से जवाब दिया।

हे! तुम अपने बारे में क्या सोचते हो? क्या तुम्हें लगता है कि तुम एक महान व्यक्ति हो? योगी? आपने लिखा है कि गुरु बाबा जी स्वयं मुझे पैसे सौंपेंगे... वो कौन हैं? क्या आप पागल हो गए हैं?

हालांकि वेधम अपने पिता के पत्र को पढ़कर बहुत दुखी हुआ, लेकिन उसमें लिखी बातों से वह बहुत दुखी था।

अविश्वास के साथ, मन ही मन वह जानता था कि बाबा जी किसी न किसी तरह उसकी मदद करेंगे। उसके परिवार ने भी बाली वाली घटना को याद दिलाकर उसके विचारों का समर्थन किया और उन्हें और मजबूत बनाया।

अंततः बारह दिनों के बाद, वेधम को अपने पिता का पत्र मिला। इसे पढ़कर आश्चर्य हुआ। उन्होंने अपने पुत्र की प्रशंसा की थी और कहा था कि बाबा जी को गुरु के रूप में पाकर वह बहुत भाग्यशाली है। पत्र मिलने के तीन दिन के भीतर ही विरुधुनगर से तीन व्यापारी उसके पिता के घर आए। उन्होंने बताया कि एक व्यापारी के सपने में एक हिमालयी संत आए और उन्होंने रामजी का नाम और स्थान बताया। संत ने व्यापारी से कहा कि वह अपने अथाझनल्लूर गांव स्थित जर्जर घर में बर्मा सागौन की लकड़ी से बने खंभे और छत के सहारे खरीद ले। गरगर स्थिति को तुरंत समझ गए और उन्होंने व्यापारी से कहा कि वे अपने खर्च पर पुराने घर से लकड़ी निकलवा लें। उन्होंने 20,000 रुपये की सौदेबाजी भी की। अंत में, कीमती लकड़ी की बिक्री 15,000 रुपये में तय हुई। काम पूरा होते ही और तुरंत पैसे मिल जाने पर गरगर बहुत खुश हुए। उन्होंने अपने बेटे और परिवार को शादी से एक सप्ताह पहले वीरवनल्लूर आने का निमंत्रण भी दिया। वेधम और उनका परिवार बहुत प्रसन्न हुए और उन्होंने अपने गुरु बाबाजी के चित्र के सामने प्रणाम किया और उनकी कृपा की प्रशंसा की। गुरु के आशीर्वाद से वीरवनल्लूर में विवाह समारोह बहुत धूमधाम से संपन्न हुआ।

3. यह तीसरी घटना है जिसमें बाबा जी का आशीर्वाद परिवार पर बरसा।

यह तब की बात है जब वे 1989 में नीलंकराई में अपने घर में रहने चले गए। वेदम के बेटे, स्वामीनाथन पत्राचार पाठ्यक्रम के माध्यम से एमसीए की पढ़ाई करना चाहते थे। नियमित व्यावहारिक कक्षाएं होती थीं, जिसके लिए उन्हें घर पर अभ्यास करने के लिए एक कंप्यूटर की आवश्यकता थी। स्वामीनाथन कंप्यूटर लेने के लिए काफी दृढ़ थे। वेदम ने पूछताछ की और लागत का अनुमान लगाया।

लगभग 30,000 रुपये की ज़रूरत थी और वे सोच रहे थे कि इतनी रकम का इंतज़ाम कैसे करेंगे। फिर उन्होंने मदद के लिए अपने गुरु से प्रार्थना की। तीन दिनों तक लगन से ध्यान करने के बाद, अंततः गुरु बाबा जी प्रकट हुए।

उन्होंने राय व्यक्त की कि... 'पैसा कार्यालय के माध्यम से आएगा और चिंता करने की कोई ज़रूरत नहीं है।' वेधम को इसकी कोई वजह समझ नहीं आई। लेकिन, 30000 रुपये के चेक वाला एक पत्र आया, जिसने परिवार के सभी सदस्यों को चौंका दिया। कारण यह था कि तीन महीने पहले कर्मचारियों ने वेतन वृद्धि की मांग को लेकर हड़ताल की थी। आरबीआई और केंद्रीय कार्यालय ने मांगों को मान लिया था और यह सब एक सप्ताह पहले हुआ था। चूंकि वेधम ने बीमारी की छुट्टी ली थी, इसलिए चेक सीधे उनके घर के पते पर आया। स्वामीनाथन बहुत खुश हुए। वे दोनों मायलापुर गए और एक नया

कंप्यूटर और उसके लिए एक डेस्क खरीदा। स्वामीनाथन और उनके बेटे ने अंतिम परीक्षा में उत्कृष्ट प्रदर्शन किया और टीवीएस कंपनी में नौकरी पा ली।

श्री वेधम के जीवन में कई ऐसी घटनाएं घटीं जिनमें उन्होंने
उन्हें उनके गुरु लहरी बाबाजी का मार्गदर्शन प्राप्त था। उन्होंने गुरु महान से दिव्य मार्गदर्शन प्राप्त करके अपने कई योग शिष्यों की सहायता की थी। इस पुस्तक में पृष्ठों की सीमित संख्या के कारण हम इस अध्याय को यहीं समाप्त कर रहे हैं। ऐसी कई घटनाओं का वर्णन लेखक की एक अन्य पुस्तक "योगमम बोगमम" में किया गया है।
हाँ! निःसंदेह उनके जीवन में सब कुछ वास्तव में एक आशीर्वाद ही था।
गुरु बाबाजी से प्राप्त हुआ।

अध्याय-29

महावतार बाबाजी की गुफा की फलदायी यात्रा

क्रिया योग के अभ्यासी के रूप में, मेरे पास हमेशा से यह भावना रही है कि श्री गुरु महावतार बाबा जी की गुफा के दर्शन करने की मेरी बहुत इच्छा है। यह गुफा कुकुचीना या धुनागिरी पर्वत पर स्थित है। लेकिन वृद्धावस्था और उससे होने वाले असहनीय दर्द के कारण मैं इस शरीर में रहते हुए वहां जाने में असमर्थ हूं। दरअसल, बाबा जी की अनुमति के बिना कोई भी उनकी 'पवित्र गुफा' में नहीं जा सकता। मेरे कई मित्रों ने मुझे बताया था कि गुफा के दर्शन के लिए तपस्या के साथ-साथ मन, इंद्रियों और भोजन पर नियंत्रण रखना आवश्यक है। बेशक, अपार प्रेम और आस्था के साथ पूर्ण समर्पण भी आवश्यक है। केवल ऐसे गुणों वाले लोग ही इस यात्रा को सफलतापूर्वक पूरा कर सकते हैं, क्योंकि पवित्र गुफा में प्रवेश करने के मार्ग में कई कठिनाइयां आती हैं।

यह वाकई आश्चर्यजनक था। हालाँकि मुझे कुछ नहीं मिला। मुझे यह अवसर मिला कि मैं श्री बाबा जी के एक भक्त से उनके अनुभव सुन सकूँ। मैं यह पुष्टि कर सकता हूँ कि यह केवल उनकी कृपा से ही संभव हो पाया कि मैं उनकी यात्रा के अनुभवों के बारे में जान सका।

जी हाँ! जुलाई 2016 के महीने में, एक सोमवार की सुबह, मैं मैंने पूरी एकाग्रता से गायत्री मंत्र का जाप शुरू किया। मैंने मंत्र का 1008 बार जाप करने का निश्चय किया। सुबह की ताजी हवा में जलती हुई अगरबत्तियों की सुगंध घुली हुई थी। बीच-बीच में कोयल की आवाज शांत और मौन वातावरण में घुलमिल रही थी, जिससे मेरी साधना को और भी सुकून मिल रहा था।

प्रेमपूर्वक बाबा जी का प्रारंभिक आह्वान करने के साथ ही मंत्रोच्चारण शुरू हो जाता है। पांच सौ जप पूरे हो गए। अचानक, मेरी गर्दन में एक शीतलता और स्फूर्ति का अहसास हुआ और धीरे-धीरे सहस्रार चक्र की ओर बढ़ते हुए समान रूप से फैल गया। यह इतना सुकून देने वाला और आरामदायक था कि मैं जप की गिनती भूल गया। मेरा शरीर लकड़ी के लट्ठे की तरह अकड़ गया। मुझे ऐसा महसूस हुआ जैसे बाबा जी का शुद्ध प्रकाश ऊपर से मुझमें हल्का सा प्रवेश कर रहा हो। यह सचमुच एक अनूठा अनुभव था।

अपनी शारीरिक सीमाओं के कारण, मुझे हमेशा इस बात का दुख रहता था कि मैं कभी भी

मुझे बाबा जी की गुफा में जाने का अवसर मिला। मेरी इस तीव्र इच्छा को पूरा करने के लिए, मुझे लगता है कि उन्होंने मुझे एक दिव्य अनुभव दिया, जब वे मेरे सिर के ऊपर एक उज्ज्वल प्रकाश के रूप में प्रकट हुए। दिव्य गुरु द्वारा मुझ पर बरसाए गए इस मातृत्व स्नेह के विचार से मेरी आँखों से खुशी के आँसू बहने लगे। एक महान तमिल संत 'मणिक्कवासगर' ने अपने एक गीत में कहा है - 'आँसुओं में ईश्वर को आकर्षित करने की शक्ति होती है।' प्रेम और स्नेह से सराबोर गुरु की दिव्य मुस्कान में मैं क्षण भर के लिए अपने अस्तित्व को भूल गया। मैंने उनके समक्ष प्रणाम किया और कई बार उनके पवित्र नाम का गुणगान किया।

बीस मिनट बाद, उन्होंने मुझे वापस विषय पर ध्यान दिलाया। इस संसार के प्रति मेरी चेतना जागृत हुई। जब मैं अपने प्रार्थना कक्ष से बाहर आया, तो मुझे अंतर्मन से यह आभास हुआ कि उस दिन कुछ होने वाला है और मैं उसका साक्षी बनकर खुद को भाग्यशाली महसूस करूंगा। जी हाँ! आधे घंटे बाद मेरा फोन बज उठा।
कॉल 'श्री बाबाजी आंमीगम' प्रकाशक का था।

“सर! मुझे बाबा जी की यात्रा पर एक लेख चाहिए। गुफा। यह दिवाली विशेष अंक के लिए है। मुझे यह एक हफ्ते में चाहिए।” यह अनुरोध नहीं, बल्कि एक तरह का विनम्र आदेश लग रहा था। मुझे एक सुखद रोमांच का अनुभव हुआ। ओह! अब मुझे समझ आया कि कुछ मिनट पहले मेरे गुरु ने मुझे इतना अद्‌भुत अनुभव क्यों कराया था।

मैंने तुरंत उसकी बात मान ली, लेकिन मन में एक हल्का सा डर भी जाग उठा। मेरे मन में यह सवाल उठ रहा था कि मैं जानकारी कहाँ से और कैसे जुटाऊँगा। लेकिन, मेरे भ्रमित मन को इस बात का अंदाजा नहीं था कि हमारे दयालु बाबा जी ने इस 'हिमालयी' कार्य को अंजाम देने की योजना बना रखी होगी।

अगले दिन, सुबह करीब दस बजे, मैं बाहर आया ध्यान के बाद मैं अपने कमरे में था। तभी दरवाज़े की घंटी बजी। 'क्रियाबन' मणि थे, जिन्होंने छह साल पहले मुझसे योग और ध्यान सीखा था। उनकी उम्र अब चालीस के आसपास होगी। वे मराइमलाई नगर से आए थे। मैंने मुस्कुराते हुए उनका स्वागत किया और उन्हें बैठने और आराम से बैठने के लिए कहा।

सामान्य पूछताछ के बाद, मैंने उनसे उनके आने का कारण पूछा। उन्होंने उत्साह से भरी आवाज में कहा, “गुरुजी महोदय! पिछले महीने मुझे अपने एक मित्र के साथ बाबा जी की गुफा में जाने का अवसर मिला, जो स्वयं भी क्रियाबान का अभ्यासी है। मैं अपने दिव्य अनुभवों को आपके साथ साझा करना चाहता था। यह एक अत्यंत सुखद अनुभव था।”

इस जानकारी ने मुझे चौंका दिया। ओह! हमारे गुरु बाबा जी के तरीके! ईश्वर का आशीर्वाद वास्तव में अद्वितीय है। वह अपने शिष्यों और भक्तों को कभी निराश नहीं करते। मैंने उन्हें एक दिन पहले हुए अपने अनुभव के बारे में बताया।

अब मैं क्रियाबन मणि की यात्रा का विवरण साझा करने जा रहा हूँ।

आप सभी के साथ। मैंने अपनी नोटबुक निकाली। आप चाहें तो इसे लिख भी सकते हैं। मणि ने पवित्र गुफा तक पहुंचने के अपने मार्ग का संक्षिप्त विवरण दिया। उन्होंने रास्ते में पड़ने वाले महत्वपूर्ण स्थानों और तीर्थस्थलों के दर्शन भी किए थे। उन्होंने रास्ते में नदियों में स्नान किया था। उनके साथ आए एक मित्र उनके 'मार्गदर्शक' थे। जाहिर है, जब भी उनका मित्र बाबा जी की गुफा की यात्रा पर जाने का फैसला करता है, तो वह अपने साथ उन लोगों को ले जाने की कोशिश करता है जो इस पवित्र स्थान के दर्शन करना चाहते हैं।
“और, अगर हम रास्ते में सभी देवी-देवताओं का आशीर्वाद लेते रहें, तो बाबा जी
“इससे हमें उनसे मिलने का मौका मिलेगा। है ना!” उन्होंने हंसते हुए कहा। “क्योंकि मुझे एक अच्छा गाइड मिल गया था, इसलिए मैंने यात्रा की।”

“मणि! इस यात्रा में तुम्हारा लगभग 30000 रुपये खर्च हो जाता। क्या “है ना?” मैंने उनसे पूछा। “जी गुरुजी! अगर आप एटीएम कार्ड और कुछ पैसे साथ रखें, तो नकदी खत्म होने पर भी काम चल जाएगा।” यह कहते हुए उन्होंने कागज पर एक रेखा खींच दी।

Chennai---Delhi---Haridwar---Rishikesh---Rudraprayag---Dunagiri [or] Dhronagiri Mountain---Here, in ‘Kukuchina’, ‘Babaji’s Cave’--- Back to Delhi.

उन्होंने यात्रा का यथासंभव संक्षिप्त विवरण तैयार किया और पूरी यात्रा का वर्णन किया। यह यात्रा एक कहानी की तरह, खूबसूरत ढंग से प्रस्तुत की गई है।

“गुरुजी, हमने अपनी यात्रा गर्मियों में शुरू की थी। हमने यहाँ से उड़ान भरी थी। चेन्नई से दिल्ली। [यदि संभव हो, तो शारीरिक थकान और तनाव से बचने के लिए ट्रेन यात्रा से बचना हमेशा बेहतर होता है]। दिल्ली पहुँचने पर हम एक होटल गए, खाना खाया और आराम किया। हालाँकि भारत की राजधानी पर कई मुगल शासकों का शासन रहा, लेकिन इसका संबंध हमेशा रामायण और महाभारत से रहा है। यह एक पुण्यभूमि है। हम पर्यटक होने के नाते इस स्थान के आध्यात्मिक महत्व को समझते थे, इसलिए हमने एक छोटे मंदिर में जाकर बाबा जी से प्रार्थना की कि वे हमारी यात्रा को अच्छे से संपन्न करने में हमारी सहायता करें।
दिल्ली को कभी ‘इंद्रप्रस्थम’ कहा जाता था। लेकिन, किसी कारणवश नाम बदल गया।
यह हमारे लिए नई जानकारी थी। फिर, हमारी योजना के अनुसार, एसी वाली एक आरामदायक बड़ी कार आ गई। हमारे गाइड ने कहा, "अब हम राष्ट्रीय राजमार्ग (एनएच) से होते हुए 205 किलोमीटर की दूरी तय करके हरिद्वार जाएंगे।"
कार ठीक तीन घंटे बीस मिनट बाद हरिद्वार पहुंची।
कुछ ही मिनटों में हम अंदर पहुँच गए। गाइड ने हमें बताया कि इस नाम का अर्थ है 'विष्णु से मिलने का मार्ग'। प्रवेश द्वार पर भगवान शिव की एक विशाल प्रतिमा खड़ी थी। इसे दक्षिण भारत के एक स्थापति ने बनाया था। हमने विशाल शिव प्रतिमा के सामने प्रणाम किया। हरिद्वार उन कुछ स्थानों में से एक है जहाँ कुंभ मेला लगता है। हम चारों ओर घूमे तो देखा कि कई साधु 'हर ओम नमः शिवाय' का जाप करते हुए हमें

आशीर्वाद दे रहे थे। यह एक रोमांचकारी अनुभव था जिससे मुझे ऐसा लगा मानो बाबा जी उनके माध्यम से हमें आशीर्वाद दे रहे हों।

ब्रह्मकुंड में, जो एक घाट या स्नान स्थल है गंगा के किनारे, हमने कई महिलाओं और साधुओं द्वारा माँ गंगा के लिए की जाने वाली 'गंगा आरती' देखी। हमारे आने का समय बिल्कुल उपयुक्त था। हमने इस मनमोहक दृश्य का भरपूर आनंद लिया। शाम के सूरज की सुनहरी किरणें चारों ओर जल रहे दीयों की रोशनी को छूकर बिखेर रही थीं।

फिर हम चंडी देवी मंदिर की ओर बढ़े। चंडी एक महाकाली की एक विशाल प्रतिमा। आगे की यात्रा सुगम बनाने के लिए उनके आशीर्वाद की आवश्यकता है। अगले दिन, हम सुबह-सुबह ऋषिकेश के लिए रवाना हुए। राष्ट्रीय राजमार्ग पर 16.2 किलोमीटर की यात्रा करने के बाद हम तीस मिनट में अपने गंतव्य पर पहुँच गए। (ऋषिकेश बस से भी पहुँचा जा सकता है।)

ऋषिकेश संतों और साधुओं से भरा स्थान है। जहां तक हमारी नज़र जाती थी, हम उन्हें देख सकते थे। ऐसा लगा जैसे हम किसी प्राचीन शहर में प्रवेश कर चुके हों। हमारे गाइड ने बताया कि ऋषिकेश योग की विश्व राजधानी है। “चूंकि हम इतनी दूर आ चुके हैं, इसलिए ऋषि वशिष्ठ की गुफा में जाना उचित होगा, हालांकि रास्ता बहुत कठिन है।” एक घंटे की यात्रा के बाद हम गुफा तक पहुँच गए। गुफा के रास्ते में गंगा नदी के किनारे कई मनोरम दृश्य बिखरे हुए थे। महान ऋषि ने यहां दीर्घ तपस्या की थी और शांत वातावरण ध्यान के लिए उपयुक्त था। हम सभी कुछ देर बैठकर अपना ध्यान केंद्रित करने का प्रयास करने लगे।

वहां से हम नदी के किनारे-किनारे रास्ते से होते हुए पहुंचे। देवप्रयाग। यहाँ अलकनंदा और भागीरथी नदियाँ गंगा में मिलकर एक दिव्य संगम बनाती हैं, जिससे गंगा और भी पवित्र हो जाती है। हमने वहाँ भगवान राम के एक प्राचीन मंदिर के दर्शन किए। मन में श्रद्धा भाव लिए हमने भगवान के दर्शन किए और भोजन किया।

कुछ ही मिनटों के भीतर, हमारे एक मित्र ने गंभीर शिकायत दर्ज कराई। पेट में दर्द हो रहा था। गाइड ने उन्हें शांत होने के लिए कहा और बताया कि वह आयुर्वेदिक चिकित्सक भी हैं। उन्होंने कुछ जड़ी-बूटी निकाली और 'ॐ क्रिया बाबा जी नमः' का जाप करते हुए उसे उनके मुंह में डाल दिया। आश्चर्य की बात है! दर्द से परेशान व्यक्ति दीवार के सहारे थोड़ी देर आराम से बैठ गया। बीस मिनट के भीतर ही वह सामान्य महसूस करने लगा और गाइड की प्रभावी दवा की प्रशंसा की।

कुछ मिनटों के विश्राम के बाद, हमने अपनी यात्रा फिर से शुरू की। रुद्रप्रयाग 143 किलोमीटर दूर था। वहाँ पहुँचने में हमें तीन घंटे लगे। यह वह स्थान था जहाँ पांडवों ने अपने पापों के प्रायश्चित के लिए रुद्र (शिव का उग्र रूप) का आह्वान किया था। यद्यपि प्रारंभ में रुद्र उनसे क्रोधित थे, परन्तु पांडवों की गहन भक्ति देखकर वे प्रसन्न हुए और उन्होंने अपना आशीर्वाद प्रदान करते हुए घोषणा की कि इस स्थान को अब से रुद्रप्रयाग कहा जाएगा।

यहां गंगा माता बहुत उग्र रूप से बहती हैं। हमने इसकी सुंदरता का आनंद लिया। दूर से आती हुई उग्र नदी की आवाज।

गाइड हमें हमारी गाड़ी तक ले गया ताकि हम अपनी यात्रा शुरू कर सकें। कर्णप्रयाग की यात्रा। वहां पहुंचने में हमें 32 किलोमीटर की दूरी तय करने में 45 मिनट लगे।

इतिहास कहता है कि कर्ण (महाभारत के) ने प्रदर्शन किया था। उन्होंने इस स्थान पर अपने पिता भगवान सूर्य (सूर्य देव) के प्रति तपस्या की और आशीर्वाद तथा शक्तिशाली शस्त्र प्राप्त किए। हमने यहाँ कुछ स्थानों का भ्रमण किया और फिर 'धुनागिरी' पर्वत की ओर अपनी यात्रा शुरू की। राष्ट्रीय राजमार्ग पर लगभग डेढ़ घंटे (लगभग 76 किलोमीटर) का समय लगा।

पुराणों में वर्णित संजीवनी पर्वत इनमें से कोई नहीं है। इस पवित्र पर्वत के अलावा और कहीं नहीं! जी हाँ! वातावरण विशेष जड़ी-बूटियों की सुगंध से भरा हुआ था जो हमारी नाक तक पहुँच रही थी। जब भगवान राम के भाई लक्ष्मण राक्षस रावण के साथ युद्ध के दौरान इंद्रजीत के शक्तिशाली शस्त्र से घायल हुए, तो वे बेहोश होकर गिर पड़े। भगवान हनुमान ने उन्हें बचाने के लिए इस पर्वत को लाया था।

मैंने गाइड से नाम के बारे में एक प्रश्न पूछा। इस पर्वत पर। "क्या महर्षि द्रोणाचार्य ने यहाँ तपस्या की थी?" हमारे मार्गदर्शक ने मुस्कुराते हुए उत्तर दिया, "शायद!" फिर उन्होंने बताया कि धुनागिरी पर्वत पर रहने वाले और तपस्या करने वाले लोगों की जीवन प्रत्याशा आमतौर पर अधिक होती है। उन्होंने कहा कि यह जानकारी प्रामाणिक है। उन्होंने इस बारे में कई संन्यासियों से पूछा था।

हमारे एक मित्र श्री राम ने कहा, "तो, अगर ऐसा है, तो कृपया मुझे यहीं छोड़ दो! बार-बार बीमार पड़ने और पत्नी के लगातार ताने मारने से क्या यहीं रहना बेहतर नहीं है?" यह सुनकर सब हंस पड़े, लेकिन हमारे मार्गदर्शक ने इसे गंभीरता से लिया। "अरे नहीं! मैंने बाबा जी के नाम पर खुद से वादा किया है कि मैं आप सबको सुरक्षित घर वापस ले आऊंगा। मैं आपकी नाराज़ पत्नी को क्या बताऊंगा?" तब राम शांत हो गए।

गाइड ने आगे कहा, "यही वह स्थान है जहाँ बाबा जी की गुफा है।"

महावतार बाबा जी दिव्य क्रिया योग साधना के मूल के समान हैं, जो हमारी आयु को बढ़ाता है और हमारी रक्षा करता है। अब से आप सभी को पर्वत पर चढ़ते समय सावधान रहना चाहिए। चढ़ाई करते समय अपने चारों ओर देखते रहें क्योंकि रास्ता खतरनाक है।

हम उनके शब्दों का पालन करने के लिए सहमत हो गए और बाबा जी के मंत्रों का जाप करने लगे। श्रद्धा और भक्ति के साथ नाम पुकारें। रास्ते में हमें एक मंदिर मिला। उसकी दीवारों पर कई चित्र बने हुए थे जिनमें विभिन्न हिंदू साहित्य और महाकाव्यों के दृश्य और कथाएँ चित्रित थीं। हमारे मार्गदर्शक ने हमें चित्रों को दिखाते हुए मंदिर का संक्षिप्त ऐतिहासिक भ्रमण कराया।

“कर्ण टूटे दिल से यहाँ आया होगा। शायद द्रौपदी अपनी चिंताओं को भुलाने के लिए इस मंदिर में आई थीं। अर्जुन अपनी जीत का जश्न मनाने के लिए यहाँ आए होंगे। कई ऋषियों ने हिंदू धर्मग्रंथों में इस मंदिर के बारे में बताया है, जिसमें कई अनसुलझी कहानियाँ छिपी हैं।

एक निश्चित दूरी तय करने के बाद, हममें से कई लोगों को बेचैनी महसूस होने लगी। और हमें सांस लेने में तकलीफ होने लगी। एक बार फिर हमारे गाइड ने हमारी मदद की। उन्होंने अपने स्लिंग बैग में हाथ डाला और कुछ जड़ी-बूटी वाली दवाइयां निकालीं। उन्होंने हममें से प्रत्येक को दवा का एक छोटा हिस्सा दिया और हमें उसे लार के साथ धीरे-धीरे चबाने के लिए कहा। दस मिनट बाद, हम सभी को बेहतर महसूस हुआ। हमारे पैरों का दर्द भी गायब हो गया। हमारे एक साथी यात्री ने मजाक में कहा कि अब से गाइड को 'हर्बल गाइड' कहा जाएगा। हम सब हंस पड़े।

हमारे गाइड को अपनी चतुराई पर हंसी आ गई, लेकिन फिर वह सोचने लगा कि... ड्राइवर गुना सिंह का पता लगाने की कोशिश कर रहे थे, जिसे उन्होंने पहले फोन पर बुक किया था। तभी दूर से एक जीप हमारी नज़र में आई। “अहा! बाबा जी सही समय पर हमारा मार्गदर्शन कर रहे हैं। मेरे दोस्तों! जीप में जा रहे हैं, इसलिए लापरवाह मत बनो। आगे का रास्ता बहुत संकरा है। रास्ता पत्थरों से भरा है। एक छोटी सी गलती भी जानलेवा दुर्घटना का कारण बन सकती है।”

उसकी चेतावनी सुनकर हम कांप गए। फिर हमने मिलकर शुरुआत की। हमने बाबा जी से प्रार्थना की कि वे हमें सुरक्षित पहुँचा दें। आधे घंटे की खस्ताहाल सवारी के बाद जीप रुक गई। ड्राइवर ने घोषणा की कि वह हमें आगे नहीं ले जा सकता और हमें पैदल ही मंज़िल तक पहुँचना होगा। फिर उसने हममें से प्रत्येक को सहारे के लिए एक-एक छड़ी दी और गाइड से पैसे ले लिए।

छड़ी के सहारे हम थोड़ी दूर चलने लगे। दो किलोमीटर की दूरी तक हम बाबा जी का नाम थोड़ा ज़ोर से जपते रहे। रास्ते भर हमें दिशा दिखाने के लिए साइनबोर्ड लगे हुए थे। अचानक ही, दाईं ओर एक सुंदर झरना दिखाई दिया, जिसकी खुशबू हवा में फैली हुई थी। पानी की ठंडी बूँदें हमारे चेहरे और शरीर पर पड़ीं और हमारी इंद्रियों को ताजगी प्रदान की। लंबी यात्रा की थकान मिटाने के लिए हमने स्नान किया। जड़ी-बूटियों की खुशबू हमारे शरीर से निकल रही थी और हमारा मन पूरी तरह से हमारे गुरुजी बाबा जी के चिंतन में डूबा हुआ था।

फिर अचानक, गाइड ने एक ऐसी जगह की ओर इशारा किया जो देखने में पीला पड़ा हुआ चेहरा। उन्होंने बताया कि यह वही स्थान है जहाँ महावतार बाबाजी ने अपने प्रमुख शिष्य श्री लहरी महाशय को दर्शन दिए थे। जी हाँ! यही संकेत था कि हम बाबाजी की गुफा तक पहुँच गए थे। जब हमने ध्यान से देखा, तो हमें दो गुफाएँ दिखाई दीं। एक छोटी थी और दूसरी तुलनात्मक रूप से बड़ी। बाबाजी अपने दो प्रमुख शिष्यों के साथ हमेशा छोटी गुफा में रहना पसंद करते थे। दूसरी गुफा में अन्य शिष्य रहते थे। “चलिए पहले छोटी गुफा देखते हैं। हमें 8 बजे से पहले वापस आना होगा।

शाम के बाद, तेंदुए इस जगह के आसपास घूमने लगते हैं।" गाइड ने हमें बताया। हमारे मन में डर की लहर दौड़ गई!

"महावतार बाबाजी अपने शिष्यों को उपदेश देने के लिए बड़ी गुफा में आते थे।" शिष्य। लेकिन हमें वहाँ पैदल पहुँचने में कम से कम दो घंटे लगेंगे। इसलिए, अभी हम एक-एक करके छोटी गुफा में प्रवेश करते हैं।

सीढ़ियाँ फिसलन भरी थीं, इसलिए हमें चारों ओर ध्यान से देखना पड़ा। नुकीली चट्टानों से बचने के लिए हमने दीवारों को हाथों से छूते हुए धीरे-धीरे रेंगना शुरू किया। हमने गुफा में घुसने की कोशिश की। तभी हमें पीछे से एक आवाज़ सुनाई दी, "धैर्य रखो! धैर्य रखो!"

अंततः हम गुफा के अंदर पहुँच गए। हमारे मन में लगातार विचार उमड़ रहे थे। हम सब पल भर में शांत हो गए। एक अवर्णनीय आनंद ने हमें घेर लिया। हम अपनी रगों में आध्यात्मिक स्पंदन महसूस कर सकते थे। जी हाँ! बाबा जी अभी भी जीवित थे और उनकी तपस्या की शक्ति गुफा में इतनी अधिक मात्रा में फैल गई थी कि हम उसे महसूस कर सकते थे। गुफा का मार्ग उस स्थान की गहराई तक जाता था जहाँ बाबा जी अभी भी अपने आध्यात्मिक शरीर में विद्यमान हैं। हम क्षण भर के लिए स्वयं को भूल गए और उनकी छवि पर ध्यान केंद्रित किया - बाबा जी पद्मासन में, अपनी नाक की नोक पर दृष्टि गड़ाए हुए। ऐसा दृश्य प्रकट हुआ और पल भर में लुप्त हो गया!

जी हाँ! उनकी अनुमति के बिना कोई भी इस स्थान में प्रवेश नहीं कर सकता। सच। सभी प्राणियों के प्रति भक्ति, अटूट आस्था और करुणा, ये सभी गुण इस मानदंड को पूरा करने के लिए आवश्यक हैं। क्रिया योगी के लिए सच्चा समर्पण अत्यंत आवश्यक है।

प्रसिद्ध अभिनेता रजनीकांत ने एक बार कहा था, "जब भी मैं यात्रा करता हूँ..." बाबा जी की गुफा में मुझे ऐसा लगता है मानो मैं अपनी मां के गर्भ में हूं।

मार्गदर्शक ने हमसे अपनी इच्छाओं के लिए गहराई से प्रार्थना करने को कहा। मेरे मित्र राम ने थोड़ी ऊँची आवाज़ में अपने बेटे का किसी प्रतिष्ठित कॉलेज में दाखिला करवाने की गुज़ारिश की। तुरंत ही एक सहयात्री ने जवाब दिया कि वह दाखिला करवा देंगे क्योंकि वह उस कॉलेज की कमेटी के सदस्य हैं। एक अन्य मित्र ने अपनी बेटी के लिए अच्छे रिश्ते की गुज़ारिश की क्योंकि वह पिछले तीन सालों से उसके लिए रिश्ता ढूँढ रहे थे। प्रार्थनाएँ सुनकर मुकुंदन ने बताया कि वह भी अपने 32 वर्षीय बेटे के लिए वर ढूँढ रहे हैं। दोनों ने खुशी-खुशी अपने-अपने घर पहुँचते ही रिश्ता तय करने का वादा किया। बताइए, क्या हमारे बाबा जी के पवित्र स्थान से बेहतर कोई ज्योतिष केंद्र है जहाँ शादी करवाई जा सके?

इस प्रकार दिव्य गुफा की यात्रा सबसे यादगार यात्राओं में से एक बन गई। हम सभी के लिए ये एक आदरणीय यात्रा है। क्रियाबन मणि ने अपने जीवन भर की आध्यात्मिक यात्रा के अनुभवों को अत्यंत उत्साहपूर्ण और कृतज्ञतापूर्ण ढंग से सुनाते हुए अपनी यात्रा का समापन किया।

(श्री महावतार बाबाजी की रहस्यमयी और अद्भुत गुफा)

(बाबू.-लेखक-उर्फ..कवियोगी.वेदम)

(मेरी बहू श्रीमती प्रभा स्वामी अपने बेटे (बच्चे) महर्षय के साथ)

(मेरे दामाद श्री राजन के साथ)

his wife Poet Sudha and sonChi. Sudharsan

और भी

सुधा की चचेरी बहन ईश्वर्या अपने पति के साथ)

(Kaviyogi's second daughter Raji with her husband Bala)

(kaviyogi's.sonSwami,..grandson..Vishy,Raji,and..Rakshi)

(कवियोगी वेधम और उनकी पत्नी कामाक्षी) - बैठे हुए - उनके पुत्र स्वामी, गोद में - महर्षय और प्रथम पुत्र रोहित - सभी तस्वीरें कनाडा में उनके प्रवास के दौरान ली गई थीं। (SUBHAM)

***** समाप्त *****

sjeet